CC0 In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

16.3

३००३

दशभक्त्यादिसंग्रहः

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

॥ श्रीवीतरागाय नमः ॥

3003

ॐ

श्री दशभक्त्यादिसंग्रहः ।

— संशोधक व संपादक —

श्रीमान् पं० फूलचंद्र शास्त्री.

—: प्रकाशक :—

श्री. सेठ प्रेमचंद सखाराम. लेंगरेकर.
निरा-बारामती, (पुणें.)

वैशाख शुद्ध ३
वीर सं. २४६२

मूल्य १ रुपया
सजिल्द १। रुपया

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रकाशकः—
सेठ प्रेमचंद सखाराम लेंगरेकर
निरा—बारामती, [पुणें.]

मुद्रकः—
श्री महावीर प्रिंटिंग प्रेस,
नातेपुतें, [सोलापूर]

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्री. सेठ सखाराम भवानचंद लेंगरेकर.

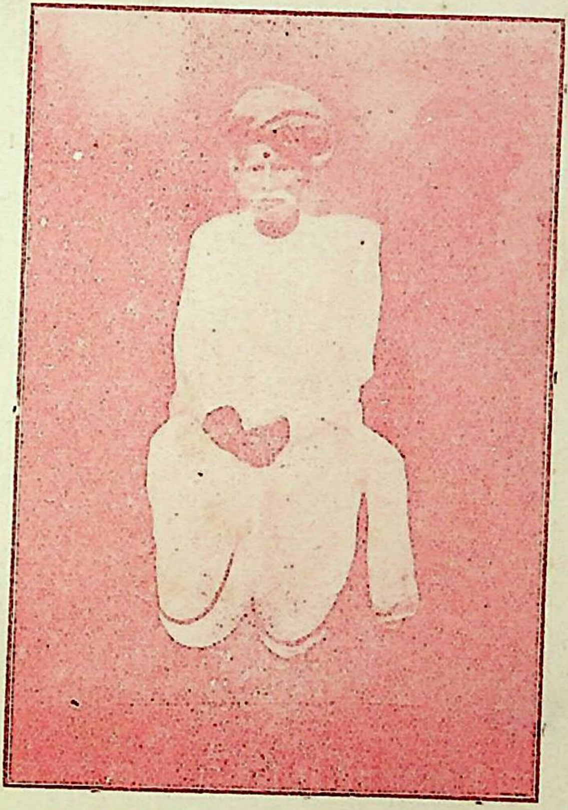

आपकी शुभ स्मृतिके लिये ही यह ग्रंथ प्रकाशित किया है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दो शब्द । पाठशाला

नित्यपाठसंग्रह या जिनवाणीसंग्रह के नामसे वहुतसे ग्रंथ आज जैन समाजमें प्रचलित हैं, उनके रहते हुये इसके प्रकाशन का क्या कारण था ऐसा प्रश्न होना स्वाभाविक है । उत्तरमें इतना ही निवेदन है कि यह नित्यपाठसंग्रह दूसरे ग्रंथोंकी अपेक्षा दूसरे रूपमें ही आज जैन समाजके समक्ष रक्खा जा रहा है । यह ग्रंथ खासकर त्यागीवर्ग व साधुवर्ग को उद्देश्यमें रखकर ही प्रकाशित किया गया है । इसमें ३१ विषयोंका संग्रह है जैसा कि विषयसूचीसे विदित होता है । इन ३१ विषयोंमें से स्तुति स्तोत्र भक्ति मार्गके पोषक हैं और तत्वार्थसूत्र जैसे विषय ज्ञानमार्गकी अभिवृद्धि करने वाले हैं तथा ईर्यापथ आदि भक्ति चारित्रको परमार्जित करते हैं इसके ग्रंथ संग्राहय विषय भक्तिमार्ग,ज्ञानमार्ग और चारित्र मार्गकी पुष्टि करनेवाले होनेसे उनका स्वाध्याय करनेवाला और तदनुसार अपनी वृत्ति रखनेवाला श्रावक अथवा साधु रत्नत्रयकी विशुद्धिको प्राप्त करके मुक्तिलाभ कर सकता है । अतएव इस ग्रंथके पठन करनेसे मोक्षमार्गकी विशुद्धि होकर यह मोक्षके लिये परंपरा कारणरूप है । ऐसा समझकर ही हमने अपने स्वर्गीय पूज्य पिता सखाराम भवानचंद लेंगरेकर इन की स्मृतिके लिये तथा ज्ञानावरणीय कर्मके क्षय के लिये व स्वपर कल्याण के लिये इस ग्रंथको प्रकाशित किया है- अपका नंम्र - प्रेमचंद सखाराम लेंगरेकर

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

विषयानुक्रमणिका ।

क्रम नंबर	विषय	पृष्ठसंख्या
१	श्री सहस्रनामस्तोत्रम्	१....३२
२	भक्तामरस्तोत्रम्	३२....४३
३	कल्याणमंदिरस्तोत्रम्	४४... ५४
४	एकीभावस्तोत्रम्	५५....६२
५	विषापहारस्तोत्रम्	६३... ७१
६	जिनचतुर्विंशतिका	७२....७९
७	तत्त्वार्थसूत्रम्	८०....१०८
८	बृहत्स्वयंभूस्तोत्रम्	१०९....१४०
९	द्वात्रिंशतिका	१४१....१४८
१०	अकलंकस्तोत्रम्	१४८....१५३
११	मंगलाष्टकम्	१५४ ...१५७
१२	महावीराष्टकम्	१५७....१५९
१३	नमस्कारमंत्राः	१५९....१६०

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

क्रम नंबर	विषय	पृष्ठसंख्या
१४	ईर्यापथशुद्धिः	१६१—१७०
१५	सिद्धभक्तिः	१७१--१७५
१६	श्रुतभक्तिः	१७५—१८०
१७	चारित्रभक्तिः	१८० –१८४
१८	योगिभक्तिः	१८४—१८७
१९	आचार्यभक्तिः	१८७—१९०
२०	पंचगुरुभक्तिः	१९०—१९३
२१	तीर्थंकरभक्तिः	१९३—१९५
२२	शांतिभक्तिः	१९६—२०१
२३	समाधिभक्तिः	२०२--२०६
२४	निर्वाणभक्तिः	२०६—२१४
२५	नंदीश्वरभक्तिः	२१५—२२६
२६	चैत्यभक्तिः	२२७—२३६
२७	कल्याणालोचना	२३६--२४५
२८	चतुर्दिशिवंदना	२४५....२४६
२९	सर्वदोषप्रायश्चित्तविधिः	२४६....२५१
३०	सामायिकपाठः	२५१....२५३
३१	आचार्य शांतिसागरस्तुतिः	२५४....२५८

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कौन कौनसी भक्ति कहां कहां करनी चाहिये इसका खुलासा नक्शा

कार्य	भक्ति
जिनप्रतिमावंदन आचार्यवंदना (गवासनसे)	चैत्यभक्ति पंचगुरुभक्ति लघुसि-द्धभक्ति लघुआचार्यभक्ति
सिद्धांतवेत्ता आचारकी वंदना	सिद्धभक्ति, श्रुतभक्ति, आचार्यभ-क्ति
साधारण मुनियोंकी वंदना	सिद्धभक्ति
सिद्धांतवेत्ता मुनियोंकी वंदना	सिद्धभक्ति, श्रुतभक्ति
स्वाध्यायका प्रारम्भ	लघुश्रुतभक्ति आचार्यभक्ति
स्वाध्यायकी समाप्ति	लघुश्रुतभक्ति।
आचार्यकी अनुपस्थितिमें पहले दिन उपवास वा प्रत्या-ख्यान ग्रहण किया हो तो दूसरे दिन आहारके समय	सिद्धभक्ति पढकर उसका त्याग वा आहारके लिय गमन
आहारकी समाप्तिपर अगले दिनके उपवास वा प्रत्याख्यान का ग्रहण करनेमें	सिद्धभक्ति।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आचार्यकी उपस्थितिमें आहारकेलिये जानेके पहले	लघुयोगिभक्ति, लघुसिद्धभक्ति
आहारके अनंतर प्रत्याख्यान वा उपवासकी प्रतिज्ञाकेलिये	लघुयोगिभक्ति लघुसिद्धभक्ति
आचार्य वंदना	लघुआचार्यभक्ति
चतुर्दशीके दिन त्रिकाळ वंदनाके लिये	चैत्यभक्ति, श्रुतभक्ति, पंचगुरुभक्ति। अथवा सिद्धभक्ति, चैत्यभक्ति, श्रुतभक्ति, पंचगुरुभक्ति, शांतिभक्ति।
नंदीश्वर पर्वमें	सिद्धभक्ति, नंदीश्वरभक्ति, पंचगुरुभक्ति, शांतिभक्ति।
सिद्धप्रतिमाके सामने	सिद्धभक्ति
तीर्थंकरके जन्म दिन	चैत्यभक्ति, श्रुतभक्ति पंचगुरुभक्ति अथवा सिद्धभक्ति, चैत्यभक्ति, पंचगुरुभक्ति, श्रुतभक्ति शांतिभक्ति।
अष्टमी चतुर्दशीकी क्रियामें अपूर्व चैत्यवंदना वा त्रिकाळ नित्यवंदनाके समय	चैत्यभक्ति, पंचगुरुभक्ति शांतिभक्ति।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अभिषेक वंदना—	सिद्धभक्ति, चैत्यभक्ति, पंचगुरु भक्ति, शांतिभक्ति ।
स्थिरबिंबप्रतिष्ठा—	सिद्धभक्ति, शांतिभक्ति
जल बिंबप्रतिष्ठाके चतुर्थ अभिषेकमें	सिद्धभक्ति, चैत्यभक्ति, पंचमहागुरुभक्ति, शांतिभक्ति ।
तीर्थंकरोंके गर्भजन्मकल्याणकमें-	सिद्धभक्ति, चारित्रभक्ति, शांतिभक्ति ।
दीक्षकल्याणक	सिद्धभक्ति, चारित्रभक्ति, योगिभक्ति, शांतिभक्ति ।
ज्ञानकल्याणक	सिद्ध, श्रुत, चारित्र, योगि, शांति भक्ति ।
निर्वाणकल्याणक—	सिद्ध, श्रुत, चारित्र, योगि, निर्वाण और शांतिभक्ति ।
वीरनिर्वाण—सूर्योदयके समय—	सिद्धभक्ति, निर्वाण, पंचगुरु, शांतिभक्ति ।
श्रुतपंचमी—	बृहत्सिद्धभक्ति, बृहत्श्रुतभक्ति

यदि चतुर्दशीकी क्रिया चतुर्दशीके दिन न हो सके तो पौर्णिमा वा अमावास्याके दिन अष्टमीकी किया करे अर्थात् सिद्ध, श्रुत, चारित्र और शांतिभक्ति पढे ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

	श्रुतस्कंधकी स्थापना, बृहत्वाचना बृहत्श्रुतभक्ति, आचार्यभक्ति पूर्वक स्वाध्याय, श्रुतभक्ति द्वारा स्वाध्यायकी पूर्णता अंतमें शांतिभक्ति कर क्रियाकी पूर्णता
श्रुतपंचमीके दिन गृहस्थोंको -	सिद्ध, श्रुत, शांतिभक्ति ।
सिद्धांत वाचना —	सिद्ध, श्रुतभक्ति द्वारा प्रारंभ श्रुतभक्ति आचार्यभक्ति कर वाचना अंतमें श्रुत और शांति भक्ति ।
गृहस्थोंको सन्यासके प्रारम्भमें -	सिद्ध, श्रुत, शांतिभक्ति ।
गृहस्थोंको सन्यासके अंतमें -	सिद्ध, श्रुत, शांति ।
वर्षायोगधारण करते समय -	सिद्ध, योगि, चैत्यभक्ति ।
वर्षायोगधारणकी प्रदक्षिणामें -	यावंति जिनचैत्यानि, स्वयंभू-स्तोत्रकी दो स्तुति चैत्यभक्ति ।
वर्षायोग स्वीकार करते समय -	गुरुभक्ति शांतिभक्ति ।
वर्षायोगकी समाप्तिमें —	वर्षायोगधारण करनेकी पूर्ण विधि
आचार्यपद ग्रहण करते समय -	सिद्ध, आचार्य, शांतिभक्ति ।
प्रतिमायोग धारण करनेवाले मुनिकी वंदना करते समय	सिद्ध, योगि, शांतिभक्ति ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दीक्षा ग्रहण करते समय--	बृहत्सिद्धभक्ति, लघुयोगिभक्ति
दीक्षाके अंतमें—	सिद्धभक्ति।
केशलोंच करते समय—	लघुसिद्धभक्ति, लघुयोगिभक्ति
लोचके अंतमें—	सिद्धभक्ति।
प्रतिक्रमणमें—	सिद्ध, प्रतिक्रमण, वीरभक्ति, चतुर्विंशतितीर्थंकरभक्ति।
रात्रियोग धारण	योगिभक्ति।
रात्रियोगका त्याग-	योगिभक्ति।
देववंदनामें दोष लगनेपर-	समाधिभक्ति।
सामान्य ऋषिके स्वर्गवास होनेपर उनके शरीर और निषद्याकी क्रियामें	सिद्ध, योगि, शांतिभक्ति।
सिद्धांतवेत्ता साधुके स्वर्गवास में--	सिद्ध, श्रुत, योगि, शांतिभक्ति।
उत्तर गुणधारी साधुके स्वर्गवास होनेपर	सिद्ध, चारित्र, योगि, शांतिभक्ति
उत्तरगुणधारी सिद्धांतवेत्ता साधुके स्वर्गवासपर	सिद्ध, श्रुत चारित्र योगि शांतिभक्ति

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्री १०८ आचार्यवर्य शांतिसागर महाराज.

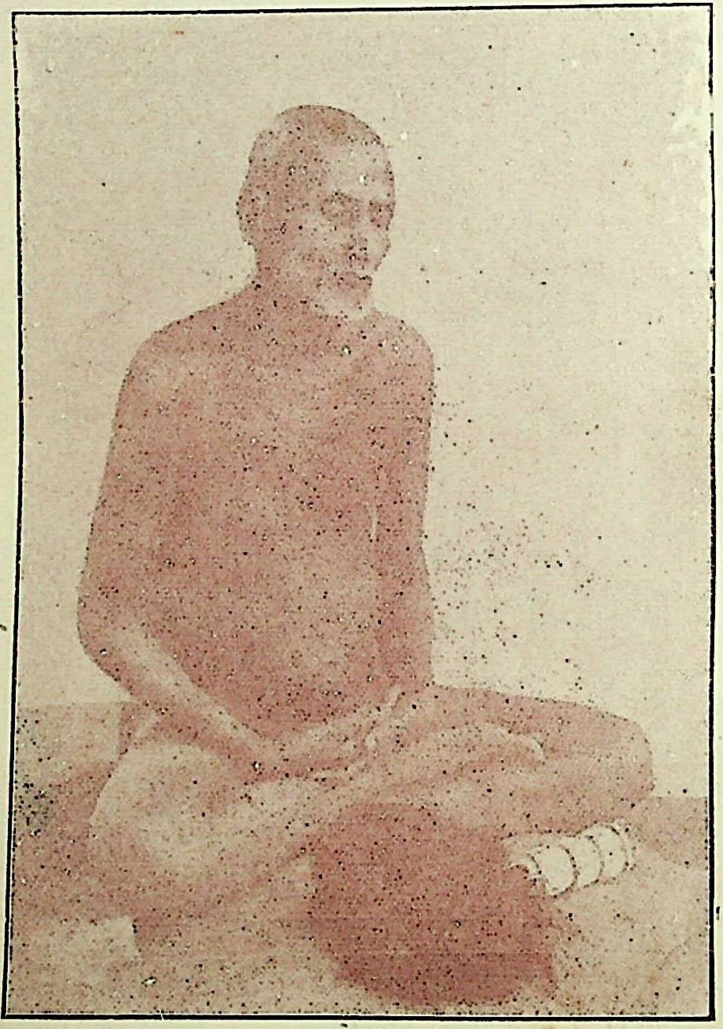

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आचार्यके स्वर्गवास होनेपर	सिद्ध योगि, आचार्य, शांतिभक्ति
सिद्धांतवेत्ता आचार्यके स्वर्गवास पर	सिद्धश्रुतयोगिआचार्यशांतिभक्ति
उत्तमगुणधारी आचार्यके स्वर्गवासपर	सिद्धचारित्रयोगि आचार्यशांति भक्ति।
उत्तरगुणधारी सिद्धांतवेत्ता आचार्यके स्वर्गवास पर	सिद्ध, श्रुत, योगि, आचार्य, शांतिभक्ति।
पाक्षिक प्रतिक्रमणमें —	सिद्ध, चारित्र, प्रतिक्रमण वीर भक्ति चतुर्विंशतिभक्ति, चारित्रालोचना गुरुभक्ति बृहदालोचना गुरुभक्ति, लघुआचार्यभक्ति।
चातुर्मासिक प्रतिक्रमणमें	,,
वार्षिक प्रतिक्रमणमें	,,

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

॥ श्री वीतरागाय नमः ॥

श्री नित्यपाठसंग्रहः

श्रीजिनसेनाचार्यकृतं

॥ श्रीजिनसहस्रनामस्तोत्रम् ॥

स्वयंभुवे नमस्तुभ्यमुत्पाद्यात्मानमात्मनि ।
स्वात्मनैव तथोद्भूतवृत्तयेऽचिंत्यवृत्तये ॥१॥
नमस्ते जगतां पत्ये लक्ष्मीभर्त्रे नमोऽस्तु ते ।
विदांवर नमस्तुभ्यं नमस्ते वदतांवर ॥२॥
कामशत्रुहणं देवमामनन्ति मनीषिणः ।
त्वामानुमः सुरेण्मौलिभालाभ्यर्चितक्रमम्
॥ ३ ॥ ध्यानद्रुघणनिर्भिन्नघनघातिमहा-
तरुः । अनन्तभवसन्तानजयादासीदनन्त-
जित् ॥ ४ ॥ त्रैलोक्यनिर्जयावाप्तदुर्दर्प्य-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मतिदुर्जयम् । मृत्युराजं विजित्यासीज्जिन !
मृत्युंजयो भवान् ॥५॥ विधूताशेषसंसार-
बन्धनो भव्यबांधवः । त्रिपुरारिस्त्वमेवासि
जन्ममृत्युजरान्तकृत् ॥६॥ त्रिकालविषया-
शेषतत्वभेदात्त्रिधोत्थितम् । केवलाख्यं
दधच्चक्षुस्त्रिनेत्रोऽसि त्वमीशितः ॥ ७ ॥
त्वामन्धकान्तकं प्राहुर्मोहान्धासुरमर्द्दनात् ।
अर्द्धं ते नारयो यस्मादर्धनारीश्वरोऽस्यतः।८।
शिवः शिवपदाध्यासाद् दुरितारिहरो हरः ।
शंकरः कृतशं लोके शंभवस्त्वं भवन्सुखे ॥९॥
वृषभोऽसि जगज्ज्येष्ठः पुरुःपुरुगुणोदयैः। नाभे-
यो नाभिसंभूतेरिक्ष्वाकुकुलनंदनः ॥१० ॥
त्वमेकः पुरुषस्कंधस्त्वं द्वे लोकस्य लोचने ।
त्वं त्रिधाबुद्धसन्मार्गस्त्रिज्ञस्त्रिज्ञानधारकः
॥११॥ चतुश्शरणमांगल्यमूर्तिस्त्वं चतुर

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सुधीः । पञ्चब्रह्ममयो देव पावनस्त्वं पुनीहि माम् ॥१२॥ स्वर्गावतरणे तुभ्यं सद्यो जातात्मने नमः। जन्माभिषेकवामाय वामदेव नमोऽस्तु ते ॥१३॥ सुनिःष्क्रान्ताव-घोराय पदं परममीयुषे । केवलज्ञानसंसिद्धा-वीशानाय नमोऽस्तु ते ।१४। पुरस्तत्पुरुषत्वेन विमुक्तिपदभागिने । नमस्तात्पुरुषावस्थां भाविनीं तेऽद्य बिभ्रते १५ ज्ञानावरणनिर्ह्रासा-न्नमस्तेऽनन्तचक्षुषे । दर्शनावरणोच्छेदा-न्नमस्ते विश्वदृश्वने ॥१६॥ नमो दर्शनमोहघ्ने क्षायिकामलदृष्टये । नमश्चारित्रमोहघ्ने विरा-गाय महौजसे ॥१७॥ नमस्तेऽनन्तवीर्याय नमोऽनन्तसुखात्मने । नमस्तेऽनन्तलोकाय लोकालोकावलोकिने ॥१८॥ नमस्तेऽनन्त-दानाय नमस्तेऽनन्तलब्धये । नमस्तेऽनन्त-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भोगाय । नमोऽनन्तोपभोगिने ॥१९॥ नमः परमयोगाय नमस्तुभ्यमयोनये । नमः परमपूताय नमस्ते परमर्षये ॥२०॥ नमः परमविद्याय नमः परमतच्छिदे । नमः परमतत्वाय नमस्ते परमात्मने ॥२१॥ नमः परमरूपाय नमः परमतेजसे । नमः परममार्गाय नमस्तेपरमेष्ठिने ॥ २२ ॥ परमर्द्धिजुषे धाम्ने परमज्योतिषे नमः । नमः पारेतमःप्राप्तधाम्ने परतरात्मने ॥२३॥ नमः क्षीणकलंकाय क्षीणबंध नमोऽस्तु ते । नमस्ते क्षीणमोहाय क्षीणदोषाय ते नमः ॥२४॥ नमः सुगतये तुभ्यं शोभनां गतिमीयुषे । नमस्तेऽतीन्द्रियज्ञानसुखायानिन्द्रियात्मने ॥ २५ ॥ कायबन्धननिर्मोक्षादकायाय नमोऽस्तु ते । नमस्तुभ्यमयोगाय योगिनामधियोगिने ॥ २६ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अवेदाय नमस्तुभ्यमकषायाय ते नमः ।
नमः परमयोगीन्द्रवन्दितांघ्रिद्वयाय ते
॥२७॥ नमः परमविज्ञान नमः परमसंयम ।
नमः परमदृग्दृष्टपरमार्थाय ते नमः ॥२८॥
नमस्तुभ्यमलेश्याय शुक्ललेशांशकस्पृशे ।
नमो भव्येतरावस्थाव्यतीताय विमोक्षिणे
॥२९॥ संज्ञ्यसंज्ञिद्वयावस्थाव्यातिरिक्तामला-
त्मने । नमस्ते वीतसंज्ञाय नमः क्षायिकदृष्टये
॥३०॥ अनाहाराय तृप्ताय नमः परमभाजुषे
व्यतीताशेषदोषाय भवाब्धेः पारमीयुषे ३१॥
अजराय नमस्तुभ्यं नमस्ते स्तादजन्मने ।
अमृत्यवे नमस्तुभ्यमचलायाक्षरात्मने ॥३२॥
अलमास्तांगुणस्तोत्रमनन्तास्तावका गुणाः ॥
त्वां नामस्मृतिमात्रेण पर्युपासिसिषामहे ॥३३॥
एवं स्तुत्वा जिनं देवं भक्त्या परमया सुधीः ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पठेदष्टोत्तरं नाम्नां सहस्रं पापशांतये ॥१॥

इति पीठिका

प्रसिद्धाष्टसहस्रेद्धलक्षणं त्वां गिरां पतिम् ।
नाम्नामष्टसहस्रेण तोष्टुमोऽभीष्टसिद्धये ॥१॥
श्रीमान्स्वयंभूर्वृषभः शंभवः शंभुरात्मभूः ।
स्वयंप्रभः प्रभुर्भोक्ता विश्वभूरपुनर्भवः ॥२॥
विश्वात्मा विश्वलोकेशो विश्वतश्चक्षुरक्षरः ।
विश्वविद्विश्वविद्येशो विश्वयोनिरनश्वरः ॥३॥
विश्वदृश्वा विभुर्धाता विश्वेशो विश्वलोचनः ।
विश्वव्यापी विधिर्वेधाः शाश्वतो विश्वतो-
मुखः ॥ ४ ॥ विश्वकर्मा जगज्ज्येष्ठो विश्व-
मूर्तिर्जिनेश्वरः । विश्वदृग्विश्वभूतेशो विश्व
ज्योतिरनीश्वरः ॥ ५॥ जिनो जिष्णुरमेयात्मा
विश्वरीशो जगत्पतिः । अनन्तचिदचिन्त्यात्मा
भव्यबन्धुरबन्धनः ॥ ६ ॥ युगादिपुरुषो

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ब्रह्मा पञ्चब्रह्ममयः शिवः। परः परतरः सूक्ष्मः
परमेष्ठी सनातनः ॥ ७ ॥ स्वयंज्योतिरजो-
ऽजन्मा ब्रह्मयोनिरयोनिजः । मोहारिविजयी
जेता धर्मचक्री दयाध्वजः ॥ ८ ॥ प्रशान्ता-
रिरनन्तात्मा योगी योगीश्वरार्चितः । ब्रह्मवि-
द्ब्रह्मतत्त्वज्ञो ब्रह्मोद्याविद्यतीश्वरः ॥ ९ ॥
शुद्धो बुद्धः प्रबुद्धात्मा सिद्धार्थः सिद्धशा-
सनः। सिद्धः सिद्धान्तविद्ध्येयः सिद्धसाध्यो
जगद्धितः ॥ १० ॥ सहिष्णुरच्युतोऽनन्तः
प्रभविष्णुर्भवोद्भवः । प्रभूष्णुरजरोऽजर्यो
भ्राजिष्णुर्धीश्वरोऽव्ययः ॥ ११ ॥ विभावसुर-
संभूष्णुः स्वयंभूष्णुः पुरातनः । परमात्मा
परंज्योतिस्त्रिजगत्परमेश्वरः ॥ १२ ॥

॥ इति श्रीमदादिशतम् ॥१॥

दिव्यभाषापतिर्दिव्यः पूतवाक्पूतशासनः

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पूतात्मा परमज्योतिर्धर्माध्यक्षो दमीश्वरः ॥१॥ श्रीपतिर्भगवानर्हन्नरजा विरजाः शुचिः । तीर्थकृत्केवलीशानः पूजार्हःस्नातकोऽमलः ॥ २ ॥ अनन्तदीप्तिर्ज्ञानात्मा स्वयंबुद्धः प्रजापतिः । मुक्तः शक्तो निराबाधो निष्कलो भुवनेश्वरः ॥३॥ निरञ्जनो जगज्ज्योतिर्निरुक्तोक्तिर्निरामयः । अचलस्थितिरक्षोभ्यः कूटस्थः स्थाणुरक्षयः ॥४॥ अग्रणीर्ग्रामणीर्नेता प्रणेता न्यायशास्त्रकृत् शास्ता धर्मपतिर्धर्म्यो धर्मात्मा धर्मतीर्थकृत् ॥५॥ वृषध्वजो वृषधीशो वृषकेतुर्वृषायुधः । वृषो वृषपतिर्भर्ता वृषभाङ्को वृषोद्भवः ॥६॥ हिरण्यनाभिर्भूतात्मा भूतभृद्भूतभावनः । प्रभवो विभवो भास्वान् भवो भावो भवान्तकः ॥७। हिरण्यगर्भः श्रीगर्भः प्रभूतविभवोद्भवः ; स्वयंप्रभुः

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रभूतात्मा भूतनाथो जगत्प्रभुः ॥८॥ सर्वादिः सर्वदृक् सार्वः सर्वज्ञः सर्वदर्शनः ॥ सर्वात्मा सर्वलोकेशः सर्ववित्सर्वलोकजित् ॥९॥ सुगतिः सुश्रुतः सुश्रुक् सुवाक् सूरिर्बहुश्रुतः ॥ विश्रुतो विश्वतःपादो विश्वशीर्षः शुचिश्रवाः । ॥१०॥ सहस्रशीर्षः क्षेत्रज्ञः सहस्राक्षः सहस्रपात् । भूतभव्यभवद्भर्ता विश्वविद्यामहेश्वरः ॥११॥

इति दिव्यादिशतम् ॥२॥

स्थविष्ठः स्थविरो ज्येष्ठः पृष्ठः प्रेष्ठो वरिष्ठधीः । स्थेष्ठो गरिष्ठो बंहिष्ठः श्रेष्ठो निष्ठो गरिष्ठगीः ॥१॥ विश्वमुद् विश्वसृट् विश्वेट् विश्वभुग्विश्वनायकः । विश्वाशीर्विश्वरूपात्मा विश्वजिद्विजितान्तकः ॥२॥ विभवो विभयो वीरो विशोको विजरो जरन् । विरागो विरतोऽसङ्गो

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

विविक्तो वीतमत्सरः ॥३॥ विनेयजनताबन्धु-
र्विलीनाशेषकल्मषः । वियोगो योगविद्विद्वा-
न्विधाता सुविधिः सुधीः ॥४॥ क्षान्तिभा-
क्पृथिवीमूर्तिः शान्तिभाक् सलिलात्मकः ।
वायुमूर्तिरसङ्गात्मा वह्निमूर्तिरधर्मधृक् ॥५॥
सुयज्वा यजमानात्मा सुत्वा सुत्रामपूजितः
ऋत्विग्यज्ञपतिर्यज्ञो यज्ञाङ्गममृतं हविः ॥६॥
व्योममूर्तिरमूर्तात्मा निर्लेपो निर्मलोऽचलः ।
सोममूर्तिः सुसौम्यात्मा सूर्यमूर्तिर्महाप्रभः ७
मन्त्रविन्मन्त्रकृन्मन्त्री मन्त्रमूर्तिरनन्तगः ।
स्वतन्त्रस्तन्त्रकृत्स्वन्तः कृतान्तान्तः कृता-
न्तकृत् ॥८॥ कृती कृतार्थः सत्कृत्यः कृत-
कृत्यः कृतक्रतुः । नित्यो मृत्युंजयोऽमृत्युर-
मृतात्माऽमृतोद्भवः ॥९॥ ब्रह्मनिष्ठः परंब्रह्म
ब्रह्मात्मा ब्रह्मसम्भवः । महाब्रह्मपतिर्ब्रह्मेट्

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

महाब्रह्मपदेश्वरः ॥१०॥ सुप्रसन्नः प्रसन्नात्मा ज्ञानधर्मदमप्रभुः । प्रशमात्मा प्रशान्तात्मा पुराणपुरुषोत्तमः ॥११॥

॥ इति स्थविष्ठादिशतम् ॥३॥

महाशोकध्वजोऽशोकः कः स्रष्टा पद्मविष्टरः । पद्मेशः पद्मसंभूतिः पद्मनाभिरनुत्तरः ॥१॥ पद्मयोनिर्जगद्योनिरित्यः स्तुत्यः स्तुतीश्वरः । स्तवनार्हो हृषीकेशो जितजेयः कृतक्रियः ॥२॥ गणाधिपो गणज्येष्ठो गण्यः पुण्यो गणाग्रणीः । गुणाकरो गुणांभोधिर्गुणज्ञो गुणनायकः ॥३॥ गुणाकरी गुणोच्छेदी निर्गुणः पुण्यगीर्गुणः । शरण्यः पुण्यवाक्पूतो वरेण्यः पुण्यनायकः ॥४॥ अगण्यः पुण्यधीर्गण्यः पुण्यकृत्पुण्यशासनः । धर्मारामो गुणग्रामः पुण्यापुण्यनिरोधकः ॥५॥ पापापेतो विपा-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पात्मा विपाप्मा वीतकल्मषः । निर्द्वंद्वो निर्मदः
शांतो निर्मोहो निरुपद्रवः ॥६॥ निर्निमेषो
निराहारो निष्क्रियो निरुपप्लवः । निष्कलंको
निरस्तैना निर्धूतांगो निराश्रयः ॥७॥ विशालो
विपुलज्योतिरतुलोऽचिंत्यवैभवः। सुसंवृतः सु-
गुप्तात्मा सुभृत्सुनयतत्त्ववित् ॥८॥ एकविद्यो-
महाविद्यो मुनिः परिवृढः पतिः । धीशो
विद्यानिधिः साक्षी विनेता विहतांतकः ॥९॥
पिता पितामहः पाता पवित्रः पावनो गतिः ।
त्राता भिषग्वरो वर्यो वरदः परमः पुमान् १०
कविः पुराणपुरुषो वर्षीयान्वृषभः पुरुः । प्रति-
ष्ठाप्रसवो हेतुर्भुवनैकपितामहः ॥११॥

इति महाशोकध्वजादिशतम् ॥४॥

श्रीवृक्षलक्षणः श्लक्ष्णो लक्षण्यः शुभल-
क्षणः। निरक्षः पुंडरीकाक्षः पुष्कलः पुष्करे-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

क्षणः ॥१॥ सिद्धिदः सिद्धसंकल्पः सिद्धात्मा सिद्धसाधनः । बुद्धबोध्यो महाबोधिर्वर्द्धमानो महर्द्धिकः ॥२॥ वेदांगो वेदविद्वेद्यो जातरूपो विदांवरः । वेदवेद्यः स्वसंवेद्यो विवेदो वदतांवरः ॥३॥ अनादिनिधनो व्यक्तो व्यक्तवाग्व्यक्तशासनः । युगादिकृद्युगाधारो युगादिर्जगदादिजः ॥४॥ अतीन्द्रोऽतींद्रियो धींद्रो महेन्द्रोऽतींद्रियार्थदृक् । अनिंद्रियोऽहमिंद्राच्यों महेन्द्रमाहितो महान् ॥५॥ उद्भवः कारणं कर्ता पारगो भवतारकः । अग्राह्यो गहनं गुह्यं परार्घ्यः परमेश्वरः ॥६॥ अनंतार्द्धिरमेयर्द्धिरचिंत्यर्द्धिः समग्रधीः । प्राग्र्यः प्राग्रहरोऽभ्यग्र्यः प्रत्यग्रोऽग्र्योऽग्रिमोऽग्रजः ॥७॥ महातपा महातेजा महोदर्को महोदयः । महायशा महाधामा महासत्त्वो महा-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

धृतिः ॥८॥ महाधैर्यो महावीर्यो महासंपन्म-हाबलः । महाशक्तिर्महाज्योतिर्महाभूतिर्महा-द्युतिः ॥९॥ महामतिर्महानीतिर्महाक्षांतिर्म-होदयः। महाप्राज्ञो महाभागो महानंदो महा-कविः ।१०। महामहा महाकीर्तिर्महाकांतिर्महा-वपुः । महादानो महाज्ञानो महायोगो महा-गुणः ॥११॥ महामहपतिः प्राप्तमहाकल्याण-पंचकः । महाप्रभुर्महाप्रातिहार्याधीशो महे-श्वरः ॥१३॥

इति श्रीवृक्षादिशतम् ॥५॥

महामुनिर्महामौनी महाध्यानी महादमः । महाक्षमो महाशीलो महायज्ञो महामखः ॥१। महाव्रतपतिर्मह्यो महाकांतिधरोऽधिपः । महा-मैत्रीमयोऽमेयो महोपायो महोमयः ॥२॥ महाकारुणिको मंता महामंत्रो महायतिः ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

महानादो महाघोषो महेज्यो महसां पतिः ॥३॥
महाध्वरधरो धुर्यो महौदार्यो महेष्टवाक् ।
महात्मा महसां धाम महर्षिर्महितोदयः ॥४॥
महाक्लेशांकुशः शूरो महाभूतपतिर्गुरुः । महा-
पराक्रमोऽनंतो महाक्रोधरिपुर्वशी ॥५॥ महा-
भवाब्धिसंतारी महामोहाद्रिसूदनः महागुणा-
करः क्षांतो महायोगीश्वरः शमी ॥६॥ महा-
ध्यानपतिर्ध्याता महाधर्मो महाव्रतः । महा-
कर्मारिहात्मज्ञो महादेवो महेशिता ॥७॥ सर्व-
क्लेशापहः साधुः सर्वदोषहरो हरः । असं-
ख्येयोऽप्रमेयात्मा शमात्मा प्रशमाकरः ॥८॥
सर्वयोगीश्वरोऽचिंत्यः श्रुतात्मा विष्टरश्रवाः ।
दांतात्मा दमतीर्थेशो योगात्मा ज्ञानसर्वगः
॥९॥ प्रधानमात्मा प्रकृतिः परमः परमोदयः ।
प्रक्षीणबंधः कामारिः क्षेमकृत्क्षेमशासनः ॥१०॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रणवः प्रणयः प्राणः प्राणदः प्रणतेश्वरः । प्रमाणं प्रणिधिर्दक्षो दक्षिणोऽध्वर्युरध्वरः ॥११ आनंदो नंदनो नंदो वंद्योऽनिंद्योऽभिनंदनः । कामहा कामदः काम्यः कामधेनुररिंजयः ॥१२॥

इति महामुन्यादिशतम् ॥६॥

असंस्कृतसुसंस्कारः प्राकृतो वैकृतांतकृत् । अंतकृत्कांतिगुः कांतश्चिंतामणिरभीष्टदः ।१। अजितो जितकामारिरमितोऽमितशासनः । जितक्रोधो जितामित्रो जितक्लेशो जितांतकः ॥२॥ जिनेंद्रः परमानंदो मुनींद्रो दुंदुभिस्वनः । महेंद्रवंद्यो योगींद्रो यतींद्रो नाभिनंदनः ॥३॥ नाभेयो नाभिजोऽजातः सुव्रतो मनुरुत्तमः । अभेद्योऽनत्ययोऽनाश्वानधिकोऽधिगुरुः सुगीः ॥ ४ ॥ सुमेधा

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

त्रिक्रमी स्वामी दुराधर्षो निरुत्सुकः । विशिष्टः शिष्टभुक् शिष्टः प्रत्ययः कामनोऽनघः ॥५॥ क्षेमी क्षेमंकरोऽक्षय्यः क्षेत्रधर्मपतिः क्षमी । अग्राह्यो ज्ञानानिग्राह्यो ध्यानगम्यो निरुत्तरः ॥६॥ सुकृती धातुरिज्यार्हः सुनयश्चतुराननः । श्रीनिवासश्चतुर्वक्त्रश्चतुरास्यश्चतुर्मुखः ॥७॥ सत्यात्मा सत्यविज्ञानः सत्यवाक्सत्यशासनः । सत्याशीः सत्यसंधानः सत्यः सत्यपरायणः ॥८॥ स्थेयान्स्थवीयान्नेदीयान्दवीयान्दूरदर्शनः । अणोरणीयाननणुर्गुरुराद्यो गरीयसाम् ॥९॥ सदायोगः सदाभोगः सदातृप्तः सदाशिवः । सदागतिः सदासौख्यः सदाविद्यः सदोदयः ॥१०॥ सुघोषः सुमुखः सौम्यः सुखदः सुहितः सुहृत् । सुगुप्तो गुप्तिभृद्गोप्ता लोकाध्यक्षो दमीश्वरः ॥ ११ ॥

इति असंस्कृतादिशतम् ॥ ७ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

बृहन्बृहस्पतिर्वाग्मी वाचस्पतिरुदारधीः।
मनीषी धिषणो धीमाञ्छेमुशीषो गिरांपतिः
॥१॥ नैकरूपो नयस्तुंगो नैकात्मा नैकधर्म-
कृत्। अविज्ञेयोऽप्रतर्क्यात्मा कृतज्ञः कृतलक्ष-
णः॥ ज्ञानगर्भो दयागर्भो रत्नगर्भः प्रभास्वरः।
पद्मगर्भो जगद्गर्भो हेमगर्भः सुदर्शनः ॥३॥
लक्ष्मीवांस्त्रिदशाऽध्यक्षो दृढीयानिन ईशिता -
मनोहरो मनोज्ञांगो धीरो गंभीरशासनः ॥४॥
धर्मयूपो दयायागो धर्मनेमिर्मुनीश्वरः। धर्म-
चक्रायुधो देवः कर्महा धर्मघोषणः ॥५॥ अ-
मोघवागमोघाज्ञो निर्मलोऽमोघशासनः। सु-
रूपः सुभगस्त्यागी समयज्ञः समाहितः ॥६॥
सुस्थितः स्वास्थ्यभाक्स्वस्थो नीरजस्को निरु-
द्धवः। अलेपो निष्कलंकात्मा वीतरागो गत-
स्पृहः ॥७॥ वश्येन्द्रियो वियुक्तात्मा निःस-
पत्नो जितेन्द्रियः। प्रशान्तोऽनन्तधामर्षिर्म-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

गलं मलहाऽनघः ॥८॥ अनीदृगुपमाभूतो दिष्टि-
र्दैवमगोचरः । अमूर्तो मूर्तिमानेको नैको ना-
नैकतत्त्वदृक् ॥९॥ अध्यात्मगम्योऽगम्यात्मा
योगाविद्योगिवन्दितः । सर्वत्रगः सदाभावी
त्रिकालविषयार्थदृक् ॥१०॥ शंकरः शंवदो
दान्तो दमी क्षांतिपरायणः । अधिपः परमा-
नन्दः परात्मज्ञः परात्परः ॥११॥ त्रिजगद्व-
ल्लभोऽभ्यर्च्यस्त्रिजगमंगलोदयः । त्रिजगत्प-
तिपूज्यांघ्रिस्त्रिलोकाग्राशिखामणिः ॥१२॥

इति बृहदादिशतम् ॥८॥

त्रिकालदर्शी लोकेशो लोकधाता दृढव्रतः।
सर्वलोकातिगः पूज्यः सर्वलोकैकसारथिः
॥१॥ पुराणपुरुषः पूर्वः कृतपूर्वांगविस्तरः ।
आदिदेवः पुराणाद्यः पुरुदेवोऽधिदेवता ॥२॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

युगमुख्यो युगज्येष्ठो युगादिस्थितिदेशकः।
कल्याणवर्णः कल्याणः कल्यः कल्याणल-
क्षणः ॥ ३ ॥ कल्याणप्रकृतिर्दीप्तकल्याणा-
त्मा विकल्मषः। विकलंकः कलातीतः कलि-
लघ्नः कलाधरः ॥४॥ देवदेवो जगन्नाथो
जगद्बन्धुर्जगद्विभुः। जगद्धितैषी लोकज्ञः
सर्वगो जगदग्रजः ॥५॥ चराचरगुरुर्गोप्यो-
गूढात्मा गूढगोचरः। सद्योजातः प्रकाशा-
त्मा ज्वलज्ज्वलनसप्रभः ॥६॥ आदित्यवर्णो
भर्माभः सुप्रभः कनकप्रभः। सुवर्णवर्णो
रुक्माभः सूर्यकोटिसमप्रभः ७॥ तपनीय-
निभस्तुंगो बालार्काभोऽनलप्रभः। संध्याभ्रब-
भ्रुर्हेमाभस्तप्तचामीकरप्रभः ॥ ८ ॥ निष्टप्त-
कनकच्छायः कनत्काञ्चनसन्निभः। हिरण्य-
वर्णः स्वर्णाभः शातकुम्भनिभप्रभः ॥ ९ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

द्युम्नाभो जातरूपाभो तप्तजाम्बूनदद्युतिः।
सुधौतकलधौतश्रीः प्रदीप्तो हाटकद्युतिः
॥१०॥ शिष्टेष्टः पुष्टिदः पुष्टः स्पष्टः स्पष्टा-
क्षरक्षमः शत्रुघ्नोऽप्रतिघोऽमोघः प्रशास्ता
शासिता स्वभूः ॥११॥ शान्तिनिष्ठो मुनि-
ज्येष्ठः शिवतातिः शिवप्रदः शान्तिदः शान्ति-
कृच्छान्तिः कांतिमान्कामितप्रदः ॥ १२ ॥
श्रेयोनिधिरधिष्ठानमप्रतिष्ठः प्रतिष्ठितः ।
सुस्थितः स्थावरः स्थाणुः प्रथीयान्प्रथितः
पृथुः ॥१३॥

इति त्रिकालदर्श्यादिशतम् ॥९॥

दिग्वासा वातरशनो निर्ग्रन्थेशो निरम्बरः ।
निष्किञ्चनो निराशंसो ज्ञानचक्षुरमोमुहः
॥१॥ तेजोराशिरनन्तौजा ज्ञानाब्धिः शील-
सागरः । तेजोमयोऽमितज्योतिर्ज्योतिमूर्ति-
स्तमोऽपहः ॥२॥ जगच्चूडामणिर्दीप्तः सर्व-
विघ्नविनायकः । कलिघ्नः कर्मशत्रुघ्नो

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

लोकालोकप्रकाशकः ॥३॥ अनिद्रालुरतंद्रालु-
र्जागरूकः प्रमामयः । लक्ष्मीपतिर्जगज्ज्यो-
तिर्धर्मराजः प्रजाहितः ॥४॥ मुमुक्षुर्बंधमो-
क्षज्ञो जिताक्षो जितमन्मथः । प्रशांतरसशै-
लूषो भव्यपेटकनायकः ॥५॥ मूलकर्ताखिल-
ज्योतिर्मलघ्नो मूलकारणः । आप्तो वागी-
श्वरः श्रेयाञ्छ्रायसोक्तिर्निरुक्तवाक् ॥६॥ प्र-
वक्ता वचसामीशो मारजिद्विश्वभाववित् ।
सुतनुस्तनुनिर्मुक्तः सुगतो हतदुर्नयः ॥७॥
श्रीशः श्रीश्रितपादाब्जो वीतभीरभयंकरः ।
उत्सन्नदोषो निर्विघ्नो निश्चलो लोकवत्सलः
॥८॥ लोकोत्तरो लोकपतिर्लोकचक्षुरपारधीः ।
धीरधीर्बुद्धसन्मार्गः शुद्धः सूनृतपूतवाक्
॥९॥ प्रज्ञापारमितः प्राज्ञो यतिर्नियमितें-
द्रियः । भन्दतो भद्रकृद्भद्रः कल्पवृक्षो वरप्रदः

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

॥१०॥ समुन्मूलितकर्मारिः कर्मकाष्ठशुशुक्षणिः। कर्मण्यः कर्मठः प्रांशुर्हेयादेयविचक्षणः ॥११॥ अनंतशक्तिरच्छेद्यस्त्रिपुरारिस्त्रिलोचनः। त्रिनेत्रस्त्र्यंबकस्त्र्यक्षः केवलज्ञानवीक्षणः ॥१२॥ समंतभद्रः शांतारिर्धर्माचार्यो दयानिधिः। सूक्ष्मदर्शी जितानंगः कृपालुर्धर्मदेशकः ॥१३॥ शुभंयुः सुखसाद्भूतः पुण्यराशिरनामयः। धर्मपालो जगत्पालो धर्मसाम्राज्यनायकः ॥१४॥

इति दिग्वासादिशतं ॥ १० ॥

इत्यष्टाधिकसहस्रनामावली समाप्ता।

धाम्नां पते तवामूनि नामान्यागमकोविदैः। समुच्चितान्यनुध्यायन्पुमान्पूतस्मृतिर्भवेत् ॥१॥ गोचरोऽपि गिरामासां त्वमवाग्गो-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

चरो मतः । स्तोता तथाप्यसंदिग्धं त्वत्तोऽ
भीष्टफलं लभेत् ॥२॥ त्वमतोऽसि जगद्बन्धु-
स्त्वमऽतोसि जगद्भिषक् । त्वमतोसि जग-
द्धाता त्वमतोऽसि जगद्धितः ॥३॥ त्वमेकं
जगतां ज्योतिस्त्वं द्विरूपोपयोगभाक् । त्वं
त्रिरूपैकमुक्त्यंगं स्वोत्थानंतचतुष्टयः ॥४॥
त्वं पंचब्रह्मतत्त्वात्मा पंचकल्याणनायकः ।
षड्भेदभावतत्त्वज्ञस्त्वं सप्तनयसंग्रहः ॥५॥
दिव्याष्टगुणमूर्तिस्त्वं नवकेवललब्धिकः ।
दशावतारनिर्धार्यो मां पाहि परमेश्वर ॥६॥
युष्मन्नामावलीदृब्धविलसत्स्तोत्रमालया ।
भवंतं वरिवस्यामः प्रसीदानुग्रहाण नः ॥७॥
इदं स्तोत्रमनुस्मृत्य पूतो भवति भाक्तिकः ।
यः स पाठं पठत्येनं स स्यात्कल्याणभाजनम्
॥८॥ ततः सदेदं पुण्यार्थी पुमान्पठति

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पुण्यधीः । पौरुहूतीं श्रियं प्राप्तुं परमामभिलाषुकः ॥९॥ स्तुत्वेति मघवा देवं चराचरजगद्गुरुं । ततस्तीर्थविहारस्य व्यधात्प्रस्तावनामिमाम् ॥१०॥ स्तुतिः पुण्यगुणोत्कीर्तिः स्तोता भव्यः प्रसन्नधीः । निष्ठितार्थो भवांस्तुत्यः फलं नैश्रेयसं सुखं ॥११॥ यः स्तुत्यो जगतां त्रयस्य न पुनः स्तोता स्वयं कस्यचित् । ध्येयो योगिजनस्य यश्च नितरां ध्याता स्वयं कस्यचित् ॥ यो नेतॄन् नयते नमस्कृतिमलं नंतव्यपक्षेक्षणः । स श्रीमान् जगतां त्रयस्य च गुरुर्देवः पुरुः पावनः ॥१२॥ तं देवं त्रिदशाधिपार्चितपदं घातिक्षयानंतरं । प्रोत्थानंतचतुष्टयं जिनमिमं भव्याब्जनीनामिनम् । मानस्तंभविलोकनानतजगन्मान्यं त्रिलोकीपतिं । प्राप्ताचिं-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

त्वबाहिर्विभूतिमनघं भक्त्या प्रवंदामहे ॥१३॥

। इति श्रीजिनसहस्रनामस्तवनं समाप्तम् ।

—:०:—

सुप्रभातस्तोत्रम् ।

यत्स्वर्गावतरोत्सवे यदभवज्जन्माभिषेकोत्सवे यद्दीक्षाग्रहणोत्सवे यदखिलज्ञानप्रकाशोत्सवे । यन्निर्वाणगमोत्सवे जिनपतेः पूजाद्भुतं तद्भवैः संगीतस्तुतिमंगलैः प्रसरतां मे सुप्रभातोत्सवः ॥१॥ श्रीमन्नतामरकिरीटमणिप्रभाभिरालीढपादयुग ! दुर्द्धरकर्मदूर । श्रीनाभिनंदन ! जिनाजित ! शंभवाख्य ! त्वद्ध्यानतोऽस्तु सततं मम सुप्रभातम् ॥ २ ॥ छत्रत्रयप्रचलचामरवीज्यमान-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

देवाभिनंदनमुने सुमते जिनेंद्र। पद्मप्रभारुण-मणिद्युतिभासुरांग त्व० ॥३॥ अर्हन् सुपार्श्व कदलीदलवर्णगात्र प्रालेयतारगिरिमौक्तिकवर्णगौर। चंद्रप्रभस्फटिकपाण्डुरपुष्पदंत ! त्व० ॥४॥ संतप्तकांचनरुचे जिनशीतलाख्य श्रेयान्विनष्टदुरिताष्टकलंकपंक। बंधूकबंधुररुचे जिनवासुपूज्य त्व० ॥५॥ उद्दंडदर्पकरिपो विमलामलांग स्थेमन्ननंतजिदनंतसुखांबुराशे। दुष्कर्मकल्मषविवर्जित धर्मनाथ त्व० ॥६॥ देवामरीकुसुमसन्निभ शांतिनाथ कुंथो दयागुणविभूषणभूषितांग। देवाधिदेव भगवन्नरतीर्थनाथ त्व० ॥७॥ यन्मोहमल्लमदभंजनमल्लिनाथ क्षेमंकरावितथशासनसुव्रताख्य। यत्संपदा प्रशमितो नमिनामधेय त्व० ॥८॥ तापिच्छगुच्छरुचिरो-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ज्ज्वल नेमिनाथं घोरोपसर्गविजयिन् जिन-
पार्श्वनाथ । स्याद्वादसूक्तिमणिदर्पणवर्द्ध-
मान त्व० ॥९॥ प्रालेयनीलहरितारुणपीत-
भासं यन्मूर्तिमव्ययसुखावसथं मुनींद्राः ।
ध्यायंति सप्ततिशतं जिनवल्लभानां त्व० ॥१०॥
सुप्रभातं सुनक्षत्रं मांगल्यं परिकीर्तितम् । चतु-
र्विंशतितीर्थानां सुप्रभातं दिने दिने ॥११॥सुप्र-
भातं सुनक्षत्रं श्रेयः प्रत्यभिनंदितम् । देवता
ऋषयः सिद्धाः सुप्रभातं दिने दिने ॥१२॥
सुप्रभातं तवैकस्य वृषभस्य महात्मनः ।
येन प्रवर्तितं तीर्थं भव्यसत्त्वसुखावहम् ॥१३॥
सुप्रभातं जिनेंद्राणां ज्ञानोन्मीलितचक्षुषाम् ।
अज्ञानातिमिरांधानां नित्यमस्तामितो रविः १४
सुप्रभातं जिनेंद्रस्य वीरः कमललोचनः ॥
येन कर्माटवी दग्धा शुक्लध्यानोग्रवह्निना

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

॥१५॥ सुप्रभातं सुनक्षत्रं सुकल्याणं सुमंगलम् । त्रैलोक्यहितकर्तॄणां जिनानामेव शासनम् ॥इति सुप्रभातस्तोत्रम्

भूतकालतीर्थंकराः ।

१ श्रीनिर्वाण २ सागर ३ महासाधु ४ विमलप्रभ ५ श्रीधर ६ सुदत्त ७ अमलप्रभ ८ उद्धर ९ अंगिर १० सन्मति ११ सिंधु १२ कुसुमांजलि १३ शिवगण १४ उत्साह १५ ज्ञानेश्वर १६ परमेश्वर १७ विमलेश्वर १८ यशोधर १९ कृष्णमति २० ज्ञानमति २१ शुद्धमति २२ श्रीभद्र २३ अतिक्रांत २४ शांताश्चेति भूतकाल-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

संबन्धिचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो नमो नमः ॥

वर्तमानकालतीर्थंकराः ।

१ ऋषभ २ आजित ३ शंभव ४ अभिनंदन ५ सुमति ६ पद्मप्रभ ७ सुपार्श्व ८ चंद्रप्रभ ९ पुष्पदंत १० शीतल ११ श्रेयान् १२ वासुपूज्य १३ विमल १४ अनंत १५ धर्म १६ शांति १७ कुंथु १८ अर १९ माल्लि २० मुनिसुव्रत २१ नामि २२ नेमि २३ पार्श्व २४ वर्द्धमानाश्चेति वर्तमानकालसंबन्धिचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो नमो नमः ॥

भविष्यत्कालतीर्थंकराः ।

१ श्रीमहापद्म २ सुरदेव ३ सुपार्श्व ४ स्वयंप्रभ ५ सर्वात्मभूत ६ देवपुत्र ७ कुलपुत्र-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

८ उदंक ९ प्रौष्ठिल १० जयकीर्ति ११ मुनिसुव्रत १२ अर (अमम) १३ निष्पाप १४ निष्कषाय १५ विमल १६ निर्मल १७ चित्रगुप्त १८ समाधिगुप्त १९ स्वयंभू २० अनिवृत्तिक २१ जय २२ विमल २३ देवपाल २४ अनन्तवीर्याश्चेति भविष्यत्कालसंबन्धिचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो नमो नमः ॥११॥

विदेहक्षेत्रस्थविंशतितीर्थंकराः ।

१ सीमंधर २ युगमंधर ३ बाहु ४ सुबाहु ५ सुजात ६ स्वयंप्रभु ७ वृषभानन ८ अनंतवीर्य ९ सूरप्रभ १० विशालकीर्ति ११ वज्रधर १२ चंद्रानन १३ भद्रबाहु १४

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भुजंगम १५ ईश्वर १६ नेमप्रभ (नामि) १७ वीरसेण १८ महाभद्र १९ देवयश २० अजितवीर्याश्चेति विदेहक्षेत्रस्थविंशति-तीर्थंकरेभ्यो नमो नमः ॥

भक्तामरस्तोत्रम् ।

भक्तामरप्रणतमौलिमणिप्रभाणामुद्योतकं दलितपापतमोवितानम् । सम्यक्प्रणम्य-जिनपादयुगं युगादावालंबनं भवजले पत-तां जनानां ॥ १ ॥ यः संस्तुतः सकलवा-ङ्मयतत्त्वबोधादुद्भूतबुद्धिपटुभिः सुरलोक-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नाथैः । स्तोत्रैर्जगत्त्रितयचित्तहरैरुदारैः स्तो-
ष्ये किलाहमपि तं प्रथमं जिनेंद्रम् ॥२॥
बुद्ध्या विनापि विबुधार्चितपादपीठ स्तोतुं
समुद्यतमतिर्विगतत्रपोऽहं । बालं विहाय
जलसंस्थितमिंदुबिंबमन्यः क इच्छति जनः
सहसा गृहीतुं ॥३॥ वक्तुं गुणान्गुणसमुद्र
सशांककांतान् कस्ते क्षमः सुरगुरुप्रतिमोऽ-
पि बुद्ध्या । कल्पांतकालपवनोद्धतनक्रचक्रं,
को वा तरीतुमलमंबुनिधिं भुज्याभ्यां ॥४॥
सोऽहं तथापि तव भक्तिवशान्मुनीश कर्तुं
स्तवं विगतशक्तिरपि प्रवृत्तः । प्रीत्यात्मवीर्य-
मविचार्य मृगो मृगेंद्रं नाभ्येति किं निजशिशोः
परिपालनार्थम् ॥५॥ अल्पश्रुतं श्रुतवतां परि-
हासधाम त्वद्भक्तिरेव मुखरीकुरुते बला-
न्माम् । यत्कोकिलः किल मधौ मधुरं विरौति

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तच्चाम्रचारुकलिकानिकरैकहेतु ॥६॥ त्वत्सं-
स्तवेन भवसंततिसन्निबद्धं पापं क्षणात्क्षय-
मुपैति शरीरभाजाम् । आक्रांतलोकमलि-
नीलमशेषमाशु सूर्यांशुभिन्नमिव शार्वरमंध-
कारम् ॥७॥ मत्वेति नाथ तव संस्तवनं
मयेदमारभ्यते तनुधियापि तव प्रभावात् ।
चेतो हरिष्यति सतां नलिनीदलेषु मुक्ता-
फलद्युतिमुपैति ननूदबिंदुः ॥ ८ ॥ आस्तां
तव स्तवनमस्तसमस्तदोषं त्वत्संकथापि
जगतां दुरितानि हन्ति । दूरे सहस्रकिरणः
कुरुते प्रभैव पद्माकरेषु जलजानि विकास-
भांजि ॥ ९ ॥ नात्यद्भुतं भुवनभूषणभूत
नाथ भूतैर्गुणैर्भुवि भवंतमभिष्टुवन्तः तुल्या
भवंति भवतो ननु तेन किं वा, भूत्याश्रितं
य इह नात्मसमं करोति ॥१०॥ दृष्ट्वा

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भवंतमनिमेषविलोकनीयं नान्यत्र तोषमुप-
याति जनस्य चक्षुः। पीत्वा पयः शशि-
करद्युतिदुग्धसिन्धोः क्षारं जलं जलनिधे-
रसितुं क इच्छेत् ॥ ११ ॥ यैः शांतरागरु-
चिभिः परमाणुभिस्त्वं निर्मापितस्त्रिभुवनैक-
ललामभूत। तावंत एव खलु तेऽप्यणवः
पृथिव्यां यत्ते समानमपरं न हि रूपमस्ति
॥ १२ ॥ वक्त्रं क्व ते सुरनरोरगनेत्रहारि,
निश्शेषनिर्जितजगत्त्रितयोपमानम्। बिम्बं
कलङ्कमलिनं क्व निशाकरस्य यद्वासरे भव-
ति पाण्डुपलाशकल्पम् ॥१३॥ सम्पूर्णम-
ण्डलशशाङ्ककलाकलापशुभ्रा गुणास्त्रिभुवनं
तव लङ्घयन्ति। ये संश्रितास्त्रिजगदीश्वर-
नाथमेकं कस्तान्निवारयति संचरतो यथेष्टम्
॥१४॥ चित्रं किमत्र यदि ते त्रिदशाङ्गना-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भिर्नीतं मनागपि मनो न विकारमार्गम्।
कल्पान्तकालमरुता चलिताचलेन किं मन्द-
राद्रिशिखरं चलितं कदाचित् ॥१५॥ निर्धू-
मवर्तिरपवर्जिततैलपूरः कृत्स्नं जगत्त्रयमिदं
प्रकटीकरोषि। गम्यो न जातु मरुतां चलि-
ताचलानां दीपोऽपरस्त्वमसि नाथ जगत्प्र-
काशः ॥ १६ ॥ नास्तं कदाचिदुपयासि न
राहुगम्यः स्पष्टीकरोषि सहसा युगपज्जग-
न्ति। नाम्भोधरोदरनिरुद्धमहाप्रभावः सू-
र्यातिशायिमहिमासि मुनीन्द्र लोके ॥१७॥
नित्योदयं दलितमोहमहान्धकारं गम्यं न
राहुवदनस्य न वारिदानाम्। विभ्राजते
तव मुखाब्जमनल्पकान्ति विद्योतयज्जगद-
पूर्वशशाङ्कबिम्बम् ॥ १८ ॥ किं शर्वरीषु
शशिनाह्नि विवस्वता वा युष्मन्मुखेन्दुदलि-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तेषु तमःसु नाथ । निष्पन्नशालिवनशालि-
नि जीवलोके कार्यं कियज्जलधरैर्जलभार-
नम्रैः ॥ १९ ॥ ज्ञानं यथा त्वयि विभाति
कृतावकाशं नैवं तथा हरिहरादिषु नायकेषु ।
तेजो महामणिषु याति यथा महत्त्वं नैवं तु
काचशकले किरणाकुलेऽपि ॥ २० ॥ मन्ये
वरं हरिहरादय एव दृष्टा दृष्टेषु येषु हृदयं
त्वयि तोषमेति । किं वीक्षितेन भवता
भुवि येन नान्यः कश्चिन्मनो हरति नाथ
भवान्तरेऽपि ॥ २१ ॥ स्त्रीणां शतानि शत-
शो जनयन्ति पुत्रान्नान्या सुतं त्वदुपमं ज-
ननी प्रसूता । सर्वा दिशो दधति भानि
सहस्ररश्मिं प्राच्येव दिग्जनयति स्फुरदंशु-
जालम् ॥ २२ ॥ त्वामामनन्ति मुनयः प-
रमं पुमांसमादित्यवर्णममलं तमसः परस्तात् ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

त्वामेव सम्यगुपलभ्य जयन्ति मृत्युं नान्यः शिवः शिवपदस्य मुनींद्र पंथाः ॥२३॥ त्वामव्ययं विभुमचिन्त्यमसङ्ख्यमाद्यं ब्रह्माणमीश्वरमनन्तमनङ्गकेतुम् । योगीश्वरं विदितयोगमनेकमेकं ज्ञानस्वरूपममलं प्रवदन्ति सन्तः ॥ २४ ॥ बुद्धस्त्वमेव विबुधार्चितबुद्धिबोधात्त्वं शङ्करोऽसि भुवनत्रयशङ्करत्वात् । धातासि धीर शिवमार्गविधेर्विधानाद्व्यक्तं त्वमेव भगवन्पुरुषोत्तमोऽसि ॥ २५ ॥ तुभ्यं नमस्त्रिभुवनार्तिहराय नाथ तुभ्यं नमः क्षितितलामलभूषणाय । तुभ्यं नमस्त्रिजगतः परमेश्वराय तुभ्यं नमो जिन भवोदधिशोषणाय ॥२६॥ को विस्मयोऽत्र यदि नाम गुणैरशेषैस्त्वं संश्रितो निरवकाशतया मुनीश । दोषैरुपात्तविबुधाश्रयजातगर्वैः स्वप्नान्तरेऽपि

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

न कदाचिदपीक्षितोऽसि ॥ २७ ॥ उच्चैर-
शोकतरुसंश्रितमुन्मयूखमाभाति रूपममलं
भवतो नितान्तम् । स्पष्टोल्लसत्किरणमस्ततमो-
वितानं बिम्बं रवेरिव पयोधरपार्श्ववर्ति ॥२८॥
सिंहासने मणिमयूखशिखाविचित्रे विभ्रा-
जते तव वपुः कनकावदातम् । बिम्बं विय-
द्विलसदंशुलतावितानं तुङ्गोदयाद्रिशिरसीव
सहस्ररश्मेः ॥ २९ ॥ कुन्दावदातचलचामर-
चारुशोभं विभ्राजते तव वपुः कलधौतका-
न्तम् । उद्यच्छशाङ्कशुचिनिर्झरवारिधारमु-
च्चैस्तटं सुरगिरेरिव शातकौम्भम् ॥ ३० ॥
छत्रत्रयं तव विभाति शशाङ्ककान्तमुच्चैः
स्थितं स्थगितभानुकरप्रतापम् । मुक्ताफल-
प्रकरजालविवृद्धशोभं प्रख्यापयत्त्रिजगतः
परमेश्वरत्वम् ॥३१॥ गम्भीरताररवपूरितदि-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ग्विभागस्त्रैलोक्यलोकशुभसङ्गमभूतिदक्षः ।
सद्धर्मराजजयघोषणघोषकः सन्खे दुन्दुभि-
र्ध्वनति ते यशसः प्रवादी ॥ ३२ ॥ मन्दार-
सुन्दरनमेरुसुपारिजातसन्तानकादिकुसुमो-
त्करवृष्टिरुद्धा । गन्धोदबिन्दुशुभमन्दमरुत्प्र-
पाता दिव्या दिवः पतति ते वयसां ततिर्वा
॥ ३३ ॥ शुम्भत्प्रभावलयभूरिविभा विभोस्ते
लोकत्रये द्युतिमतां द्युतिमाक्षिपन्ती । प्रोद्य-
द्दिवाकरनिरन्तरभूरिसंख्या दीप्त्या जयत्य-
पि निशामपि सोमसौम्याम् ॥३४॥ स्वर्गा-
पवर्गगममार्गविमार्गणेष्टः सद्धर्मतत्त्वकथनै-
कपटुस्त्रिलोक्याः । दिव्यध्वनिर्भवति ते वि-
शदार्थसर्वभाषास्वभावपरिणामगुणप्रयोज्यः
॥३५॥ उन्निद्रहेमनवपङ्कजपुञ्जकान्ती पर्यु-
ल्लसन्नखमयूखशिखाभिरामौ । पादौ पदानि

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तव यत्र जिनेंद्र धत्तः पद्मानि तत्र विबुधाः परिकल्पयन्ति ॥३६॥ इत्थं यथा तव विभूतिरभूज्जिनेन्द्र ! धर्मोपदेशनविधौ न तथापरस्य । यादृक्प्रभा दिनकृतः प्रहतान्धकारा तादृक्कुतो ग्रहगणस्य विकासिनोऽपि ३७॥ श्च्योतन्मदाविलविलोलकपोलमूलमत्तभ्रमद्भ्रमरनादविवृद्धकोपम् । ऐरावताभमिभमुद्धतमापतन्तं दृष्ट्वा भयं भवति नो भवदाश्रितानाम् ॥३८॥ भिन्नेभकुम्भगलदुज्ज्वलशोणिताक्तमुक्ताफलप्रकरभूषितभूमिभागः । बद्धक्रमः क्रमगतं हरिणाधिपोऽपि नाक्रामति क्रमयुगाचलसंश्रितं ते ॥ ३९ ॥ कल्पान्तकालपवनोद्धतवह्निकल्पं दावानलं ज्वलितमुज्ज्वलमुत्स्फुलिङ्गम् । विश्वं जिघत्सुमिव सम्मुखमापतन्तं त्वन्नाम-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कीर्तनजलं शमयत्यशेषम् ॥४०॥ रक्तेक्षणं
समदकोकिलकण्ठनीलं क्रोधोद्धतं फणिन-
मुत्फणमापतन्तम् । आक्रामति क्रमयुगेन
निरस्तशङ्कस्त्वन्नामनागदमनी हृदि यस्य पुंसः
॥ ४१ ॥ वल्गत्तुरंगगजगर्जितभीमनादमाजौ
बलं बलवतामपि भूपतीनाम् । उद्यद्दिवा-
करमयूखशिखापविद्धं त्वत्कीर्तनात्तम इवाशु
भिदामुपैति ॥ ४२ ॥ कुन्ताग्रभिन्नगजशो-
णितवारिवाहवेगावतारतरणातुरयोधभीमे ।
युद्धे जयं विजितदुर्जयजेयपक्षास्त्वत्पादपङ्क-
जवनाश्रयिणो लभन्ते ॥ ४३ ॥ अम्भोनि-
धौ क्षुभितभीषणनक्रचक्रपाठीनपीठभयदो-
ल्बणवाडवाग्नौ । रङ्गत्तरङ्गशिखरस्थितयान-
पात्रास्त्रासं विहाय भवतः स्मरणाद्व्रजन्ति
॥ ४४ ॥ उद्भूतभीषणजलोदरभारभुग्नाः

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

शोच्यां दशामुपगताश्च्युतजीविताशाः ।
त्वत्पादपङ्कजरजोमृतदिग्धदेहा मर्त्या भव-
न्ति मकरध्वजतुल्यरूपाः ॥ ४५ ॥ आपाद-
कण्ठमुरुशृङ्खलवेष्टिताङ्गा गाढं बृहन्निगडको-
टिनिघृष्टजङ्घाः । त्वन्नाममन्त्रमनिशं मनु-
जाः स्मरन्तः सद्यः स्वयं विगतबन्धभया
भवन्ति ॥ ४६ ॥ मत्तद्विपेन्द्रमृगराजदवा-
नलाहिसंग्रामवारिधिमहोदरबन्धनोत्थम् ॥
तस्याशु नाशमुपयाति भयं भियेव यस्ता-
वकं स्तवमिमं मतिमानधीते ॥४७॥ स्तोत्र-
स्रजं तव जिनेन्द्र गुणैर्निबद्धां भक्त्या मया
विविधवर्णविचित्रपुष्पाम् । धत्ते जनो य इह
कण्ठगतामजस्रं तं मानतुङ्गमवशा समुपैति
लक्ष्मीः ॥ ४८ ॥

इति श्रीमानतुङ्गाचार्यविरचितं भक्तामरस्तोत्रम् ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्रीसिद्धसेनदिवाकरप्रणीतं

कल्याणमन्दिरस्तोत्रम् ।

कल्याणमन्दिरमुदारमवद्यभेदि भीताभय-प्रदमनिन्दितमंघ्रिपद्मम् । संसारसागरनि-मज्जदशेषजन्तुपोतायमानमभिनम्य जिनेश्व-रस्य ॥ १ ॥ यस्य स्वयं सुरगुरुर्गरिमाम्बु-राशेः स्तोत्रं सुविस्तृतमतिर्न विभुर्विधातुम । तीर्थेश्वरस्य कमठस्मयधूमकेतोस्तस्याहमेष किल संस्तवनं करिष्ये ॥ २ ॥ (युग्मम्) सामान्यतोऽपि तव वर्णयितुं स्वरूपमस्मादृ-शाः कथमधीश भवन्त्यधीशाः । धृष्टोऽपि कौशिकशिशुर्यदि वा दिवान्धो रूपं प्ररूपय-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ति किं किल घर्मरश्मेः ॥ ३ ॥ मोहक्षयाद-नुभवन्नपि नाथ मर्त्यो नूनं गुणान्गणयितुं न तव क्षमेत । कल्पान्तवान्तपयसः प्रकटोऽपि यस्मान्मीयेत केन जलधेर्ननु रत्नराशिः ॥ ४ ॥ अभ्युद्यतोऽस्मि तव नाथ जडाशयोऽपि कर्तुं स्तवं लसदसंख्यगुणाकरस्य । बालोऽपि किं न निजबाहुयुगं वितत्य विस्तीर्णतां कथयति स्वधियाम्बुराशेः ॥ ५ ॥ ये योगिनामपि नयान्ति गुणास्तवेश वक्तुं कथं भवति तेषु ममावकाशः । जाता तदेवमसमीक्षितकारितेयं जल्पन्ति वा निजगिरा ननु पक्षिणोऽपि ॥६॥ आस्तामचिन्त्यमहिमा जिन संस्तवस्ते नामापि पाति भवतो भवतो जगन्ति । तीव्रातपोपहतपान्थजनान्निदाघे प्रीणाति पद्मसरसः सरसोऽनि-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

लोऽपि ॥ ७ ॥ हृद्वर्तिनि त्वयि विभो शिथिलीभवन्ति जन्तोः क्षणेन निबिडा अपि कर्मबन्धाः । सद्यो भुजङ्गममया इव मध्यभागमभ्यागते वनशिखण्डिनि चन्दनस्य ॥ ८ ॥ मुच्यन्त एव मनुजाः सहसा जिनेन्द्र रौद्रैरुपद्रवशतैस्त्वयि वीक्षितेऽपि । गोस्वामिनि स्फुरिततेजसि दृष्टमात्रे चौरैरिवाशु पशवः प्रपलायमानैः ॥९॥ त्वं तारको जिन कथं भविनां त एव त्वामुद्वहन्ति हृदयेन यदुत्तरन्तः । यद्वा दृतिस्तरति यज्जलमेष नूनमन्तर्गतस्य मरुतः स किलानुभावः ॥ १० ॥ यस्मिन्हरप्रभृतयोऽपि हतप्रभावाः सोऽपि त्वया रतिपतिः क्षपितः क्षणेन । विध्यापिता हुतभुजः पयसाथ येन पीतं न किं तदपि दुर्धरवाडवेन ॥ ११ ॥ स्वामिन्न-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नल्पगरिमाणमपि प्रपन्नास्त्वां जन्तवः कथ-
महो हृदये दधानाः। जन्मोदधिं लघु तर-
न्त्यतिलाघवेन चिन्त्यो न हन्त महतां यदि
वा प्रभावः ॥ १२ ॥ क्रोधस्त्वया यदि
विभो प्रथमं निरस्तो ध्वस्तस्तदा वद कथं
किल कर्मचौराः। प्लोषत्यमुत्र यदि वा शि-
शिरापि लोके नीलद्रुमाणि विपिनानि न किं
हिमानी ॥ १३ ॥ त्वां योगिनो जिन सदा
परमात्मरूपमन्वेषयन्ति हृदयाम्बुजकोषदेशे।
पूतस्य निर्मलरुचेर्यदि वा किमन्यदक्षस्य
सम्भवपदं ननु कर्णिकायाः ॥१४॥ ध्याना-
ज्जिनेश भवतो भविनः क्षणेन देहं विहाय
परमात्मदशां व्रजन्ति। तीव्रानलादुपलभा-
वमपास्य लोके चामीकरत्वमचिरादिव धातु-
भेदाः ॥ १५ ॥ अन्तः सदैव जिन यस्य

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

विभाव्यसे त्वं भव्यैः कथं तदपि नाशयसे शरीरम् । एतत्स्वरूपमथ मध्यविवर्तिनो हि यद्विग्रहं प्रशमयन्ति महानुभावाः ॥ १६ ॥ आत्मा मनीषिभिरयं त्वदभेदबुद्ध्या ध्यातो जिनेन्द्र भवतीह भवत्प्रभावः । पानीयमप्यमृतमित्यनुचिन्त्यमानं किं नाम नो विषविकारमपाकरोति ॥ १७ ॥ त्वामेव वीततमसं परवादिनोऽपि नूनं विभो हरिहरादिधिया प्रपन्नाः । किं काचकामलिभिरीश सितोऽपि शङ्खो नो गृह्यते विविधवर्णविपर्ययेण ॥ १८ ॥ धर्मोपदेशसमये सविधानुभावादास्तां जनो भवति ते तरुरप्यशोकः । अभ्युद्गते दिनपतौ समहीरुहोऽपि किं वा विबोधमुपयाति न जीवलोकः ॥ १९ ॥ चित्रं विभो कथमवाङ्मुखवृन्तमेव विष्वक्पतत्यविरला सुरपु-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ष्पवृष्टिः। त्वद्गोचरे सुमनसां यदि वा मुनीश ! गच्छन्ति नूनमध एव हि बन्धनानि ॥ २० ॥ स्थाने गभीरहृदयोदधिसम्भवायाः पीयूषतां तव गिरः समुदीरयन्ति। पीत्वा यतः परमसंमदसङ्गभाजो भव्या व्रजन्ति तरसाप्यजरामरत्वम् ॥ २१ ॥ स्वामिन्सुदूरमवनम्य समुत्पतन्तो मन्ये वदन्ति शुचयः सुरचामरौघाः। येऽस्मै नतिं विदधते मुनिपुङ्गवाय ते नूनमूर्ध्वगतयः खलु शुद्धभावाः ॥ २२ ॥ श्यामं गभीरगिरमुज्ज्वलहेमरत्नसिंहासनस्थमिह भव्यशिखण्डिनस्त्वाम्। आलोकयन्ति रभसेन नदन्तमुच्चैश्चामीकराद्रिशिरसीव नवाम्बुवाहम् ॥ २३ ॥ उद्गच्छता तव शितिद्युतिमण्डलेन लुप्तच्छदच्छविरशोकतरुर्बभूव। सांनिध्यतोऽपि यदि वा तव वीतराग ! नीरागतां व्रजति को

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

न सचेतनोऽपि ॥ २४ ॥ भो भोः प्रमाद-
मवधूय भजध्वमेनमागत्य निर्वृतिपुरीं प्रति
सार्थवाहम्। एतन्निवेदयति देव जगत्त्र-
याय मन्ये नदन्नभिनभः सुरदुन्दुभिस्ते
॥ २५ ॥ उद्द्योतितेषु भवता भुवनेषु
नाथ तारान्वितो विधुरयं विहताधिकारः।
मुक्ताकलापकलितोरुसितातपत्रव्याजात्त्रिधा
धृतधनुर्ध्रुवमभ्युपेतः ॥ २६ ॥ स्वेन प्रपूरि-
तजगत्त्रयपिण्डितेन कान्तिप्रतापयशसामि-
व सञ्चयेन। माणिक्यहेमरजतप्रविनिर्मितेन
सालत्रयेण भगवन्नभितो विभासि ॥ २७॥
दिव्यस्रजो जिन नमत्त्रिदशाधिपानामुत्सृ-
ज्य रत्नरचितानपि मौलिबन्धान्। पादौ
श्रयन्ति भवतो यदि वापरत्र त्वत्सङ्गमे सुम-
नसो न रमन्त एव ॥ २८ ॥ त्वं नाथ

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जन्मजलधेर्विपराङ्मुखोऽपि यत्तारयस्यसुम-
तो निजपृष्ठलग्नान् । युक्तं हि पार्थिवनृ-
पस्य सतस्तवैव चित्रं विभो यदसि कर्मवि-
पाकशून्यः ॥ २९ ॥ विश्वेश्वरोऽपि जन-
पालक दुर्गतस्त्वं किंवाक्षरप्रकृतिरप्यलिपि-
स्त्वमीश । अज्ञानवत्यपि सदैव कथंचिदेव ज्ञा-
नं त्वयि स्फुरति विश्वविकासहेतु ॥ ३० ॥
प्राग्भारसम्भृतनभांसि रजांसि रोषादुत्था-
पितानि कमठेन शठेन यानि । छायापि
तैस्तव न नाथ हता हताशो ग्रस्तस्त्वमीभि-
रयमेव परं दुरात्मा ॥ ३१ ॥ यद्गर्जदूर्जित-
घनौघमदभ्रभीमभ्रश्यत्तडिन्मुसलमांसलघो-
रधारम् । दैत्येन मुक्तमथ दुस्तरवारि दध्रे
तेनैव तस्य जिन दुस्तरवारिकृत्यम् ॥ ३२ ॥
ध्वस्तोर्ध्वकेशविकृताकृति मर्त्यमुण्डप्रालम्ब-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भृङ्गयद्वक्त्रविनिर्यदग्निः। प्रेतव्रजः प्रति भवन्तमपीरितो यः सोऽस्याभवत्प्रतिभवं भवदुःखहेतुः॥ ३३॥ धन्यास्त एव भुवनाधिप ये त्रिसन्ध्यमाराधयन्ति विधिवद्विधुतान्यकृत्याः। भक्त्योल्लसत्पुलकपक्ष्मलदेहदेशाः पादद्वयं तव विभो भुवि जन्मभाजः॥ ३४॥ अस्मिन्नपारभववारिनिधौ मुनीश मन्ये न मे श्रवणगोचरतां गतोऽसि। आकर्णिते तु तव गोत्रपवित्रमन्त्रे किं वा विपद्विषधरी सविधं समेति॥३५॥ जन्मान्तरेऽपि तव पादयुगं न देव मन्ये मया महितमीहितदानदक्षम्। तेनेह जन्मनि मुनीश! पराभवानां जातो निकेतनमहं मथिताशयानाम्॥ ३६॥ नूनं न मोहतिमिरावृतलोचनेन पूर्वं विभो सकृदपि प्रविलोकि-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तोऽसि । मर्माविधो विधुरयन्ति हि मामनर्थाः प्रोद्यत्प्रबन्धगतयः कथमन्यथैते ॥३७॥
आकर्णितोऽपि महितोऽपि निरीक्षितोऽपि नूनं न चेतसि मया विधृतोऽसि भक्त्या ।
जातोऽस्मि तेन जनबान्धव दुःखपात्रं यस्मात्क्रियाः प्रतिफलन्ति न भावशून्याः ॥ ३८ ॥
त्वं नाथ दुःखिजनवत्सल हे शरण्य कारुण्यपुण्यवसते वशिनां वरेण्य । भक्त्या नते मयि महेश दयां विधाय दुःखाङ्कुरोद्दलनतत्परतां विधेहि ॥ ३९ ॥ निःसंख्यसारशरणं शरणं शरण्यमासाद्य सादितरिपुप्रथितावदानम् । त्वत्पादपङ्कजमपि प्रणिधानवन्ध्यो वन्ध्योऽस्मि तद्भुवनपावन हा हतोऽस्मि ॥ ४० ॥ देवेन्द्रवन्द्य विदिताखिलवस्तुसार संसारतारक विभो भुवनाधिनाथ । त्रायस्व

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

देव करुणाह्रद मां पुनीहि सीदन्तमद्य भयदव्यसनाम्बुराशेः ॥ ४१ ॥ यद्यस्ति नाथ भवदङ्घ्रिसरोरुहाणां भक्तेः फलं किमपि सन्ततसञ्चितायाः । तन्मे त्वदेकशरणस्य शरण्य भूयाः स्वामी त्वमेव भुवनेऽत्र भवान्तरेऽपि ॥ ४२ ॥ इत्थं समाहितधियो विधिवज्जिनेन्द्र सान्द्रोल्लसत्पुलककञ्चुकिताङ्गभागाः । त्वद्बिम्बनिर्मलमुखाम्बुजबद्धलक्ष्म्या ये संस्तवं तव विभो रचयन्ति भव्याः ॥ ४३ ॥ जननयनकुमुदचन्द्र प्रभास्वराः स्वर्गसम्पदो भुक्त्वा । ते विगलितमलनिचया अचिरान्मोक्षं प्रपद्यन्ते ॥ ४४ ॥

इति सिद्धसेनदिवाकरप्रणीतं कल्याणमन्दिरस्तोत्रम्

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्रीवादिराजप्रणीतं

एकीभावस्तोत्रम् ।

एकीभावं गत इव मया यः स्वयं कर्म-
बन्धो घोरं दुःखं भवभवगतो दुर्निवारः
करोति । तस्याप्यस्य त्वयि जिनवरे भक्ति-
रुन्मुक्तये चेज्जेतुं शक्यो भवति न तया
कोऽपरस्तापहेतुः ॥ १ ॥ ज्योतीरूपं दुरित-
निवहध्वान्तविध्वंसहेतुं त्वामेवाहुर्जिनवर चिरं
तत्त्वविद्याभियुक्ताः । चेतोवासे भवसि च
मम स्फारमुद्भासमानस्तस्मिन्नंहः कथमिव
तमो वस्तुतो वस्तुमीष्टे ॥ २ ॥ आनन्दा-
श्रुस्नापितवदनं गद्गदं चाभिजल्पन्यश्चायेत

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

त्वयि दृढमनाः स्तोत्रमन्त्रैर्भवन्तम् । तस्याभ्यस्तादपि च सुचिरं देहवल्मीकमध्यान्निष्कास्यन्ते विविधविषमव्याधयः काद्रवेयाः ॥ ३ ॥ प्रागेवेह त्रिदिवभवनादेष्यता भव्यपुण्यात्पृथ्वीचक्रं कनकमयतां देव निन्ये त्वयेदम् । ध्यानद्वारं मम रुचिकरं स्वान्तगेहं प्रविष्टस्तत्किं चित्रं जिन वपुरिदं यत्सुवर्णीकरोषि ॥ ४ ॥ लोकस्यैकस्त्वमसि भगवन्निर्निमित्तेन बन्धुस्त्वय्येवासौ सकलविषया शक्तिरप्रत्यनीका । भक्तिस्फीतां चिरमधिवसन्मामिकां चित्तशय्यां मय्युत्पन्नं कथमिव ततः क्लेशयूथं सहेथाः ॥ ५ ॥ जन्माटव्यां कथमपि मया देव दीर्घं भ्रमित्वा प्राप्तैवेयं तव नयकथा स्फारपीयूषवापी । तस्या मध्ये हिमकरहिमव्यूहशीते नितान्तं

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

निर्भेद्यं मां न जहति कथं दुःखदावोपतापाः ॥ ६ ॥ पादन्यासादपि च पुनतो यात्रया ते त्रिलोकीं हेमाभासो भवति सुरभिः श्रीनिवासश्च पद्मः । सर्वाङ्गेण स्पृशति भगवंस्त्वय्यशेषं मनो मे श्रेयः किंतत्स्वयमहरहर्यन्न मामभ्युपैति ॥ ७ ॥ पश्यन्तं त्वद्वचनममृतं भक्तिपात्र्या पिबन्तं कर्मारण्यात्पुरुषमसमानन्दधाम प्रविष्टम् । त्वां दुर्वारस्मरमदहरं त्वत्प्रसादैकभूमिं क्रूराकाराः कथमिव रुजाकण्टका निर्लुठन्ति ॥ ८ ॥ पाषाणात्मा तदितरसमः केवलं रत्नमूर्तिर्मानस्तम्भो भवति च परस्तादृशो रत्नवर्गः । दृष्टिप्राप्तो हरति स कथं मानरोगं नराणां प्रत्यासत्तिर्यदि न भवतस्तस्य तच्छक्तिहेतुः ॥ ९ ॥ हृद्यः प्राप्तो मरुदपि भवन्मूर्तिशै-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

लोकवाही सद्यः पुंसां निरवधिरुजाधूलिबन्धं धुनोति। ध्यानाहूतो हृदयकमलं यस्य तु त्वं प्रविष्टस्तस्याशक्यः क इह भुवने देव लोकोपकारः ॥ १० ॥ जानासि त्वं मम भवभवे यच्च यादृक्च दुःखं जातं यस्य स्मरणमपि मे शस्त्रवन्निष्पिनष्टि । त्वं सर्वेशः सकृप इति च त्वामुपेतोऽस्मि भक्त्या यत्कर्तव्यं तदिह विषये देव एव प्रमाणम् ॥११॥ प्रापद्दैवं तव नुतिपदैर्जीवकेनोपदिष्टैः पापाचारी मरणसमये सारमेयोऽपि सौख्यम् । कः संदेहो यदुपलभते वासवश्रीप्रभुत्वं जल्पञ्जाप्यैर्मणिभिरमलैस्त्वन्नमस्कारचक्रम् ॥ १२ ॥ शुद्धे ज्ञाने शुचिनि चरिते सत्यपि त्वय्यनीचा भक्तिर्नो चेदनवधिसुखावञ्चिका कुञ्चिकेयम् । शक्योद्घाटं भवति हि

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कथं मुक्तिकामस्य पुंसो मुक्तिद्वारं परिदृढ-
महामोहमुद्राकवाटम् ॥ १३ ॥ प्रच्छन्नः
खल्वयमघमयैरन्धकारैः समन्तात्पन्था मुक्तेः
स्थपुटितपदः क्लेशगर्तैरगाधैः । तत्कस्तेन
व्रजति सुखतो देव तत्त्वावभासी यद्यग्रेऽग्रे
न भवति भवद्भारतीरत्नदीपः ॥१४॥ आत्म-
ज्योतिर्निधिरनवधिर्द्रष्टुरानन्दहेतुः कर्मक्षो-
णीपटलपिहितो योऽनवाप्या परेषाम् । हस्ते
कुर्वन्त्यनतिचिरतस्तं भवद्भक्तिभाजः स्तोत्रै-
र्बन्धप्रकृतिपुरुषोद्दामधात्रीखनित्रैः ॥ १५ ॥
प्रत्युत्पन्नानयहिमगिरेरायता चामृताब्धेर्या
देव त्वत्पदकमलयोः सङ्गता भक्तिगङ्गा ।
चेतस्तस्यां मम रुचिवशादाप्लुतं क्षालितां-
हःकल्माषं यद्भवति किमियं देव संदेहभू-
मिः ॥ १६ ॥ प्रादुर्भूत स्थिरपदसुख त्वाम-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नुध्यायतो मे त्वय्येवाहं स इति मतिरुत्पद्यते निर्विकल्पा। मिथ्यैवेयं तदपि तनुते तृप्तिमभ्रेषरूपां दोषात्मानोऽप्यभिमतफलास्त्वत्प्रसादाद्भवन्ति ॥ १७ ॥ मिथ्यावादं मलमपनुदन्सप्तभङ्गीतरङ्गैर्वागम्भोधिर्भुवनमखिलं देव पर्येति यस्ते। तस्यावृत्तिं सपदि विबुधाश्चेतसैवाचलेन व्यातन्वन्तः सुचिरममृतासेवया तृप्नुवन्ति ॥ १८ ॥ आहार्येभ्यः स्पृहयति परं यः स्वभावादहृद्यशस्त्रग्राही भवति सततं वैरिणा यश्च शक्यः। सर्वाङ्गेषु त्वमसि सुभगस्त्वं न शक्यः परेषां तत्किं भूषावसनकुसुमैः किं च शस्त्रैरुदस्त्रैः ॥ १९ ॥ इन्द्रः सेवां तव सुकुरुतां किं तया श्लाघनं ते तस्यैवेयं भवलयकरी श्लाघ्यतामातनोति। त्वं निस्तारी जननजलधेः सि-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

च्छ्रिकान्तापतिस्त्वं त्वं लोकानां प्रभुरिति तव श्लाघ्यते स्तोत्रमित्थम् ॥ २० ॥ वृत्ति-र्वाचामपरसदृशी न त्वमन्येन तुल्यस्तुत्युद्गाराः कथमिव ततस्त्वय्यमी नः क्रमन्ते । मैवं भूवंस्तदपि भगवन्भक्तिपीयूषपुष्टास्ते भव्यानामभिमतफलाः पारिजाता भवन्ति ॥ कोपावेशो न तव न तव क्वापि देव प्रसादो व्याप्तं चेतस्तव हि परमोपेक्षयैवानपेक्षम् । आज्ञावश्यं तदपि भुवनं संनिधिर्वैरहारी क्वैवंभूतं भुवनतिलक ! प्राभवं त्वत्परेषु ॥ २२ ॥ देव स्तोतुं त्रिदिवगणिकामण्ड-लीगीतकीर्तिं तोतूर्ति त्वां सकलविषयज्ञान-मूर्तिं जनो यः । तस्य क्षेमं न पदमटतो जातु जाहूर्ति पन्थास्तत्त्वग्रन्थस्मरणविषये नैष मोमूर्ति मर्त्यः ॥ २३ ॥ चित्ते कुर्वन्नि-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

रवधिसुखज्ञानदृग्वीर्यरूपं देव त्वां यः समय-
नियमादादरेण स्तवीति। श्रेयोमार्गं स
खलु सुकृती तावता पूरयित्वा कल्याणानां
भवति विषयः पञ्चधापञ्चितानाम् ॥ २४ ॥
भक्तिप्रह्वमहेन्द्रपूजितपद त्वत्कीर्तने न क्षमाः
सूक्ष्मज्ञानदृशोऽपि संयमभृतः के हन्त मन्दा
वयम्। अस्माभिः स्तवनच्छलेन तु पर-
स्त्वय्यादरस्तन्यते स्वात्माधीनसुखैषिणां स
खलु नः कल्याणकल्पद्रुमः ॥२५॥ वादि-
राजमनु शाब्दिकलोको वादिराजमनु तार्कि-
कसिंहः। वादिराजमनु काव्यकृतस्ते वादि-
राजमनु भव्यसहायः ॥ २६ ॥

इति श्रीवादिराजकृतमेकीभावस्तोत्रम्

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अथ श्रीधनञ्जयकविप्रणीतं

विषापहारस्तोत्रम् ।

स्वात्मस्थितः सर्वगतः समस्तव्यापार-
वेदी विनिवृत्तसङ्गः । प्रवृद्धकालोऽप्यजरो
वरेण्यः पायादपायात्पुरुषः पुराणः ॥ १ ॥
परैरचिन्त्यं युगभारमेकः स्तोतुं वहन्योगि-
भिरप्यशक्यः । स्तुत्योऽद्य मेऽसौ वृषभो न
भानोः किमप्रवेशे विशति प्रदीपः ॥ २ ॥
तत्याज शक्रः शकनाभिमानं नाहं त्यजामि
स्तवनानुबन्धम् । स्वल्पेन बोधेन ततोऽधि-
कार्थं वातायनेनेव निरूपयामि ॥ ३ ॥ त्वं
विश्वदृश्वा सकलैरदृश्यो विद्वानशेषं निखि-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

लैरवेद्यः । वक्तुं कियान्कीदृशमित्यशक्यः
स्तुतिस्ततोऽशक्तिकथा तवास्तु ॥ ४ ॥
व्यापीडितं बालमिवात्मदोषैरुल्लाघतां लोक-
मवापिपस्त्वम् । हिताहितान्वेषणमान्द्यभाजः
सर्वस्य जन्तोरसि बालवैद्यः ॥ ५ ॥ दाता
न हर्ता दिवसं विवस्वानद्यश्व इत्यच्युतद-
र्शिताशः । सव्याजमेवं गमयत्यशक्तः क्षणेन
दत्सेऽभिमतं नताय ॥ ६ ॥ उपैति भक्त्या
सुमुखः सुखानि त्वयि स्वभावाद्विमुखश्च
दुःखम् । सदावदातद्युतिरेकरूपस्तयोस्त्वमा-
दर्श इवाऽऽवभासि ॥ ७ ॥ अगाधताऽब्धेः
स यतः पयोधिर्मेरोश्च तुङ्गा प्रकृतिः स यत्र ।
द्यावापृथिव्योः पृथुता तथैव व्याप त्वदीया
भुवनान्तराणि ॥ ८ ॥ तवानवस्था परमा-
र्थतत्त्वं त्वया न गीतः पुनरागमश्च । दृष्टं

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

विहाय त्वमदृष्टैषीर्विरुद्धवृत्तोऽपि समञ्जस-
स्त्वम् ॥ ९ ॥ स्मरः सुदग्धो भवतैव तस्मि-
न्नुद्धूलितात्मा यदि नाम शम्भुः । अशेत
वृन्दोपहतोऽपि विष्णुः किं गृह्यते येन भवा-
नजागः ॥ १० ॥ स नीरजा स्यादपरोऽघ-
वान्वा तद्दोषकीर्त्यैव न ते गुणित्वम् । स्व-
तोऽम्बुराशेर्महिमा न देव स्तोकापवादेन
जलाशयस्य ॥ ११ ॥ कर्मस्थितिं जन्तुरने-
कभूमिं नयत्यमुं सा च परस्परस्य । त्वं ने-
तृभावं हि तयोर्भवाब्धौ जिनेन्द्र नौनाविक-
योरिवाख्यः ॥ १२ ॥ सुखाय दुःखानि गु-
णाय दोषान्धर्माय पापानि समाचरन्ति ।
तैलाय बालाः सिकतासमूहं निपीडयन्ति

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

स्फुटमत्वदीयाः ॥ १३ ॥ विषापहारं मणि-
मौषधानि मन्त्रं समुद्दिश्य रसायनं च ।
भ्राम्यन्त्यहो न त्वमिति स्मरन्ति पर्याय-
नामानि तवैव तानि ॥ १४ ॥ चित्ते न कि-
ञ्चित्कृतवानसि त्वं देवः कृतश्चेतसि येन
सर्वम् । हस्ते कृतं तेन जगद्विचित्रं सुखेन
जीवत्यपि चित्तबाह्यः ॥ १५ ॥ त्रिकालतत्त्वं
त्वमवैस्त्रिलोकीस्वामीति संख्यानियतेरमीषाम्
बोधाधिपत्यं प्रति नाभविष्यंस्तेऽन्येऽपि चे-
द्व्याप्स्यदमूनपीदम् ॥ १६ ॥ नाकस्य पत्युः
परिकर्म रम्यं नागम्यरूपस्य तवोपकारि ।
तस्यैव हेतुः स्वसुखस्य भानोरुद्बिभ्रतश्छत्र-
मिवादरेण ॥ १७ ॥ क्वोपेक्षकस्त्वं क्व सुखो-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पदेशः स चेत् किमिच्छाप्रतिकूलवादः ।
क्वासौ क्व वा सर्वजगत्प्रियत्वं तन्नो यथात-
थ्यमवेविजं ते ॥ १८ ॥ तुङ्गात्फलं यत्तद-
किञ्चनाच्च प्राप्यं समृद्धान्न धनेश्वरादेः ।
निरम्भसोऽप्युच्चतमादिवाद्रेर्नैकापि निर्याति
धुनी पयोधेः ॥ १९ ॥ त्रैलोक्यसेवानिय-
माय दण्डं दध्रे यदिन्द्रो विनयेन तस्य ।
तत्प्रातिहार्यं भवतः कुतस्त्यं तत्कर्मयोगाद्य-
दि वा तवास्तु ॥ २० ॥ श्रिया परं पश्यति
साधु निःस्वः श्रीमान्न कश्चित्कृपणं त्वदन्यः ।
यथा प्रकाशस्थितमन्धकारस्थायीक्षतेऽसौ न
तथा तमःस्थम् ॥ २१ ॥ स्ववृद्धिनिःश्वास-
निमेषभाजि प्रत्यक्षमात्मानुभवेऽपि मूढः ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

किं चाखिलज्ञेयविवर्तिबोधस्वरूपमध्यक्षमवै-
ति लोकः ॥ २२ ॥ तस्यात्मजस्तस्य पितेति
देव त्वां येऽवगायन्ति कुलं प्रकाश्य । ते-
ऽद्यापि नन्वाश्मनमित्यवश्यं पाणौ कृतं हेम
पुनस्त्यजन्ति ॥ २३ ॥ दत्तस्त्रिलोक्यां पट-
होऽभिभूताः सुरासुरास्तस्य महान्स लाभः ।
मोहस्य मोहस्त्वयि को विरोद्धुर्मूलस्य नाशो
बलवद्विरोधः ॥ २४ ॥ मार्गस्त्वयैको ददृशे
विमुक्तेश्चतुर्गतीनां गहनं परेण । सर्वं मया
दृष्टमिति स्मयेन त्वं मा कदाचिद्भुजमालुलो-
के ॥ २५ ॥ स्वर्भानुरर्कस्य हविर्भुजोऽम्भः
कल्पान्तवातोऽम्बुनिधेर्विघातः । संसारभो-
गस्य वियोगभावो विपक्षपूर्वाभ्युदयास्त्वदन्ये
॥ २६ ॥ अजानतस्त्वां नमतः फलं यत्त-
ज्ज्ञानतोऽन्यं न तु देवतेति । हरिन्मणिं का-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

चधिया दधानस्तं तस्य बुद्ध्या वहतो न रिक्तः ॥ २७ ॥ प्रशांस्तवाचश्चतुराः कषायैर्दग्धस्य देवव्यवहारमाहुः । गतस्य दीपस्य हि नन्दितत्वं दृष्टं कपालस्य च मङ्गलत्वम् ॥ २८ ॥ नानार्थमेकार्थमदस्त्वदुक्तं हितं वचस्ते निशमय्य वक्तुः । निर्दोषतां केन विभावयन्ति ज्वरेण मुक्तः सुगमः स्वरेण ॥ २९ ॥ न क्वापि वाञ्छा ववृते च वाक्ते काले क्वचित्कोऽपि तथा नियोगः । न पूरयाम्यम्बुधिमित्युदंशुः स्वयं हि शीतद्युतिरभ्युदेति ॥ ३० ॥ गुणा गभीराः परमाः प्रसन्ना बहुप्रकारा बहवस्तवेति । दृष्टोऽयमन्तः स्तवने न तेषां गुणो गुणानां किमतः परोऽस्ति ॥ ३१ ॥ स्तुत्या परं नाभिमतं हि भक्त्या स्मृत्या प्रणत्या च ततो

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भजामि ! स्मरामि देवं प्रणमामि नित्यं केनाप्युपायेन फलं हि साध्यम् ॥ ३२ ॥ नतस्त्रिलोकीनगराधिदेवं नित्यं परं ज्योतिरनन्तशक्तिम् । अपुण्यपापं परपुण्यहेतुं नमाम्यहं वन्द्यमवन्दितारम् ॥ ३३ ॥ अशब्दमस्पर्शमरूपगन्धं त्वां नीरसं तद्विषयावबोधम् । सर्वस्य मातारममेयमन्यैर्जिनेन्द्रमस्मार्यमनुस्मरामि ॥ ३४ ॥ अगाधमन्यैर्मनसाऽप्यलङ्घ्यं निष्किंचनं प्रार्थितमर्थवद्भिः । विश्वस्य पारं तमदृष्टपारं पतिं जिनानां शरणं व्रजामि ॥ ३५ ॥ त्रैलोक्यदीक्षागुरवे नमस्ते यो वर्धमानोऽपि निजोन्नतोऽभूत् प्राग्गण्डशैलः पुनरद्रिकल्पः पश्चान्नमेरुः कुलपर्वतोऽभूत् ॥ ३६ ॥ स्वयंप्रकाशस्य दिवा निशा वा न बाध्यता यस्य न बाधकत्वम् ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

न लाघवं गौरवमेकरूपं वन्दे विभुं कालक-
लामतीतम् ॥ ३७ ॥ इति स्तुतिं देव विधाय
दैन्याद्वरं न याचे त्वमुपेक्षकोऽसि । छाया-
तरुं संश्रयतः स्वतः स्यात्कश्छायया याचि-
तयात्मलाभः ॥ ३८ ॥ अथास्ति दित्सा
यदि वोपरोधस्त्वय्येव सक्तां दिश भक्तिबु-
द्धिम् । करिष्यते देव तथा कृपां मे को
वात्मपोष्ये सुमुखो न सूरिः ॥ ३९ ॥ वित-
रति विहिता यथाकथंचिज्जिन विनताय म-
नीषितानि भक्तिः । त्वयि नुतिविषया पु-
नर्विशेषाद्दिशति सुखानि यशो धनं जयं
च ॥ ४० ॥

इति श्रीधनंजयकृतं विषापहारस्तोत्रम् ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्रीभूपालकविप्रणीता

जिनचतुर्विंशतिका ।

श्रीलीलायतनं महीकुलगृहं कीर्तिप्रमोदास्पदं वाग्देवीरतिकेतनं जयरमाक्रीडानिधानं महत् । सः स्यात्सर्वमहोत्सवैकभवनं यः प्रार्थितार्थप्रदं प्रातः पश्यति कल्पपादपदलच्छायं जिनाङ्घ्रिद्वयम् ॥ १ ॥ शान्तं वपुः श्रवणहारि वचश्चरित्रं सर्वोपकारि तव देव ततः श्रुतज्ञाः । संसारमारवमहत्स्थलरुद्रसान्द्रच्छायामहीरुह भवन्तमुपाश्रयन्ते ॥२॥ स्वामिन्नद्य विनिर्गतोऽस्मि जननीगर्भान्ध-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कूपोदराद्द्योद्घाटितदृष्टिरस्मि फलवज्जन्मा-
ऽस्मि चाद्य स्फुटम् । त्वामद्राक्षमहं यदक्षय-
पदानन्दाय लोकत्रयीनेत्रेन्दीवरकाननेन्दुम-
मृतस्यन्दिप्रभाचान्द्रिकम् ॥ ३ ॥ निःशेषात्रि-
दशेन्द्रशेखरशिखारत्नप्रदीपावली—सान्द्री-
भूतमृगेन्द्रविष्टरतटीमाणिक्यदीपावलिः ।
क्वेयं श्रीः क्व च निःस्पृहत्वमिदमित्यूहाति-
गस्त्वादृशः सर्वज्ञानदृशश्चरित्रमहिमा लो-
केश लोकोत्तरः ॥ ४ ॥ राज्यं शास-
नकारिनाकपति यत्त्यक्तं तृणावज्ञया हेला-
निर्दलितत्रिलोकमहिमा यन्मोहमल्लो जितः ।
लोकालोकमपि स्वबोधमुकुरस्यान्तः कृतं
यत्त्वया सैषाऽऽश्चर्यपरम्परा जिनवर
क्वान्यत्र संभाव्यते ॥ ५ ॥ दानं
ज्ञानधनाय दत्तमसकृत्पात्राय सद्वृत्तये ची-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

र्याण्युग्रतपांसि तेन सुचिरं पूजाश्च बह्व्यः कृताः। शीलानां निचयः सहामलगुणैः सर्वः समासादितो दृष्टस्त्वं जिन येन दृष्टि-सुभगः श्रद्धापरेण क्षणम् ॥ ६ ॥ प्रज्ञापा-रमितः स एव भगवान्पारं स एव श्रुतस्क-न्धाब्धेर्गुणरत्नभूषण इति श्लाघ्यः स एव ध्रुवम्। नीयन्ते जिन येन कर्णहृदयालंका-रतां त्वद्गुणाः संसाराहिविषापहारमणयस्त्रै-लोक्यचूडामणेः ॥ ७ ॥ जयति दिविजवृ-न्दान्दोलितैरिन्दुरोचिर्निचयरुचिभिरुच्चैश्चा-मरैर्वीज्यमानः। जिनपतिरनुरज्यन्मुक्तिसा-म्राज्यलक्ष्मीयुवतिनवकटाक्षक्षेपलीलां दधानैः ॥ ८ ॥ देवः श्वेतातपत्रत्रयचमरिरुहाशोक-भाश्चक्रभाषापुष्पौघासारसिंहासनसुरपटहैर-ष्टभिः प्रातिहार्यैः। साश्चर्यैर्भ्राजमानः सुर-

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

स्मनुजसभाम्भोजिनीभानुमाली पायान्नः पा-
दपीठीकृतसकलजगत्पादमौलिर्जिनेन्द्रः ॥९॥
नृत्यत्स्वर्दन्तिदन्ताम्बुरुहवननटन्नाकनारीनि-
कायः सद्यस्त्रैलोक्ययात्रोत्सवकरनिनदातो-
द्यमाद्यन्निलिम्पः । हस्ताम्भोजातलीलावि-
निहितसुमनोदामरम्यामरस्त्रीकाम्यः कल्या-
णपूजाविधिषु विजयते देव देवागमस्ते
॥ १० ॥ चक्षुष्मानहमेव देव भुवने नेत्रा-
मृतस्यन्दिनं त्वद्वक्त्रेन्दुमतिप्रसादसुभगैस्ते-
जोभिरुद्भासितम् । तेनालोकयता मयाऽन-
तिचिराच्चक्षुः कृतार्थीकृतं द्रष्टव्यावधिवीक्षण-
व्यतिकरव्याजृम्भमाणोत्सवम् ॥ ११ ॥ क-
न्तोः सकान्तमपि मल्लमवैति कश्चिन्मुग्धो
मुकुन्दमरविन्दजमिन्दुमौलिम् । मोघीकृत-
त्रिदशयोषिदपाङ्गपातस्तस्य त्वमेव विजयी

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जिनराजमल्लः ॥ १२ ॥ किसलयितमनल्पं त्वद्विलोकाभिलाषात्कुसुमितमतिसान्द्रं त्वत्समीपप्रयाणात् । मम फलितममन्दं त्वन्मुखेन्दोरिदानीं नयनपथमवाप्ताद्देव पुण्यद्रुमेण ॥ १३ ॥ त्रिभुवनवनपुष्प्यत्पुष्पकोदण्डदर्पप्रसरदवनवाम्भोमुक्तिसूक्तिप्रसूतिः । स जयति जिनराजव्रातजीमूतसङ्घः शतमखशिखिनृत्यारम्भनिर्बन्धबन्धुः ॥ १४ ॥ भूपालः स्वर्गपालप्रमुखनरसुरश्रेणिनेत्रालिमालालीलाचैत्यस्य चैत्यालयमखिलजगत्कौमुदीन्दोर्जिनस्य । उत्तंसीभूतसेवाञ्जलिपुटनलिनीकुड्मलास्त्रिः परीत्य श्रीपादच्छाययापस्थितभवदवथुः संश्रितोऽस्मीव मुक्तिम् ॥ १५ ॥ देव त्वदङ्घ्रिनखमण्डलदर्पणेऽस्मिन्नर्घ्ये निसर्गरुचिरे चिरदृष्टवक्त्रः । श्रीकीर्ति-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कान्तिद्युतिसङ्गमकारणानि भव्यो न कानि लभते शुभमङ्गलानि ॥ १६ ॥ जयति सुर-नरेन्द्रश्रीसुधानिर्झरिण्याः कुलधरणिधरोऽयं जैनचैत्याभिरामः । प्रविपुलफलधर्मानोकहा-ग्रप्रवालप्रसरसिखरशुम्भत्केतनः श्रीनिकेतः ॥ १७ ॥ विनमदमरकान्ताकुन्तलाक्रान्त-कान्तिस्फुरितनखमयूखद्योतिताशान्तरालः । दिविजमनुजराजव्रातपूज्यक्रमाब्जो जयति विजितकर्मारातिजालो जिनेन्द्रः ॥ १८ ॥ सुप्तोत्थितेन सुमुखेन सुमङ्गलाय द्रष्टव्यम-स्ति यदि मङ्गलमेव वस्तु । अन्येन किं तदिह नाथ तवैव वक्त्रं त्रैलोक्यमङ्गलनि-केतनमीक्षणीयम् । ॥ १९ ॥ त्वं धर्मोदय-तापसाश्रमशुकस्त्वं काव्यबन्धक्रमक्रीडान-न्दनकोकिलस्त्वमुचितः श्रीमाल्लिकाषट्पदः ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

त्वं पुन्नागकथारविन्दसरसीहंसस्त्वमुत्तंसकः
कैर्भूपाल न धार्यसे गुणमणिस्रङ्मालिभिर्मौ-
लिभिः ॥ २० ॥ शिवसुखमजरश्रीसङ्गमं
चाभिलष्य स्वमभिनिगमयन्ति क्लेशपाशेन
केचित् वयमिह तु वचस्ते भूपतेर्भावयन्त-
स्तदुभयमपि . शश्वल्लीलया निर्विशामः
॥ २१ ॥ देवेन्द्रास्तव मज्जनानि विदधुर्दे-
वाङ्गना मङ्गलान्यापेठुः शरदिन्दुनिर्मलय-
शो गन्धर्वदेवा जगुः । शेषाश्चापि यथानि-
योगमखिलाः सेवां सुराश्चक्रिरे तत्किं देव
वयं विदध्म इति नश्चित्तं तु दोलायते
॥ २२ ॥ देव त्वज्जननाभिषेकसमये रो-
माञ्चसत्कञ्चुकैर्देवेन्द्रैर्यदनर्ति नर्तनविधौ
लब्धप्रभावैः स्फुटम् । किंचान्यत्सुरसुन्दरी-
कुचतटप्रान्तावनद्धोत्तमप्रेङ्खद्वल्लकिनादझंकृ-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तमहो तत्केन संवर्ण्यते ॥ २३ ॥ देव त्व-
त्प्रतिबिम्बमम्बुजदलस्मेरेक्षणं पश्यतां य-
त्रास्माकमहो महोत्सवरसो दृष्टेरियान्वर्तते।
साक्षात्तत्र भवन्तमीक्षितवतां कल्याणकाले
तदा देवानामनिमेषलोचनतया वृत्तः स किं
वर्ण्यते ॥ २४ ॥ दृष्टं धाम रसायनस्य म-
हतां दृष्टं निधीनां पदं दृष्टं सिद्धरसस्य सद्म
सदनं दृष्टं च चिन्तामणेः। किं दृष्टैरथवा-
नुषङ्गिकफलैरेभिर्मयाद्य ध्रुवं दृष्टं मुक्तिवि-
वाहमङ्गलगृहं दृष्टे जिनश्रीगृहे ॥ २५ ॥
दृष्टस्त्वं जिनराजचन्द्र विकसद्भूपेन्द्रनेत्रो-
त्पलैः स्नातं त्वन्नुतिचन्द्रिकाम्भसि भवद्वि-
द्वच्चकोरोत्सवे। नीतश्चाद्य निदाघजः क्ल-
मभरः शांतिं मया गम्यते देव त्वद्गतचेत-
सैव भवतो भूयात्पुनर्दर्शनम् ॥ २६ ॥

इति श्रीभूपालकविप्रणीता जिनचतुर्विंशतिका।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आचार्यश्रीमदुमास्वामिविरचितं

तत्त्वार्थसूत्रम् ।

सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्राणि मोक्षमार्गः ॥ १ ॥ तत्त्वार्थश्रद्धानं सम्यग्दर्शनम् ॥२॥ तन्निसर्गादधिगमाद्वा ॥३॥ जीवाजीवास्रवबन्धसंवरनिर्जरामोक्षास्तत्त्वम् ॥ ४ ॥ नामस्थापनाद्रव्यभावतस्तन्न्यासः ॥ ५ ॥ प्रमाणनयैरधिगमः ॥ ६ ॥ निर्देशस्वामित्वसाधनाऽधिकरणस्थितिविधानतः ॥ ७ ॥ सत्संख्याक्षेत्रस्पर्शनकालान्तरभावाल्पबहुत्वैश्च ॥ ८ ॥ मतिश्रुतावधिमनःपर्ययकेवलानि ज्ञानम् ॥ ९ ॥ तत्प्रमाणे ॥ १० ॥ आद्ये

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

परोक्षम् ॥ ॥ ११ ॥ प्रत्यक्षमन्यत् ॥ १२ ॥
मतिः स्मृतिः संज्ञा चिन्ताऽभिनिबोध इत्य-
नर्थान्तरम् ॥ १३ ॥ तदिन्द्रियानिन्द्रिय-
निमित्तम् ॥ १४ ॥ अवग्रहेहावायधारणाः
॥ १५ ॥ बहुबहुविधक्षिप्राऽनिःसृताऽनुक्त-
ध्रुवाणां सेतराणाम् ॥ १६ ॥ अर्थस्य ॥१७॥
व्यञ्जनस्यावग्रहः ॥ १८ ॥ न चक्षुरनिन्द्रि-
याभ्याम् ॥ १९ ॥ श्रुतं मतिपूर्वं द्व्यनेकद्वा-
दशभेदम् ॥ २० ॥ भवप्रत्ययोऽवधिर्देवना-
रकाणाम् ॥ २१ ॥ क्षयोपशमनिमित्तः षड्-
विकल्पः शेषाणाम् ॥ २२ ॥ ऋजुविपुल-
मती मनःपर्ययः ॥ २३ ॥ विशुद्ध्यप्रति-
पाताभ्यां तद्विशेषः ॥ २४ ॥ विशुद्धिक्षेत्र-
स्वामिविषयेभ्योऽवधिमनःपर्यययोः ॥ २५ ॥
मतिश्रुतयोर्निबन्धो द्रव्येष्वसर्वपर्यायेषु २६

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

रूपिष्ववधेः ॥ २७ ॥ तदनन्तभागे मनःपर्ययस्य ॥ २८ ॥ सर्वद्रव्यपर्यायेषु केवलस्य ॥ २९ ॥ एकादीनि भाज्यानि युगपदेकस्मिन्नाचतुर्भ्यः ॥ ३० ॥ मतिश्रुतावधयो विपर्ययश्च ॥ ३१ ॥ सदसतोरविशेषाद्यदृच्छोपलब्धेरुन्मत्तावत् ॥ ३२ ॥ नैगमसंग्रहव्यवहारर्जुसूत्रशब्दसमभिरूढैवंभूता नयाः ॥ ३३ ॥

इति तत्वार्थाधिगमे मोक्षशास्त्रे प्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥

औपशमिकक्षायिकौ भावौ मिश्रश्च जीवस्य स्वतत्त्वमौदयिकपारिणामिकौ च ॥१॥ द्विनवाष्टादशैकविंशतित्रिभेदा यथाक्रमम् ॥ २ ॥ सम्यक्त्वचारित्रे ॥ ३ ॥ ज्ञानदर्शन-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दानलाभभोगोपभोगवीर्याणि च ॥ ४ ॥ ज्ञा-
नाज्ञानदर्शनलब्धयश्चतुस्त्रित्रिपञ्चभेदाः स-
म्यक्त्वचारित्रसंयमासंयमाश्च ॥ ५ ॥ गति-
कषायलिङ्गमिथ्यादर्शनाऽज्ञानऽसंयताऽसिद्ध-
लेश्याश्चतुश्चतुस्त्र्येकैकैकैकषड्भेदाः ॥ ६ ॥
जीवभव्याऽभव्यत्वानि च ॥७॥ उपयोगो ल-
क्षणम् ॥ ८ ॥ स द्विविधोऽष्टचतुर्भेदः ॥९॥
संसारिणो मुक्ताश्च ॥ १० ॥ समनस्काऽम-
नस्काः ॥ ॥ संसारिणस्त्रसस्थावराः ॥ १२ ॥
पृथिव्यप्तेजोवायुवनस्पतयः स्थावराः ॥१३॥
द्वीन्द्रियादयस्त्रसाः ॥ १४ ॥ पञ्चेन्द्रियाणि
॥ १५ ॥ द्विविधानि ॥ १६ ॥ निर्वृत्त्युप-
करणे द्रव्येन्द्रियम् ॥ १७ ॥ लब्ध्युपयोगौ
भावेन्द्रियम् ॥ १८ ॥ स्पर्शनरसनघ्राणच-
क्षुःश्रोत्राणि ॥ १९ ॥ स्पर्शरसगन्धवर्णश-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ब्दास्तदर्थाः ॥ २० ॥ श्रुतमनिन्द्रियस्य ॥ २१ ॥ वन-पत्यन्तानामेकम् ॥ २२ ॥ कृमिपिपीलिकाभ्रमरमनुष्यादीनामेकैकवृद्धानि ॥ २३ ॥ संज्ञिनः समनस्काः ॥ २४ ॥ विग्रहगतौ कर्मयोगः ॥ २५ ॥ अनुश्रेणि-गतिः ॥ २६ ॥ अविग्रहा जीवस्य ॥ २७ ॥ विग्रहवती च संसारिणः प्राक् चतुर्भ्यः ॥ २८ ॥ एकसमयाऽविग्रहा ॥ २९ ॥ एकं द्वौ त्रीन्वानाहारकः ॥ ३० ॥ सम्मूर्छनगर्भोपपादाज्जन्म ॥ ३१ ॥ सचित्तशीतसंवृताः सेतरा मिश्राश्चैकशस्तद्योनयः ॥३२॥ जरायुजाण्डजपोतानां गर्भः ॥ ३३ ॥ देव-नारकाणामुपपादः ॥ ३४ ॥ शेषाणां सम्मूर्छनम् ॥ ३५ ॥ औदारिकवैक्रियिकाहारक-तैजसकार्मणानि शरीराणि ॥ ३६ ॥ परं परं

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सूक्ष्मम् ॥३७। प्रदेशतोऽसंख्येयगुणं प्राक् तैजसात् ॥ ३८ ॥ अनन्तगुणे परे ॥ ३९ ॥ अप्रतीघाते ॥ ४० ॥ अनादिसम्बन्धे च ॥ ४० ॥ सर्वस्य ॥ ४२ ॥ तदादीनि भाज्यानि युगपदेकस्मिन्नाचतुर्भ्यः ॥ ४३ ॥ निरुपभोगमन्त्यम् ॥ ४४ ॥ गर्भसम्मूर्छनजमाद्यम् ॥ ४५ ॥ औपपादिकं वैक्रयिकम् ॥ ४६ ॥ लब्धिप्रत्ययं च ॥ ४७ ॥ तैजसमपि ॥ ४८ ॥ शुभं विशुद्धमव्याघाति चाहारकं प्रमत्तसंयतस्यैव ॥ ४९ ॥ नारकसम्मूर्छिनो नपुंसकानि ॥ ५० ॥ न देवाः ॥ ५१ ॥ शेषास्त्रिवेदाः ॥ ५२ ॥ औपपादिकचरमोत्तमदेहाः संख्येयवर्षायुषोऽनपवर्त्यायुषः ॥

इति तत्त्वार्थाधिगमे मोक्षशास्त्रे द्वितीयोऽध्यायः २

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

रत्नशर्कराबालुकापङ्कधूमतमोमहातमःप्रभा भूमयो घनाम्बुवाताकाशप्रतिष्ठाः सप्ताधोऽधः ॥१॥ तासु त्रिंशत्पञ्चविंशतिपञ्चदशदशत्रिपञ्चोनैकनरकशतसहस्राणि पञ्च चैव यथाक्रमम् ॥ २ ॥ नारका नित्याशुभतरलेश्या परिणामदेहवेदनाविक्रियाः ॥ ३ ॥ परस्परोदीरितदुःखाः ॥ ४ ॥ संक्लिष्टासुरोदीरितदुःखाश्च प्राक्चतुर्थ्याः ॥ ५ ॥ तेष्वेकत्रिसप्तदशसप्तदशद्वाविंशतित्रयस्त्रिंशत्सागरोपमा सत्वानां परा स्थितिः ॥ ६ ॥ जम्बूद्वीपलवणोदादयः शुभनामानो द्वीपसमुद्राः ॥ ७ ॥ द्विर्द्विर्विष्कम्भाः पूर्वपूर्वपरिक्षेपिणो वलयाकृतयः ॥ ८ ॥ तन्मध्ये मेरुनाभिर्वृत्तो योजनशतसहस्रविष्कम्भो जम्बूद्वीपः ॥ ९ ॥ भरत-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

हैमवतहरिविदेहरम्यकहैरण्यवतैरावतवर्षाः क्षेत्राणि ॥ १० ॥ तद्विभाजिनः पूर्वापरायता हिमवन्महाहिमवन्निषधनीलरुक्मिशिखरिणो वर्षधरपर्वताः ॥ ११ ॥ हेमार्जुनतपनीयवैडूर्यरजतहेममयाः ॥ १२ ॥ मणिविचित्रपार्श्वा उपरि मूले च तुल्यविस्ताराः ॥ १३ ॥ पद्ममहापद्मतिगिञ्छकेसरिमहापुण्डरीकपुण्डरीका ह्रदास्तेषामुपरि ॥ १४ ॥ प्रथमो योजनसहस्रायामस्तदर्द्धविष्कम्भो ह्रदः ॥ १५ ॥ दशयोजनावगाहः ॥ १६ ॥ तन्मध्ये योजनं पुष्करम् ॥ १७ ॥ तद्द्विगुणद्विगुणा ह्रदाः पुष्कराणि च ॥ १८ ॥ तन्निवासिन्यो देव्यः श्रीह्रीधृतिकीर्तिबुद्धिलक्ष्म्यः पल्योपमस्थितयःससामानिकपारिषत्काः ॥ १९ ॥ गङ्गासिन्धुरोहिद्रोहितास्याह-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

रिद्धरिकान्तासीतासीतोदानारीनरकान्तासुव-
र्णरूप्यकूलारक्तारक्तोदाः सरितस्तन्मध्यगाः
॥ २० ॥ द्वयोर्द्वयोः पूर्वाः पूर्वगाः ॥ २१ ॥
शेषास्त्वपरगाः । २२ ॥ चतुर्दशनदीसहस्र-
परिवृत्ता गङ्गासिन्ध्वादयो नद्यः ॥ २३ ॥
भरतः षड्विंशतिपञ्चयोजनशतविस्तारः
षट्चैकोनविंशतिभागा योजनस्य ॥ २४ ॥
तद्द्विगुणद्विगुणविस्तारा वर्षधरवर्षा विदेहा-
न्ताः ॥ २५ ॥ उत्तरा दक्षिणतुल्याः ॥२६॥
भरतैरावतयोर्वृद्धिह्रासौ षट्समयाभ्यामुत्स-
र्पिण्यवसर्पिणीभ्याम् ॥ २७ ॥ ताभ्यामप-
रा भूमयोऽवस्थिताः ॥ २८ ॥ एकद्वित्रिप-
ल्योपमस्थितयो हैमवतकहारिवर्षकदैवकुरु-
वकाः ॥ २९ ॥ तथोत्तराः ॥ ३० ॥ विदेहे-
षु सङ्ख्येयकालाः ॥ ३१ ॥ भरतस्य विष्क-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

म्भो जम्बूद्वीपस्य नवतिशतभागः ॥ ३२ ॥ द्विर्धातकीखण्डे ॥ ३३ ॥ पुष्करार्द्धे च ॥३४॥ प्राङ्मानुषोत्तरान्मनुष्याः ॥ ३५ ॥ आर्य्या-म्लेच्छाश्च ॥ ३६ ॥ भरतैरावतविदेहाः क-र्मभूमयोऽन्यत्र देवकुरूत्तरकुरुभ्यः ॥ ३७ ॥ नृस्थिती परावरे त्रिपल्योपमान्तर्मुहूर्ते ॥ ३८ ॥ तिर्य्यग्योनिजानां च ॥ ३९ ॥

इति तत्वार्थाधिगमे मोक्षशास्त्रे तृतीयोऽध्यायः ३

देवाश्चतुर्णिकायाः ॥ १ ॥ आदितस्त्रिषु-पीतान्तलेश्याः ॥ २ ॥ दशाष्टपञ्चद्वादश-विकल्पाः कल्पोपपन्नपर्य्यन्ताः ॥ ३ ॥ इन्द्र-सामानिकत्रायस्त्रिंशत्पारिषदात्मरक्षलोकपा-लानीकप्रकीर्णकाभियोग्यकिल्बिषिकाश्चैकशः ॥ ४ ॥ त्रयस्त्रिंशल्लोकपालवर्ज्या व्यन्तरज्यो-तिष्काः ॥ ५ ॥ पूर्वयोर्द्वीन्द्राः ॥ ६ ॥ काय-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रवीचारा आऐशानात् ॥ ७ ॥ शेषाः स्पर्शरूपशब्दमनःप्रवीचाराः ॥ ८ ॥ परेऽप्रवीचाराः ॥९॥ भवनवासिनोऽसुरनागविद्युत्सुपर्णाग्निवातस्तनितोदधिद्वीपदिक्कुमाराः॥१०॥ व्यन्तराः किन्नरकिम्पुरुषमहोरगगन्धर्वयक्षराक्षसभूतपिशाचाः ॥ ११ ॥ ज्योतिष्काः सूर्य्याचन्द्रमसौ ग्रहनक्षत्रप्रकीर्णकतारकाश्च ॥ १२ ॥ मेरुप्रदक्षिणा नित्यगतयो नृलोके ॥ १३ ॥ तत्कृतः कालविभागः ॥ १४ ॥ बहिरवस्थिताः ॥ १५ ॥ वैमानिकाः ॥१६॥ कल्पोपपन्नाः कल्पातीताश्च ॥ १७ ॥ उपर्युपरि ॥ १८ ॥ सौधर्म्मैशानसानत्कुमारमाहेन्द्रब्रह्मब्रह्मोत्तरलान्तवकापिष्टशुक्रमहाशुक्रशतारसहस्रारेष्वानतप्राणतयोरारणाच्युतयोर्नवसु ग्रैवेयकेषु विजयवैजयन्तजयन्तापरा-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जितेषु सर्वार्थसिद्धौ च ॥ १९ ॥ स्थितिप्र-
भावसुखद्युतिलेश्याविशुद्धीन्द्रियावधिविष-
यतोऽधिकाः ॥ २० ॥ गतिशरीरपरिग्रहाभि-
मानतो हीनाः ॥ २१ ॥ पीतपद्मशुक्ललेश्या
द्वित्रिशेषेषु ॥ २२ ॥ प्राग्ग्रैवेयकेभ्यः कल्पाः
॥ २३ ॥ ब्रह्मलोकालया लौकान्तिकाः ॥२४॥
सारस्वतादित्यवह्न्यरुणगर्दतोयतुषिताव्याबा
धारिष्टाश्च ॥ २५ ॥ विजयादिषु द्विचरमाः
॥ २६ ॥ औपपादिकमनुष्येभ्यः शेषास्ति-
र्यग्योनयः ॥ २७ ॥ स्थितिरसुरनागसुपर्णद्वी-
पशेषाणां सागरोपमत्रिपल्योपमार्द्धहीनमिताः
॥ २८ ॥ सौधर्मैशानयोः सागरोपमे अधिके
॥ २९ ॥ सानत्कुमारमाहेन्द्रयोः सप्त ॥३०॥
त्रिसप्तनवैकादशत्रयोदशपञ्चदशभिरधिकानि
तु ॥ ३१ ॥ आरणाच्युतादूर्ध्वमेकैकेन नव-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सु ग्रैवेयकेषु विजयादिषु सर्वार्थसिद्धौ च ॥ ३२ ॥ अपरा पल्योपममधिकम् ॥ ३३ ॥ परतःपरतः पूर्वापूर्वानन्तराः ॥ ३४ ॥ नारकाणां च द्वितीयादिषु ॥ ३५ ॥ दशवर्षसहस्राणि प्रथमायाम् ॥ ३६ ॥ भवनेषु च ॥ ३७ ॥ व्यन्तराणां च ॥ ३८ ॥ परा पल्योपममधिकं ॥ ३९ ॥ ज्योतिष्काणां च ॥ ४० ॥ तदष्टभागोऽपरा ॥ ४१ ॥ लौकान्तिकानामष्टौ सागरोपमानि सर्वेषाम् ॥ ४२ ॥

इति तत्वार्थाधिगमे मोक्षशास्त्रे चतुर्थोऽध्यायः ४

अजीवकाया धर्म्माधर्म्माकाशपुद्गलाः ॥ १ ॥ द्रव्याणि ॥ २ ॥ जीवाश्च ॥ ३ ॥ नित्यावस्थितान्यरूपाणि ॥ ४ ॥ रूपिणः पुद्गलाः ॥ ५ ॥ आआकाशादेकद्रव्याणि ॥ ६ ॥ नि-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ष्क्रियाणि च ॥ ७ ॥ असङ्ख्येयाः प्रदेशाः धर्म्माधर्म्मैकजीवानाम् ॥ ८ ॥ आकाशस्यानन्ताः ॥ ९ ॥ सङ्ख्येयासङ्ख्येयाश्च पुद्गलानाम् ॥ १० ॥ नाणोः ॥ ११ ॥ लोकाकाशेऽवगाहः ॥ १२ ॥ धर्म्माध र्म्मयोः कृत्स्ने॥ १३ ॥ एकप्रदेशादिषु भाज्यः पुद्गलानाम् ॥ १३ ॥ असङ्ख्येयभागादिषु जीवानाम् ॥ १५ ॥ प्रदेशसंहारविसर्प्पाभ्यां प्रदीपवत् ॥ १६ ॥ गतिस्थित्युपग्रहौ धर्म्माधर्म्मयोरुपकारः ।१७॥ आकाशस्यावगाहः ॥ १८ ॥ शरीरवाङ्मनःप्राणापानाः पुद्गलानाम् ॥ १९ ॥ सुखदुःखजीवितमरणोपग्रहाश्च ॥ २० ॥ परस्परोपग्रहो जीवानाम् ॥ २१ ॥ वर्तनापरिणामाक्रियापरत्वापरत्वे च कालस्य ॥ २२ ॥ स्पर्शरसगन्धवर्णवन्तः पुद्गलाः ॥ २३ ॥ शब्द-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

बन्धसौक्ष्म्यस्थौल्यसंस्थानभेदतमश्छायाऽ तपोद्योतवन्तश्च ॥ २४ ॥ अणवस्कन्धाश्च ॥ २५ ॥ भेदसङ्घातेभ्य उत्पद्यन्ते ॥ २६ ॥ भेदादणुः ॥ २७ ॥ भेदसङ्घाताभ्यां चाक्षुषः ॥ २८ ॥ सद्द्रव्यलक्षणम् ॥ २९ ॥ उत्पादव्ययध्रौव्ययुक्तं सत् ॥ ३० ॥ तद्भावाव्ययं नित्यम् ॥ ३१ ॥ अर्पितानर्पितसिद्धेः ॥ ३२ ॥ स्निग्धरूक्षत्वाद्बन्धः ॥ ३३ ॥ न जघन्यगुणानाम् ॥ ३४ ॥ गुणसाम्ये सदृशानाम् ॥ ३५ ॥ द्व्यधिकादिगुणानां तु ॥ ३६ ॥ बन्धेऽधिकौ पारिणामिकौ च ॥३७॥ गुणपर्य्ययवद्द्रव्यम् ॥ ३८ ॥ कालश्च ॥३९॥ सोऽनन्तसमयः ॥ ४० ॥ द्रव्याश्रया निर्गुणा गुणाः ॥ ४१ ॥ तद्भावः परिणामः ॥ ४२ ॥

इति तत्त्वार्थाधिगमे मोक्षशास्त्रे पञ्चमोऽध्यायः ५

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कायवाङ्मनःकर्म्मयोगः ॥ १ ॥ स आस्रवः ॥ २ ॥ शुभः पुण्यस्याशुभः पापस्य ॥ ३ ॥ सकषायाकषाययोः साम्परायिकेर्यापथयोः ॥ ४ ॥ इन्द्रियकषायाव्रतक्रियाः पञ्चचतुःपञ्चपञ्चविंशतिसंख्याः पूर्वस्य भेदाः ॥ ५ ॥ तीव्रमन्दज्ञाताज्ञातभावाधिकरणवीर्यविशेषेभ्यस्तद्विशेषः ॥ ६ ॥ अधिकरणं जीवाजीवाः ॥ ७ ॥ आद्यं संरम्भसमारम्भारम्भयोगकृतकारितानुमतकषायविशेषैस्त्रिस्त्रिस्त्रिश्चतुश्चैकशः ॥ ८ ॥ निर्वर्तनानिक्षेपसंयोगनिसर्गा द्विचतुर्द्वित्रिभेदाः परम् ॥ ९ ॥ तत्प्रदोषनिह्नवमात्सर्यान्तरायासादनोपघाता ज्ञानदर्शनावरणयोः ॥ १० ॥ दुःखशोकतापाक्रन्दनवधपरिदेवनान्यात्मपरोभयस्थानान्यसद्वेद्यस्य ॥ ११ ॥ भूतव्रत्य-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नुकम्पादानसरागसंयमादियोगः क्षान्तिः शौ-
चमिति सद्वेद्यस्य ॥ १२ ॥ केवलिश्रुतस-
ङ्घधर्मदेवावर्णवादो दर्शनमोहस्य ॥ १३ ॥
कषायोदयात्तीव्रपरिणामश्चारित्रमोहस्य॥१४॥
बह्वारम्भपरिग्रहत्वं नारकस्यायुषः ॥ १५ ॥
माया तैर्यग्योनस्य ॥ १६ ॥ अल्पारम्भपरि-
ग्रहत्वं मानुषस्य ॥ १७ ॥ स्वभावमार्दवं च
॥ १७ ॥ निःशीलव्रतित्वं च सर्वेषाम् ॥१९॥
सरागसंयमसंयमासंयमाकामनिर्ज्जराबालत-
पांसि दैवस्य ॥ २० ॥ सम्यक्त्वं च ॥ २१॥
योगवक्रताविसंवादनं चाशुभस्य नाम्नः
॥ २२ ॥ तद्विपरीतं शुभस्य ॥ २३ ॥ द-
र्शनविशुद्धिर्विनयसम्पन्नता शीलव्रतेष्वनती-
चारोऽभीक्ष्णज्ञानोपयोगसंवेगौ शक्तितस्त्या-
गतपसी साधुसमाधिर्वैयावृत्त्यकरणमर्हदा-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

चार्यबहुश्रुतप्रवचनभक्तिरावश्यकापरिहाणि-र्मार्गप्रभावना प्रवचनवत्सलत्वमिति तीर्थकरत्वस्य ॥ २४ ॥ परात्मनिन्दाप्रशंसे सदसद्गुणोच्छादनोद्भावने च नीचैर्गोत्रस्य ॥२५॥ तद्विपर्ययौ नीचैर्वृत्त्यनुत्सेकौ चोत्तरस्य ॥ २६ ॥ विघ्नकरणमन्तरायस्य ॥२७॥

इति तत्वार्थाधिगमे मोक्षशास्त्रे षष्ठोऽध्यायः ६

हिंसानृतस्तेयाब्रह्मपरिग्रहेभ्यो विरतिर्व्रतम् ॥ १ ॥ देशसर्वतोऽणुमहती ॥ २ ॥ तत्स्थैर्यार्थं भावनाः पञ्च पञ्च ॥ ३ ॥ वाङ्मनोगुप्तीर्यादाननिक्षेपणसमित्यालोकितपानभोजनानि पञ्च ॥ ४ ॥ क्रोधलोभभीरुत्वहास्यप्रत्याख्यानान्यनुवीचीभाषणं च पञ्च ॥ ५ ॥ शून्यागारविमोचितावासपरोपरोधा-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

करणभैक्ष्यशुद्धिसधर्म्माविसंवादाः पञ्च॥६॥
स्त्रीरागकथाश्रवणतन्मनोहराङ्गनिरीक्षणपूर्वर-
तानुस्मरणवृष्येष्टरसस्वशरीरसंस्कारत्यागाः
पञ्च ॥ ७ ॥ मनोज्ञामनोज्ञेन्द्रियविषयराग-
द्वेषवर्ज्जनानि पञ्च ॥ ८ ॥ हिंसादिष्विहामु-
त्रापायावद्यदर्शनं ॥ ९ ॥ दुःखमेव वा ॥१०॥
मैत्रीप्रमोदकारुण्यमाध्यस्थानि च सत्वगु-
णाधिकक्लिश्यमानाविनयेषु ॥ ११ ॥ जग-
त्कायस्वभावौ वा संवेगवैराग्यार्थम् ॥ १२ ॥
प्रमत्तयोगात्प्राणव्यपरोपणं हिंसा ॥ १३ ॥
असदभिधानमनृतम् ॥ १४ ॥ अदत्तादानं
स्तेयम् ॥ १५ ॥ मैथुनमब्रह्म ॥ १६ ॥ मू-
र्च्छा परिग्रहः ॥१७॥ निःशल्यो वृती॥ १८॥
अगार्यनगारश्च ॥ १९ ॥ अणुव्रतोऽगारी
॥ २० ॥ दिग्देशानर्थदण्डविरतिसामायिक-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रोषधोपवासोपभोगपरिभोगपरिमाणातिथिसं-
विभागव्रतसम्पन्नश्च २१ मारणान्तिकीं सल्ले-
खनां जोषिता ॥ २२ ॥ शङ्काकाङ्क्षाविचि-
कित्सान्यदृष्टिप्रशंसासंस्तवाः सम्यग्दृष्टेरती-
चाराः ॥ २३ ॥ व्रतशीलेषु पञ्च पञ्च य-
थाक्रमम् ॥ २४ ॥ बन्धवधच्छेदातिभारारो-
पणान्नपाननिरोधाः ॥ २५ ॥ मिथ्योपदेश-
रहोभ्याख्यानकूटलेखक्रियान्यासापहारसा-
कारमन्त्रभेदाः ॥ २६ ॥ स्तेनप्रयोगतदाहृ-
तादानविरुद्धराज्यातिक्रमहीनाधिकमानोन्मा
नप्रतिरूपकव्यवहाराः ॥ २७ ॥ परविवाह-
करणेत्वरिकापरिगृहीतापरिगृहीतागमनानङ्ग-
क्रीडाकामतीव्राभिनिवेशाः ॥ २८ ॥ क्षेत्र-
वास्तुहिरण्यसुवर्णधनधान्यदासीदासकुप्य-
प्रमाणातिक्रमाः ॥ २९ ॥ ऊर्ध्वाधस्तिर्यग्व्य-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तिक्रमक्षेत्रवृद्धिस्मृत्यन्तराधानानि ॥ ३० ॥
आनयनप्रेष्यप्रयोगशब्दरूपानुपातपुद्गलक्षे-
पाः ॥ ३१ ॥ कन्दर्पकौत्कुच्यमौखर्यासमी-
क्ष्याधिकरणोपभोगपरिभोगानर्थक्यानि ॥३२॥
योगदुःप्रणिधानानादरस्मृत्यनुपस्थानानि
॥ ३३ ॥ अप्रत्यवेक्षिताप्रमार्जितोत्सर्गादान-
संस्तरोपक्रमणानादरस्मृत्यनुपस्थानानि ३४
सचित्तसम्बन्धसम्मिश्राभिषवदुःपक्वाहाराः
॥३५॥ सचित्तनिक्षेपापिधानपरव्यपदेशमा-
त्सर्यकालातिक्रमाः ॥ ३६ ॥ जीवितमरणा-
शंसामित्रानुरागसुखानुबन्धनिदानानि ॥३७॥
अनुग्रहार्थं स्वस्यातिसर्गो दानम् ॥ ३८ ॥
विधिद्रव्यदातृपात्रविशेषात्तद्विशेषः ॥ ३९ ॥

इति तत्त्वार्थाधिगमे मोक्षशास्त्रे सप्तमोऽध्यायः ७

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मिथ्यादर्शनाविरतिप्रमादकषाययोगा बन्धहेतवः ॥ १ ॥ सकषायत्वाज्जीवः कर्म्मणो योग्यान्पुद्गलानादत्ते स बन्धः ॥ २ ॥ प्रकृतिस्थित्यनुभागप्रदेशास्तद्विधयः ॥ ३ ॥ आद्यो ज्ञानदर्शनावरणवेदनीयमोहनीयायुर्नामगोत्रान्तरायाः ॥ ४ ॥ पञ्चनवद्व्यष्टाविंशतिचतुर्द्विचत्वारिंशद्विपञ्चभेदा यथाक्रमम् ॥ ५ ॥ मतिश्रुतावधिमनःपर्य्ययकेवलानां ॥ ६ ॥ चक्षुरचक्षुरवधिकेवलानां निद्रानिद्रानिद्राप्रचलाप्रचलाप्रचलास्त्यानगृद्धयश्च ॥७॥ सदसद्वेद्ये ॥ ८ ॥ दर्शनचारित्रमोहनीयाकषायकषायवेदनीयाख्यास्त्रिद्विनवषोडसभेदाःसम्यक्त्वमिथ्यात्वतदुभयान्यकषायकषायौ हास्यरत्यरतिशोकभयजुगुप्सास्त्रीपुन्नपुंसकवेदाः अनन्तानुबन्ध्यप्रत्याख्यानप्रत्याख्या-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नसञ्ज्वलनविकल्पाश्चैकशः क्रोधमानमाया-
लोभाः ॥ ९ ॥ नारकतैर्यग्योनमानुषदैवानि
॥ १० ॥ गतिजातिशरीराङ्गोपाङ्गनिर्माणब-
न्धनसङ्घातसंस्थानसंहननस्पर्शरसगन्धवर्णा
नुपूर्व्यगुरुलघूपघातपरघातातपोद्योतोच्छ्वा-
सविहायोगतयः प्रत्येकशरीरत्रसशुभगसुस्व.
रशुभसूक्ष्मपर्याप्तिस्थिरादेययशःकीर्तिसेतरा.
णि तीर्थकरत्वं च ॥ ११ ॥ उच्चैर्नीचैश्च
॥ १२ ॥ दानलाभभोगोपभोगवीर्याणाम्
॥ १३ ॥ आदितस्तिसृणामन्तरायस्य च
त्रिंशत्सागरोपमकोटीकोट्यः परा स्थितिः
॥ १४ ॥ सप्ततिर्मोहनीयस्य ॥ १५ ॥ विंश-
तिर्नामगोत्रयोः ॥ १६ ॥ त्रयस्त्रिंशत्सागरो-
पमाण्यायुषः ॥ १७ ॥ अपरा द्वादश मुहू-
र्ता वेदनीयस्य ॥ १८ ॥ नामगोत्रयोरष्टौ

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

॥ १९ ॥ शेषाणामन्तर्मुहूर्ता: ॥ २० ॥ विपाकोऽनुभवः ॥ २१ ॥ स यथानाम ॥२२॥ ततश्च निर्जरा ॥ २३ ॥ नामप्रत्ययाः सर्वतो योगविशेषात्सूक्ष्मैकक्षेत्रावगाहस्थिताः सर्वात्मप्रदेशेष्वनन्तानन्तप्रदेशाः ॥ २४ ॥ सद्वेद्यः शुभायुर्नामगोत्राणि पुण्यम् ॥ २५ ॥ अतोऽन्यत्पापम् ॥ २६ ॥

इति तत्वार्थाधिगमे मोक्षशास्त्रेऽष्टमोऽध्यायः ॥ ॥८॥

आस्रवनिरोधः संवरः ॥ १ ॥ स गुप्तिसमितिधर्मानुप्रेक्षापरीषहजयचारित्रैः ॥ २ ॥ तपसा निर्ज्जरा च ॥ ३ ॥ सम्यग्योगनिग्रहो गुप्तिः ॥ ४ ॥ ईर्य्याभाषैषणादाननिक्षेपोत्सर्गाः समितयः ॥ ५ ॥ उत्तमक्षमामार्दवार्जवसत्यशौचसंयमतपस्त्यागाकिञ्चन्य

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ब्रह्मचर्य्याणि धर्म्मः ॥ ६ ॥ अनित्याशरण-संसारैकत्वान्यत्वाशुच्यास्रवसंवरनिर्ज्जरालोकबोधिदुर्ल्लभधर्म्मस्वाख्याततत्वानुचिन्तनमनुप्रेक्षाः ७ मार्गाच्यवनानिर्ज्जरार्थं परिषोढव्याः परीषहाः ॥८॥ क्षुत्पिपासाशीतोष्णदंशमशकनाग्न्यारतिस्त्रीचर्य्यानिषद्याशय्याक्रोशवधयाञ्चालाभरोगतृणस्पर्शमलसत्कारपुरस्कारप्रज्ञाज्ञानादर्शनानि ॥ ९ ॥ सूक्ष्मसाम्परायछद्मस्थवीतरागयोश्चतुर्दश ॥ १० ॥ एकादश जिने ॥ ११ ॥ बादरसाम्पराये सर्वे ॥ १२ ॥ ज्ञानावरणे प्रज्ञाज्ञाने ॥ १३ ॥ दर्शनमोहान्तराययोरदर्शनालाभौ ॥ १४ ॥ चारित्रमोहे नाग्न्यारतिस्त्रीनिषद्याक्रोशयाञ्चासत्कारपुरस्कराः ॥ १५ ॥ वेदनीये शेषाः ॥ १६ ॥ एकादयो भाज्या युगपदेक-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

स्मिन्नेकोनविंशतिः ॥ १७ ॥ सामायिकच्छेदोपस्थापनापरिहारविशुद्धिसूक्ष्मसाम्परायथाख्यातमिति चारित्रम् ॥ १८ ॥ अनशनावमौदर्य्यवृत्तिपरिसंख्यानरसपरित्यागविविक्तशय्यासनकायक्लेशा बाह्यं तपः ॥१९॥ प्रायश्चित्तविनयवैयावृत्त्यस्वाध्यायव्युत्सर्गध्यानान्युत्तरम् ॥ २० ॥ नवचतुर्दशपञ्चद्विभेदा यथाक्रमं प्राग्ध्यानात् ॥ २१ ॥ आलोचनाप्रतिक्रमणतदुभयविवेकव्युत्सर्गतपश्छेदपरिहारोपस्थापनाः ॥ २२ ॥ ज्ञानदर्शनचारित्रोपचाराः ॥ २३ ॥ आचार्योपाध्यायतपस्विशैक्ष्यग्लानगणकुलसङ्घसाधुमनोज्ञानाम् ॥ २४ ॥ वाचनापृच्छनानुप्रेक्षाम्नायधर्मोपदेशाः ॥ २५ ॥ बाह्याभ्यन्तरोपध्योः ॥२६॥ उत्तमसंहननस्यैकाग्रचिन्तानिरोधो ध्यानमा-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

न्तर्मुहूर्तात् ॥ २७ ॥ आर्तरौद्रधर्म्यशुक्लानि ॥ २८ ॥ परे मोक्षहेतू ॥२९॥ आर्तममनोज्ञस्य सम्प्रयोगे तद्विप्रयोगाय स्मृतिसमन्वाहारः ॥ ३० ॥ विपरीतं मनोज्ञस्य ॥ ३१ ॥ वेदनायाश्च ॥ ३२ ॥ निदानं च ॥ ३३ ॥ तदविरतदेशविरतप्रमत्तसंयतानाम् । ३४ ॥ हिंसानृतस्तेयविषयसंरक्षणेभ्यो रौद्रमविरतदेशविरतयोः ॥ ३५ ॥ आज्ञापायविपाकसंस्थानविचयाय धर्म्यम् ॥३६ ॥ शुक्ले चाद्ये पूर्वविदः ॥ ३७ ॥ परे केवलिनः ॥ ३८ ॥ पृथक्त्वैकत्ववितर्कसूक्ष्मक्रियाप्रतिपातिव्युपरतक्रियानिवर्तीनि ॥ ३९ ॥ त्र्येकयोगकाययोगायोगानाम् ॥ ४० ॥ एकाश्रये सवितर्कवीचारे पूर्वे ॥ ४१ ॥ अवीचारं द्वितीयम् ॥ ४२ ॥ वितर्कः श्रुतम् ॥ ४३ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वीचारोऽर्थव्यञ्जनयोगसंक्रान्तिः ४४ सम्यग्दृष्टिश्रावकविरतानन्तावियोजकदर्शनमोहक्षपकोपशमकोपशान्तमोहक्षपकक्षीणमोहजिनाः क्रमशोऽसंख्येयगुणा निर्ज्जराः ॥४५॥ पुलाकवकुशकुशीलनिर्ग्रन्थस्नातका निर्ग्रन्थाः ॥ ४६ ॥ संयमश्रुतप्रतिसेवनातीर्थलिङ्गलेश्योपपादस्थानविकल्पतः साध्याः ॥ ४७ ॥

इति तत्त्वार्थाधिगमे मोक्षशास्त्रे नवमोऽध्यायः ९

मोहक्षयाज्ज्ञानदर्शनावरणान्तरायक्षयाच्च केवलम् ॥ १ ॥ बन्धहेत्वभावनिर्जराभ्यां कृत्स्नकर्म्मविप्रमोक्षो मोक्षः ॥ २ ॥ औपशमिकादिभव्यत्वानां च ॥ ३ ॥ अन्यत्र केवलसम्यक्त्वज्ञानदर्शनसिद्धत्वेभ्यः ॥ ४ ॥ तदनन्तरमूर्द्ध्वं गच्छन्त्यालोकान्तात् ॥५॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पूर्वप्रयोगादसङ्गत्वाद्बन्धच्छेदात्तथागतिपरिणामाच्च ॥ ६ ॥ आविद्धकुलालचक्रवद्व्यपगतलेपालाबुवदेरण्डबीजवदग्निशिखावच्च ॥ ७ धर्मास्तिकायाभावात् ॥ ८ ॥ क्षेत्रकालगतिलिङ्गतीर्थचारित्रप्रत्येकबुद्धबोधितज्ञानावगाहनान्तरसंख्याल्पबहुत्वतःसाध्याः ॥९॥

अक्षरमात्रपदस्वरहीनं व्यञ्जनसन्धिविवर्जितरेफम् । साधुभिरत्र मम क्षन्तव्यं को न विमुह्यति शास्त्रसमुद्रे १

दशाध्याये परिच्छिन्ने तत्वार्थे पठिते सति । फलं स्यादुपवासस्य भाषितं मुनिपुङ्गवैः ॥ २ ॥ तत्त्वार्थसूत्रकर्तारं गृध्रपिच्छोपलक्षितम् । वन्दे गणीन्द्रसंयातमुमास्वामिमुनीश्वरम् ॥ ३ ॥

॥ इति तत्त्वार्थसूत्रं समाप्तम् ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्रीस्वामिसमन्तभद्राचार्य्यविरचितं

बृहत्स्वयम्भूस्तोत्रम्

स्वयम्भुवा भूतहितेन भूतले समञ्जस-ज्ञानविभूतिचक्षुषा । विराजितं येन विधुन्वता तमः क्षपाकरेणेव गुणोत्करैः करैः ॥ १ ॥ प्रजापतिर्यः प्रथमं जिजीविषुः शशास कृष्यादिषु कर्मसु प्रजाः । प्रबुद्धतत्त्वः पुनरद्भुतोदयो ममत्वतो निर्विविदे विदांवरः ॥ २ ॥ विहाय यः सागरवारिवाससं वधूमिवेमां वसुधावधूं सतीम् । मुमुक्षुरिक्ष्वाकुकुलादिरात्मवान् प्रभुःप्रवव्राज सहिष्णुरच्युतः ॥ ३ ॥ स्वदोषमूलं स्वसमा-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

धितेजसा निनाय यो निर्दयभस्मसात्क्रियाम्। जगाद तत्वं जगतेऽर्थिनेऽञ्जसा बभूव च ब्रह्मपदामृतेश्वरः ॥ ४ । स विश्वचक्षुर्वृषभोऽर्चितः सतां समग्रविद्यात्मवपुर्निरञ्जनः । पुनातु चेतो मम नाभिनन्दनो जिनो जितक्षुल्लकवादिशासनः ॥ ५ ॥

इत्यादिजिनस्तोत्रम्

यस्य प्रभावान्त्रिदिवच्युतस्य क्रीडास्वपि क्षिबमुखारविन्दः । अजेयशक्तिर्भुवि बन्धुवर्गश्चकार नामाजित इत्यवन्ध्यम् ॥ ६ ॥ अद्यापि यस्याजितशासनस्य सतां प्रणेतुः प्रतिमङ्गलार्थम् । प्रगृह्यते नाम परं पवित्रं स्वसिद्धिकामेन जनेन लोके ॥ ७ ॥ यः प्रादुरासीत्प्रभुशक्तिभूम्ना भव्याशयालीनकलङ्कशान्त्यै । महामुनिर्मुक्तघनोपदेहो यथार-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

विन्दाभ्युदयाय भास्वान् ॥ ८ ॥ येन प्रणीतं पृथुधर्मतीर्थं ज्येष्ठं जनाः प्राप्य जयन्ति दुःखम् । गाङ्गं ह्रदं चन्दनपङ्कशीतं गजप्रवेका इव घर्मतप्ताः ॥ ९ ॥ स ब्रह्मनिष्ठः सममित्रशत्रुर्विद्याविनिर्वान्तकषायदोषः । लब्धात्मलक्ष्मीरजितोऽजितात्मा जिनःश्रियं मे भगवान् विधत्ताम् ॥ १० ॥

इत्यजितजिनस्तोत्रम्

त्वं शम्भवः संभवतर्षरोगैः संतप्यमानस्य जनस्य लोके । आसीरिहाकस्मिक एव वैद्यो वैद्यो यथा नाथ रुजां प्रशान्त्यै ॥ ११ ॥ अनित्यमत्राणमहंक्रियाभिः प्रसक्तमिथ्याध्यवसायदोषम् । इदं जगज्जन्मजरान्तकार्त्तं निरञ्जनां शान्तिमजीगमस्त्वम् ॥ १२ ॥ शतह्रदोन्मेषचलं हि सौख्यं तृष्णा-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मयाप्यायनमात्रहेतुः । तृणाभिवृद्धिश्च तप-
त्यजस्त्रं तापस्तदायासयतीत्यवादीः ॥ १३ ॥
बंधश्च मोक्षश्च तयोश्च हेतुर्बद्धश्च मुक्तश्च
फलं च मुक्तेः । स्याद्वादिनो नाथ तवैव
युक्तं नैकान्तदृष्टेस्त्वमतोऽसि शास्ता ॥१४॥
शक्रोऽप्यशक्तस्तव पुण्यकीर्त्तेः स्तुत्यां प्रवृ-
त्तः किमु मादृशोऽज्ञः । तथापि भक्त्या
स्तुतपादपद्मो ममार्य देयाः शिवतातिमुच्चैः

इति शंभवजिनस्तोत्रम्

गुणाभिनन्दादभिनन्दनो भवान् दयाव-
धूं क्षान्तिसखीमशिश्रयत् । समाधितन्त्रस्तदु-
पोपपत्तये द्वयेन नैर्ग्रन्थ्यगुणेन चायुजत् ॥१६॥
अचेतने तत्कृतबन्धजेऽपि ममेदमित्याभिनि-
वेशकग्रहात् । प्रभङ्गुरे स्थावरनिश्चयेन च

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

क्षतं जगत्तत्त्वमजिग्रहद्भवान् ॥१७॥ क्षुदादि-
दुःखप्रतिकारतः स्थितिर्न चेन्द्रियार्थप्रभवा-
ल्पसौख्यतः । ततो गुणो नास्ति च देहदेहि-
नोरितीदमित्थं भगवान् व्यजिज्ञपत् ॥ १८॥
जनोऽतिलोलोऽप्यनुबन्धदोषतो भयादकार्ये-
ष्विह न प्रवर्त्तते । इहाप्यमुत्राप्यनुबन्धदो-
षवित्कथं सुखे संसजतीति चाब्रवीत् ॥१९॥
सचानुबन्धोऽस्य जनस्य तापकृत्तृषोऽभिवृ-
द्धिःसुखतो न च स्थितिः । इति प्रभो लोक-
हितं यतो मतं ततो भवानेव गतिःसतां
मतः ॥ २० ॥

इत्यभिनन्दनजिनस्तोत्रम्

अन्वर्थसंज्ञः सुमतिर्मुनिस्त्वं स्वयं मतं
येन सुयुक्तिनीतम् । यतश्च शेषेषु मतेषु
नास्ति सर्वक्रियाकारकतत्त्वसिद्धिः ॥ २१ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अनेकमेकं च तदेव तत्त्वं भेदान्वयज्ञानमिदं हि सत्यम्। मृषोपचारोऽन्यतरस्य लोपे तच्छेषलोपोऽपि ततोऽनुपाख्यम् ॥२२॥ सतः कथञ्चित्तदसत्त्वशक्तिः खे नास्ति पुष्पं तरुषु प्रसिद्धम्। सर्वस्वभावच्युतमप्रमाणं स्ववाग्विरुद्धं तवदृष्टितोऽन्यत् ॥२३॥ न सर्वथा नित्यमुदेत्यपैति न च क्रियाकारकमत्र युक्तम्। नैवासतो जन्म सतो न नाशो दीपस्तमःपुद्गलभावतोऽस्ति ॥ २४ ॥ विधिर्निषेधश्च कथंचिदिष्टौ विवक्षया मुख्यगुणव्यवस्था। इति प्रणीतिः सुमतेस्तवेयं मतिप्रवेकःस्तुवतोऽस्तु नाथ ॥ २५ ॥

इति सुमतिजिनस्तोत्रम्

पद्मप्रभः पद्मपलाशलेश्यः पद्मालयालिङ्गितचारुमूर्तिः। बभौ भवान् भव्यपयोरुहाणां पद्माकराणां

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मिव पद्मबन्धुः २६ बभार पद्मां च सरस्वतींच भवान्पुरस्तात्प्रतिमुक्तिलक्ष्म्याः। सरस्वतीमेव समग्रशोभां सर्वज्ञलक्ष्मीं ज्वलितां विमुक्तः ॥ २७ ॥ शरीररश्मिप्रसरः प्रभोस्ते बालार्करश्मिच्छविरालिलेप। नरामराकीर्णसभां प्रभावच्छैलस्य पद्माभमणेः स्वसानुम् ॥ २८ ॥ नभस्तलं पल्लवयन्निव त्वं सहस्रपत्राम्बुजगर्भचारैः। पादाम्बुजैः पातितमोहदर्पो भूमौ प्रजानां विजहर्ष भूत्यै ॥२९॥ गुणाम्बुधेर्विप्रुषमप्यजस्रं नाखण्डलस्तोतुमलं तवर्षे। प्रागेव माहक्किमु तातिभक्तिर्मां बालमालापयतीदमित्थम् ॥ ३० ॥

इति पद्मप्रभस्तोत्रम्.

स्वास्थ्यं यदात्यन्तिकमेष पुंसां स्वार्थो न भोगः परिभङ्गुरात्मा। तृषोऽनुषङ्गान्न च

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तापशान्तिरितीदमाख्यद् भगवान्सुपार्श्वः ३१

अजङ्गमं जङ्गमनेययन्त्रं यथा तथा जीवधृतं शरीरम् । बीभत्सु पूति क्षयि तापकं च स्नेहो वृथात्रेति हितं त्वमाख्यः ॥ ३२ ॥ अलंघ्यशक्तिर्भवितव्यतेयं हेतुद्वयाविष्कृतकार्यलिङ्गा । अनीश्वरो जन्तुरहंक्रियार्त्तः संहत्य कार्येष्विति साध्ववादीः ॥ ३३ ॥ बिभेति मृत्योर्न ततोऽस्ति मोक्षो नित्यं शिवं वाञ्छति नास्य लाभः । तथापि बालो भयकामवश्यो वृथा स्वयं तप्यत इत्यवादीः ३४ सर्वस्य तत्त्वस्य भवान्प्रमाता मातेव बालस्य हितानुशास्ता । गुणावलोकस्य जनस्य नेता मयापि भक्त्या परिणूयसेऽद्य ॥ ३५ ॥

इति सुपार्श्वजिनस्तोत्रम्

चन्द्रप्रभं चन्द्रमरीचिगौरं चन्द्रं द्वितीयं

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जगतीव कान्तम् । वन्देऽभिवन्द्यं महतामृषीन्द्रं जिनं जितस्वान्तकषायबन्धम् ॥ ३६ ॥ यस्याङ्गलक्ष्मीपरिवेषभिन्नं तमस्तमोरेरिव रश्मिभिन्नम् । ननाश बाह्यं बहुमानसं च ध्यानप्रदीपातिशयेन भिन्नम् ॥ ३७ ॥ स्वपक्षसौस्थित्यमदावलिप्ता वाक्सिंहनादैर्विमदा बभूवुः । प्रवादिनो यस्य मदार्द्रगण्डा गजा यथा केशरिणो निनादैः ॥ ३८ ॥ यः सर्वलोके परमेष्ठितायाः पदं बभूवाद्भुतकर्मतेजाः । अनन्तधामाक्षरविश्वचक्षुः समन्तदुःखक्षयशासनश्च ॥ ३९ ॥ स चन्द्रमा भव्यकुमुद्वतीनां विपन्नदोषाभ्रकलङ्कलेपः । व्याकोशवाङ्न्यायमयूखमालः पूयात्पवित्रो भगवान्मनो मे ॥ ४० ॥

इति चन्द्रप्रभजिनस्तोत्रम्

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

एकान्तदृष्टिप्रतिषेधि तत्वं प्रमाणसिद्धं तदतत्स्वभावम् । त्वया प्रणीतं सुविधे स्वधाम्ना नैतत्समालीढपदं त्वदन्यैः ॥ ४१ ॥ तदेव च स्यान्न तदेव च स्यात्तथा प्रतीतेस्तव तत्कथञ्चित् । नात्यन्तमन्यत्वमनन्यता च विधेर्निषेधस्य च शून्यदोषात् ॥४२॥ नित्यं तदेवेदमिति प्रतीतेर्न नित्यमन्यत्प्रतिपत्तिसिद्धेः । न तद्विरुद्धं बहिरन्तरङ्गनिमित्तनैमित्तिकयोगतस्ते ॥ ४३ ॥ अनेकमेकं च पदस्य वाच्यं वृक्षा इति प्रत्ययवत्प्रकृत्या । आकाङ्क्षिणःस्यादिति वै निपातो गुणानपेक्षे नियमेऽपवादः ॥ ४ ॥ गुणप्रधानार्थमिदं हि वाक्यं जिनस्य ते तद्द्विषतामपथ्यम् । ततोऽभिवन्द्यं जगदीश्वराणां ममापि साधोस्तव पादपद्मम् ॥ ४५ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

इति सुविधिजिनस्तोत्रम्

न शीतलाश्चन्दनचन्द्ररश्मयो न गाङ्गमम्भो न च हारयष्टयः। यथा मुनेस्तेऽनघवाक्यरश्मयः शमाम्बुगर्भाः शिशिरा विपश्चितां ॥ ४६ ॥ सुखाभिलाषानलदाहमूर्च्छितं मनो निजं ज्ञानमयामृताम्बुभिः। विदिध्यपस्त्वं विषदाहमोहितं यथा भिषग्मन्त्रगुणैः स्वविग्रहं ॥ ४७ ॥ स्वजीविते कामसुखे च तृष्णया दिवा श्रमार्त्ता निशि शेरते प्रजाः। त्वमार्य्य नक्तंदिवमप्रमत्तवानजागरेवात्मविशुद्धवर्त्मनि ॥ ४८ ॥ अपत्यवित्तोत्तरलोकतृष्णया तपस्विनः केचन कर्म कुर्वते। भवान्पुनर्जन्मजराजिहासया त्रयीं प्रवृत्तिं शमधीरवारुणत् ॥ ४९ ॥ त्वमुत्तमज्योतिरजः क्व निर्वृतः क्व ते परे बुद्धिलवोद्धवक्षताः।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ततः स्वनिःश्रेयसभावनापरैर्बुधप्रवेकैर्जिन-शीतलेड्यसे ॥ ५० ॥

इति शीतलजिनस्तोत्रम्.

श्रेयान् जिनः श्रेयसि वर्त्मनीमाः श्रेयः प्रजाः शासदजेयवाक्यः । भवांश्चकासे भुवनत्रयेऽस्मिन्नेको यथा वीतघनो विवस्वान् ॥ ५१ ॥ विधिर्विषक्तप्रतिषेधरूपः प्रमाणमत्रान्यतरत्प्रधानम् । गुणो परो मुख्यनियामहेतुर्नयः सदृष्टान्तसमर्थनस्ते ॥ ५२ ॥ विवाक्षितो मुख्य इतीष्यतेऽन्यो गुणो विवक्षो न निरात्मकस्ते । तथारिमित्रानुभयादिशक्तिर्द्वयावधिः कार्य्यकरं हि वस्तु ॥५३॥ दृष्टान्तासिद्धावुभयोर्विवादे साध्यं प्रसिद्ध्येन्न तु तादृगास्ति । यत्सर्वथैकान्तनियामदृष्टं त्वदीयदृष्टिर्विभवत्यशेषे ॥ ५४ ॥ एका-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

न्तदृष्टिप्रतिषेधसिद्धिर्न्यायेषुभिर्मोहरिपुं निरस्य। असि स्म कैवल्यविभूतिसम्राट् ततस्त्वमर्हन्नसि मे स्तवार्हः ॥ ५५ ॥

इति श्रेयान्जिनस्तोत्रम्

शिवासु पूज्योऽभ्युदयक्रियासु त्वं वासुपूज्यस्त्रिदशेन्द्रपूज्यः। मयापि पूज्योऽल्पधिया मुनीन्द्र दीपार्चिषा किं तपनो न पूज्यः ॥ ५६ ॥ न पूजयार्थस्त्वयि वीतरागे न निन्दया नाथ विवान्तवैरे। तथापि ते पुण्यगुणस्मृतिर्नः पुनातु चित्तं दुरिताञ्जनेभ्यः ॥ ५७ ॥ पूज्यं जिनं त्वार्चयतो जनस्य सावद्यलेशो बहुपुण्यराशौ ॥ दोषाय नालं कणिका विषस्य न दूषिका शीतशिवाम्बुराशौ ॥ ५८ ॥ यद्वस्तु बाह्यं गुणदोषसूतेर्निमित्तमभ्यन्तरमूलहेतोः।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अध्यात्त्वृतस्य तदङ्गभूतमभ्यन्तरं केवलम-
प्यलं ते ॥ ५९ ॥ बाह्येतरोपाधिसमग्रतेयं
कार्येषु ते द्रव्यगतः स्वभावः। नैवान्यथामो-
क्षविधिश्च पुसां तेनाभिवन्द्यस्त्वमृषिर्बुधा-
नाम् ॥ ६० ॥

इति वासुपूज्यस्तोत्रम

य एव नित्यक्षणिकादयो नया मिथोऽन-
पेक्षाः स्वपरप्रणाशिनः। त एव तत्त्वं वि-
मलस्य ते मुनेः परस्परेक्षाःस्वपरोपकारिणः
॥ ६१ ॥ यथैकशः कारकमर्थसिद्धये समी-
क्ष्य शेषं स्वसहायकारकम्। तथैव सामा-
न्यविशेषमातृका नयास्तवेष्टा गुणमुख्यक-
ल्पतः ॥ ६२ ॥ परस्परेक्षान्वयभेदलिङ्गतः
प्रसिद्धसामान्यविशेषयोस्तव। समग्रतास्ति
स्वपरावभासकं यथा प्रमाणं भुवि बुद्धिल-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

क्षणम् ॥ ६३ ॥ विशेषवाच्यस्य विशेषणं वचो यतो विशेष्यं विनियम्यते च यत्। तयोश्च सामान्यमतिप्रसज्यते विवक्षितात्स्यादितितेऽन्यवर्जनम् ॥६४॥ नयास्तव स्यात्पदसत्यलाञ्छिता रसोपविद्धा इव लोहधातवः। भवन्त्यभिप्रेतगुणा यतस्ततो भवन्तमार्याः प्रणिता हितैषिणः ॥ ६५ ॥

इति विमलजिनस्तोत्रम्

अनन्तदोषाशयविग्रहो ग्रहो विषङ्गवान्मोहमयश्चिरं हृदि। यतो जितस्तत्त्वरुचौ प्रसीदता त्वया ततोभूर्भगवाननन्तजित् ६६ कषायनाम्नां द्विषतां प्रमाथिनामशेषयन्नाम भवानशेषवित्। विशोषणं मन्मथदुर्मदामयं समाधिभैषज्यगुणैर्व्यलीनयन् ॥ ६७ ॥ परिश्रमाम्बुर्भयवीचिमालिनी त्वया स्वतृष्णा-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सरिदार्य शोषिता । असंगघर्मार्कगभस्तितेजसा परं ततो निर्वृतिधाम तावकम् ॥६८॥

सुहृत्त्वयि श्रीसुभगत्वमश्नुते द्विषंस्त्वयि प्रत्ययवत्प्रलीयते । भवानुदासीनतमस्तयोरपि प्रभो परं चित्रमिदं तवेहितम् ॥ ६९ ॥

त्वमीदृशस्तादृश इत्ययं मम प्रलापलेशोऽल्पमतेर्महामुने । अशेषमाहात्म्यमनीरयन्नपि शिवाय संस्पर्श इवामृताम्बुधेः ॥७०॥

इत्यनन्तजिनस्तोत्रम

धर्मतीर्थमनघं प्रवर्त्तयन् धर्म इत्यनुमतः सतां भवान् । कर्मकक्षमदहत्तपोऽग्निभिः शर्म शाश्वतमवाप शङ्करः ॥ ७१ ॥ देवमानवनिकायसत्तमै रेजिषे परिवृतोवृतोबुधैः तारकापरिवृतोऽतिपुष्कलो व्योमनीव शशलाञ्छनोऽमलः॥ ७२ ॥ प्रातिहार्यविभवैः

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

परिष्कृतो देहतोऽपि विरतो भवानभूत् । मोक्षमार्गमशिषन्नरामरान्नापि शासनफलैषणातुरः ॥ ७३ ॥ कायवाक्यमनसां प्रवृत्तयो नाऽभवंस्तव मुनेश्चिकीर्षया । नासमीक्ष्य भवतः प्रवृत्तयो धीर तावकमचिन्त्यमीहितम् ॥ ७४ ॥ मानुषीं प्रकृतिमभ्यतीतवान् देवतास्वपि च देवता यतः । तेन नाथ परमासि देवता श्रेयसे जिनवृष प्रसीद नः ॥ ७५ ॥

इति धर्मजिनस्तोत्रम्.

विधाय रक्षां परतः प्रजानां राजा चिरं योऽप्रतिमप्रतापः । व्यधात्पुरस्तात्स्वत एव शान्तिर्मुनिर्दयामूर्त्तिरिवाघशान्तिम् ॥ ७६ ॥ चक्रेण यः शत्रुभयंकरेण जित्वा नृपः सर्वनरेन्द्रचक्रम् । समाधिचक्रेण पुनर्जिगाय

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

महोदयो दुर्जयमोहचक्रम् ॥७७॥ राजश्रि-
या राजसु राजसिंहो रराज यो राजसुभो-
गतन्त्रः । आर्हन्त्यलक्ष्म्या पुनरात्मतन्त्रो दे-
वासुरोदारसभे रराज ॥ ७८ ॥ यस्मिन्न-
भूद्राजनि राजचक्रं मुनौ दयादीधितिधर्म-
चक्रम् । पूज्ये मुहुः प्राञ्जलि देवचक्रं ध्यानो-
न्मुखे ध्वंसि कृतान्तचक्रम् ॥ ७९ ॥ स्व-
दोषशान्त्यावहितात्मशान्तिः शान्तेर्विधाता
शरणं गतानाम् । भूयाद्भवक्लेशभयोपशा-
न्त्यै शान्तिर्जिनो मे भगवान् शरण्यः ॥८०॥

इति शांतिजिनस्तोत्रम्

कुन्थुप्रभृत्यखिलसत्त्वदयैकतानः कुन्थुर्जिनो
ज्वरजरामरणोपशान्त्यै । त्वं धर्मचक्रमिह व-
र्त्तयसि स्म भूत्यै भूत्वा पुरा क्षितिपतीश्वरच
क्रपाणिः ॥ तृष्णार्चिषः परिदहन्ति न शान्ति-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

रासामिष्टेन्द्रियार्थविभवैःपरिवृद्धिरेव। स्थित्यैव कायपरितापहरं निमित्तमित्यात्मवान्विषयसौख्यपराङ्मुखोऽभूत् ॥ ८२ ॥ बाह्यं तपः परमदुश्चरमाचरंस्त्वमाध्यात्मिकस्य तपसः परिबृंहणार्थम्। ध्यानं निरस्य कलुषद्वयमुत्तरेऽस्मिन् ध्यानद्वये ववृतिषेऽतिशयोपपन्ने ॥ ८३ ॥ हुत्वा स्वकर्मकटुकप्रकृतीश्चतस्रो रत्नत्रयातिशयतेजसि जातवीर्य्यः। विभ्राजिषे सकलवेदविधेर्विनेता व्यभ्रे यथा वियति दीप्तरुचिर्विवस्वान् ॥ ८४ ॥ यस्मान्मुनीन्द्र तव लोकपितामहाद्या विद्याविभूतिकणिकामपि नाप्नुवन्ति। तस्माद्भवन्तमजमप्रतिमेयमार्याः स्तुत्यं स्तुवन्ति सुधियः स्वहितैकतानाः ॥ ८५ ॥

इति कुन्थुजिनस्तोत्रम्

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

गुणस्तोकं सदुल्लंघ्य तद्बहुत्वकथा स्तुतिः। आनन्त्यात्ते गुणा वक्तुमशक्यास्त्वयि सा कथम् ॥ ८६ ॥ तथापि ते मुनीन्द्रस्य यतो नामापि कीर्तितम्। पुनाति पुण्यकीर्तेर्नस्ततो ब्रूयाम किञ्चन ॥ ८७ ॥ लक्ष्मीविभवसर्वस्वं मुमुक्षोश्चक्रलाञ्छनम्। साम्राज्यं सार्वभौमं ते जरत्तृणमिवाभवत् ॥ ८८ ॥ तव रूपस्य सौन्दर्यं दृष्ट्वा तृप्तिमनापिवान्। द्व्यक्षः शक्रः सहस्राक्षो बभूव बहुविस्मयः ॥ ८९ ॥ मोहरूपो रिपुः पापः कषायभटसाधनः। दृष्टिसम्पदुपेक्षास्त्रैस्त्वया धीर पराजितः ॥ ९० ॥ कन्दर्पस्योद्धरो दर्पस्त्रैलोक्यविजयार्जितः। ह्रेपयामास तं धीरे त्वयि प्रतिहतोदयः ॥ ९१ ॥ आयत्यां च तदात्वे च दुःखयोर्निर्निरुत्तरा। तृष्णा नदी

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

त्वयोत्तीर्णा विद्यानावा विविक्तया ॥ ९२ ॥
अन्तकः क्रन्दको नृणां जन्मज्वरसखा स-
दा। त्वामन्तकान्तकं प्राप्य व्यावृत्तः का-
मकारतः ॥ ९३ ॥ भूषावेषायुधत्यागि वि-
द्यादमदयापरम् । रूपमेव तवाचष्टे धीर दो-
षविनिग्रहम् ॥ ९४ ॥ समन्ततोऽङ्गभासां
ते परिवेषेण भूयसा। तमो बाह्यमपाकीर्ण-
मध्यात्मध्यानतेजसा ॥ ९५ ॥ सर्वज्ञज्यो-
तिषोद्भूतस्तावको महिमोदयः। कं न कु-
र्यात् प्रणम्रं ते सत्त्वं नाथ सचेतनम् ॥९६॥
तव वागमृतं श्रीमत्सर्वभाषास्वभावकम् ।
प्रीणयत्यमृतं यद्वत् प्राणिनो व्यापि संसदि
॥ ९७ ॥ अनेकान्तात्मदृष्टिस्ते सती शून्यो
विपर्ययः। ततः सर्वं मृषोक्तं स्यात्तदयुक्तं
स्वघाततः ॥ ९८ ॥ ये परस्खलितोन्निद्राः

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

स्वदोषेभानिमीलिनः । तपस्विनस्ते किं कुर्यु-
रपात्रं स्वन्मतश्रियः ॥ ९९ ॥ ते तं स्वघा-
तिनं दोषं शमीकर्त्तुमनीश्वराः । त्वद्द्विषः
स्वहनो बालास्तत्त्वावक्तव्यतां श्रिताः १००
सदेकनित्यवक्तव्यास्तद्विपक्षाश्च ये नयाः ।
सर्वथेति प्रदुष्यन्ति पुष्यन्ति स्यादितीहिते
॥ १०१ ॥ सर्वथा नियमत्यागी यथादृष्टम-
पेक्षकः । स्याच्छब्दस्तावके न्याये नान्येषा-
मात्मविद्विषाम् ॥ १०२ ॥ अनेकान्तोऽप्यने-
कान्तः प्रमाणनयसाधनः । अनेकान्तः प्र-
माणात्ते तदेकान्तोऽर्पितान्नयात् ॥ १०३ ॥
इति निरुपमयुक्तिशासनः प्रियहितयोगगु-
णानुशासनः । अरजिनदमतीर्थनायकस्त्व-
मिव सतां प्रतिबोधनायकः ॥ १०४ ॥ मति-
गुणविभवानुरूपतस्त्वयि वरदागमदृष्टिरूप-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तः । गुणकृशमपि किञ्चनोदितं मम भवता-
दुरिताशनोदितम् ॥ १०५ ॥

इत्यरजिनस्तोत्रम्

यस्य महर्षेः सकलपदार्थप्रत्यवबोधः सम-
जनि साक्षात् । सामरमर्त्यं जगदपि सर्वं
प्राञ्जलिभूत्वा प्रणिपतति स्म ॥ १०६ ॥ य-
स्य च मूर्तिः कनकमयीव स्वस्फुरदाभाकृ-
तपरिवेषा । वागपि तत्त्वं कथयितुकामा
स्यात्पदपूर्वा रमयति साधून् ॥१०७॥ यस्य
पुरस्ताद्विगलितमाना न प्रतितीर्थ्या भुवि
विवदन्ते । भूरपि रम्या प्रतिपदमासी-
ज्जातविकोशाम्बुजमृदुहासा ॥ १०८ ॥ य-
स्य समन्ताज्जिनशिशिरांशोः शिष्यकसाधु-
ग्रहविभवोऽभूत् । तीर्थमपि स्वं जननसमु-
द्रत्रासितसत्त्वोत्तरणपथोऽग्रम् ॥ १०९ ॥ य-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

स्य च शुक्लं परमतपोऽग्निर्ध्यानमन्तं दुरितमधाक्षीत् तं जिनसिंहं कृतकरणीयं मल्लिमशल्यं शरणमितोऽस्मि ॥ ११० ॥

इति मल्लिजिनस्तोत्रम्

अधिगतमुनिसुव्रतस्थितिर्मुनिवृषभो मुनिसुव्रतोऽनघः । मुनिपरिषदि निर्बभौ भवानुडुपरिषत्परिवीतसोमवत् ॥ १११ ॥ परिणतशिखिकण्ठरागया कृतमदनिग्रहविग्रहाभया । भवजिनतपसः प्रसूतया ग्रहपरिवेषरुचेव शोभितम् ॥ १२ ॥ शशिरुचिशुचिशुक्ललोहितं सुरभितरं विरजो निजं वपुः । तव शिवमतिविस्मयं यते यदपि च वाङ्मनसोऽयमीहितम् ॥ ११३ ॥ स्थितिजननिरोधलक्षणं चरमचरं च जगत्प्रतिक्षणम् । इति जिनसकलज्ञलाञ्छनं वचनमिदं

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वदतां वरस्य ते ॥ ११४ ॥ दुरितमलकलं-कमष्टकं निरुपमयोगबलेन निर्दहन् । अभ-वदभवसौख्यवान् भवान् भवतु ममापि भ-वोपशांतये ॥ ११५ ॥

इति मुनिसुव्रतजिनस्तोत्रम्

स्तुतिस्तोतुः साधोः कुशलपरिणामाय स तदा भवेन्मा वा स्तुत्यः फलमपि ततस्तस्य च सतः । किमेवं स्वाधीनाज्जगति सुलभे श्रायसपथे स्तुयान्नत्वा विद्वान्सततमपि पू-ज्यं नमिजिनम् ॥ ११६ ॥ त्वया धीमन् ब्रह्मप्रणिधिमनसा जन्मनिगलं समूलं नि-र्भिन्नं त्वमसि विदुषां मोक्षपदवी । त्वयि ज्ञानज्योतिर्विभवकिरणैर्भाति भगवन्नभूवन् खद्योता इव शुचिरवावन्यमतयः ॥११७॥ विधेयं वार्यं चानुभयमुभयं मिश्रमपि तत्

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

विशेषैः प्रत्येकं नियमविषयैश्चापरिमितैः ।
सदान्योन्यापेक्षैः सकलभुवनज्येष्ठगुरुणा त्व-
या गीतं तत्वं बहुनयविवक्षेतरवशात् ११८
अहिंसा भूतानां जगति विदितं ब्रह्म
परमं न सातत्रारम्भोस्त्यणुरपि च यत्रा-
श्रमविधौ । ततस्तत्सिध्यर्थ्यं परमकरुणो
ग्रन्थमुभयं भवानेवात्याक्षीन्न च विकृ-
तवेषोपधिरतः ॥ ११९ ॥ वपुभूषावेषव्यव-
धिरहितं शान्तिकरणं यतस्ते संचष्टे
स्मरशराविषातंकविजयम् । विना भीमैः
शस्त्रैरदयहृदयामर्षविलयं ततस्त्वं निर्मोहः
शरणमसि नः शान्तिनिलयः ॥ १२० ॥

इति नमिजिनस्तोत्रम्

भगवानृषिः परमयोगदहनहुतकल्मषेन्धनम्
। ज्ञानविपुलकिरणैः सकलं प्रतिबुध्य बुद्धः

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कमलायतेक्षणः ॥ १२१ ॥ हरिवंशकेतुर-
नवद्यविनयदमतीर्थनायकः । शीलजलधि-
रभवो विभवस्त्वमरिष्टनेमिजिनकुञ्जरोऽजरः
॥ १२२ ॥ त्रिदशेन्द्रमौलिमणिरत्नकिरण-
विसरोपचुम्बितम् । पादयुगलममलं भवतो
विकसत्कुशेशयदलारुणोदरम् ॥ १२३ ॥
नखचन्द्ररश्मिकवचातिरुचिरशिखराङ्गुलि-
स्थलम् । स्वार्थनियतमनसः सुधियः प्रणम-
न्ति मन्त्रमुखरा महर्षयः ॥ १२४ ॥ द्युति-
मद्रथाङ्गरविबिम्बकिरणजटिलांशुमण्डलः ।
नीलजलजदलराशिवपुः सहबन्धुभिर्गरुडके-
तुरीश्वरः ॥१२५॥ हलभृच्च ते स्वजनभक्ति-
मुदितहृदयौ जनेश्वरौ । धर्मविनयरसिकौ
सुतरां चरणारविन्दयुगलं प्रणेमतुः ॥१२६॥
ककुदं भुवः खचरयोषिदुषितशिखरैरलं-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कृतः। मेघपटलपरीवीततटस्तव लक्षणानि लिखितानि वज्रिणा ॥ १२७ ॥ वहतीति तीर्थमृषिभिश्च सततमभिगम्यतेऽद्य च। प्रीतिविततहृदयैः परितो भृषमूर्ज्जयन्त इति विश्रुतोऽचलः ॥ १२८ ॥ बहिरन्तरप्युभयथा च करणमविघाति नार्थकृत्। नाथ युगपदखिलं च सदा त्वमिदं तलामलकवद्विवेदिथ ॥ १२९ ॥ अथ एव ते बुधनुतस्य चरितगुणमद्भुतोदयम्। न्यायविहितमवधार्य जिने त्वयि सुप्रसन्नमनसः स्थिता वयं ॥ १३० ॥

इत्यरिष्टनेमिजिनस्तोत्रम्

तमालनीलैः सधनुस्तडिद्गुणैः प्रकीर्णभीमाशनिवायुवृष्टिभिः। बलाहकैर्वैरिवशैरुपद्रुतो महामना यो न चचाल योग-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तः ॥ १३१ ॥ बृहत्फणामण्डलमण्डपेन
यं स्फुरत्तडित्पिङ्गरुचोपसर्गिणम् । जुगू-
ह नागो धरणो धराधरं विरागसन्ध्यातडि-
दम्बुदो यथा ॥ १३२ ॥ स्वयोगनिस्त्रिंश-
निशातधारया निशात्य यो दुर्जयमोहवि-
द्विषम् । अवापदार्हन्त्यमचिन्त्यमद्भुतं त्रिलो-
कपूजातिशयास्पदं पदम् ॥ १३३॥ यमीश्वरं
वीक्ष्य विधूतकल्मषं तपोधनास्तेऽपि तथा
बुभूषवः । वनौकसः स्वश्रमवन्ध्यबुद्धयः
शमोपदेशं शरणं प्रपेदिरे ॥ १३४ ॥ स
सत्यविद्यातपसां प्रणायकः समग्रधीरुग्र-
कुलाम्बरांशुमान् । मया सदा पार्श्वजिनः
प्रणम्यते विलीनमिथ्यापथदृष्टिविभ्रमः १३५

इति पार्श्वजिनस्तोत्रम्

कीर्त्या भुवि भासि तया वीर त्वं गुण-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

समुच्छ्रया भासितया । भासोडुसभासितया
सोम इव व्योम्नि कुन्दशोभासितया १३६
तवजिन शासनविभवो जयति कलावपि
गुणानुशासनविभवः दोषकशासनाविभवः
स्तुवंति चैनं प्रभाकृ-शासनविभवः ॥ १३७ ॥
अनवद्यः स्याद्वादस्तव दृष्टेष्टाविरोधतः
स्याद्वादः । इतरो न स्याद्वादो सद्वितय-
विरोधान्मुनीश्वराऽस्याद्वादः ॥ १३८ ॥ त्व-
मासि सुरासुरमहितो ग्रन्थिकसत्वाशयप्रणा-
मामहितः । लोकत्रयपरमहितोऽनावरण-
ज्योतिरुज्वलद्धामहितः ॥ १३९ ॥ सभ्या-
नामभिरुचितं दधासि गुणभूषणं श्रिया
चारुचितम् । मग्नं स्वस्यां रुचिरं जयसि
च मृगलांछनं स्वकान्त्या रुचितम् ॥१४०॥
त्वं जिन गतमदमायस्तव भावानां मुमुक्षु-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कामदमायः । श्रेयान् श्रीमदमायस्त्वया समादेशि सप्रयामदमायः ॥ १४१ ॥ गिरिभित्त्यवदानवतः श्रीमत इव दन्तिनः श्रवद्दानवतः तव शमवादानवतो गतमूर्जितमपगतप्रमादानवतः ॥ १४२ ॥

बहुगुणसंपदसकलं परमतमपि मधुरवचनविन्यासकलम् । नयै[2] भक्त्यवतंसकलं तव देव मतं समन्तभद्रं सकलम् ॥१४३॥

इति वीरजिनस्तोत्रम्

---

(१) प्रकृष्टा मा हिंसा प्रमा अपगता प्रमा अपगतप्रमा तस्या दानमभयदानं तदस्यास्तीति तस्य ।

(२) नया भक्तयो भङ्गास्ता एवाऽवतंसकं कर्णभूषणं तल्लातीति वा ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

योनिःशेषजिनोक्तधर्मविषयः श्रीगौतमाद्यैः कृतः सूक्तार्थैरमलैः स्तवोयमसमः स्वल्पैः प्रसन्नैः पदैः। तद्व्याख्यानमदो यथाऽवगतः किञ्चित्कृतं लेशतः स्थेयांश्चन्द्रदिवाकरावधि बुधप्रह्लादचेतस्यलम् ॥१४४॥

इति बृहत्स्वयम्भूस्तोत्रं समाप्तम्

---

(१) अन्तिमः श्लोकः स्वयम्भुस्तोत्रस्य नास्ति किन्तु टीकाकारस्य।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ॐ

श्रीअमितगतिसूरिविरचिता

द्वात्रिंशतिका ।

(१७)

सत्वेषु मैत्रीं गुणिषु प्रमोदं क्लिष्टेषु जीवेषु कृपापरत्वम् । माध्यस्थभावं विपरीतवृत्तौ सदा ममात्मा विदधातु देव ॥ १ ॥ शरीरतः कर्त्तुमनन्तशक्तिं विभिन्नमात्मानमपास्तदोषम् । जिनेन्द्रकोषादिव खङ्गयष्टिं तव प्रसादेन ममास्तु शक्तिः ॥ २ ॥ दुःखे सुखे वैरिणि बन्धुवर्गे योगे वियोगे भुवने वने वा । निराकृताशेषममत्वबुद्धेः समं

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मनो मेऽस्तु सदापि नाथ ॥ ३ ॥ मुनीश ! लीनाविव कीलिताविव स्थिरौ निषाताविव विंबिताविव पादौ त्वदीयौ मम तिष्ठतां सदा तमोधुनानौ हृदि दीपकाविव ॥ ४ ॥ एकेन्द्रियाद्या यदि देव देहिनः, प्रमादतः संचरता इतस्ततः । क्षता विभिन्ना मिलिता निपीडिता, तदस्तु मिथ्या दुरनुष्ठितं तदा ॥ ५ ॥ विमुक्तिमार्गप्रतिकूलवर्त्तिना मया कषायाक्षवशेन दुर्धिया । चारित्रशुद्धेर्यद्-कारि लोपनं तदस्तु मिथ्या मम दुष्कृतं प्रभो ॥ ६ ॥ विनिन्दनालोचनगर्हणैरहं म-नोवचःकायकषायनिर्मितम् । निहन्मि पापं भवदुःखकारणं भिषग्विषं मन्त्रगुणैरिवाखि-लम् ॥ ७ ॥ अतिक्रमं यद्विमतेर्व्यतिक्रमं जिनातिचारं सुचरित्रकर्म्मणः । व्यधामना-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

चारमपि प्रमादतः प्रतिक्रमं तस्य करोमि शुद्धये ८ क्षतिं मनःशुद्धिविधेरतिक्रमं व्यतिक्रमं शीलवृतेर्विलंघनम्। प्रभोऽतिचारं विषयेषु वर्तनं वदन्त्यनाचारमिहातिसक्तताम् ॥ ९ ॥ यदर्थमात्रापदवाक्यहीनं मया प्रमादाद्यदि किञ्चनोक्तम्। तन्मे क्षमित्वा विदधातु देवी सरस्वती केवलबोधलब्धिम् ॥ १० ॥ बोधिःसमाधिःपरिणामशुद्धिःस्वात्मोपलब्धिः शिवसौख्यसिद्धिः। चिन्तामणिं चिन्तितवस्तुदाने त्वां वंद्यमानस्य ममास्तु देवि ॥ ११ ॥ यः स्मर्यते सर्वमुनीन्द्रवृन्दैर्यः स्तूयते सर्वनरामरेन्द्रैः। यो गीयते वेदपुराणशास्त्रैः स देवदेवो हृदये ममास्ताम् ॥ १२ ॥ यो दर्शनज्ञानसुखस्वभावः समस्तसंसारविकारबाह्यः। समाधिगम्यः परमा-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

त्मसंज्ञः स देवदेवो हृदये ममास्ताम् ॥१३॥
निषूदते यो भवदुःखजालं निरीक्षते यो ज-
गदन्तरालं । योऽन्तर्गतो योगिनिरीक्षणीयः
स देवदेवो हृदये ममास्ताम् ॥ १४ ॥ वि-
मुक्तिमार्गप्रतिपादको यो यो जन्ममृत्युव्य-
सनाद्यतीतः । त्रिलोकलोकी विकलोऽकल-
ङ्कः स देवदेवो हृदये ममास्ताम् ॥ १५ ॥
क्रोडीकृताशेषशरीरिवर्गा रागादयो यस्य न
सन्ति दोषाः । निरिन्द्रियो ज्ञानमयोऽन-
पायः स देवदेवो हृदये ममास्ताम् ॥ १६ ॥
यो व्यापको विश्वजनीनवृत्तेः सिद्धो विबु-
द्धो धुतकर्मबन्धः । ध्यातो धुनीते सकलं
विकारं स देवदेवो हृदये ममास्ताम् ॥१७॥
न स्पृश्यते कर्मकलङ्कदोषैर्यो ध्वान्तसंघैरिव
तिग्मरश्मिः । निरञ्जनं नित्यमनेकमेकं तं

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

देवमाप्तं शरणं प्रपद्ये ॥ १८ ॥ विभासते यत्र मरीचिमालि न विद्यमाने भुवनावभासि। स्वात्मस्थितं बोधमयप्रकाशं तं देवमाप्तं शरणं प्रपद्ये ॥ १९ ॥ विलोक्यमाने सति यत्र विश्वं विलोक्यते स्पष्टमिदं विविक्तम्। शुद्धं शिवं शान्तमनाद्यनन्तं तं देवमाप्तं शरणं प्रपद्ये ॥ २० ॥ येन क्षता मन्मथमानमूर्छा विषादनिद्राभयशोकचिन्ता। क्षयोऽनलेनेव तरुप्रपञ्चस्तं देवमाप्तं शरणं प्रपद्ये ॥ २१ ॥ न संस्तरोऽश्मा न तृणं न मेदिनी विधानतो नो फलको विनिर्मितः यतो निरस्ताक्षकषायविद्विषः सुधीभिरात्मैव सुनिर्मलो मतः ॥ २२ ॥ न संस्तरो भद्रसमाधिसाधनं न लोकपूजा न च संघमेल-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नम् । यतस्ततोऽध्यात्मरतो भवानिशं वि-
मुच्य सर्वामपि बाह्यवासनाम् ॥ २३ ॥ न
सन्ति बाह्या मम केचनार्था भवामि तेषां
न कदाचनाहम् । इत्थं विनिश्चित्य विमु-
च्य बाह्यं स्वस्थः सदा त्वं भव भद्रमुक्त्यै
॥ २४ ॥ आत्मानमात्मन्यवलोक्यमानस्त्वं
दर्शनज्ञानमयो विशुद्धः । एकाग्रचित्तः खलु-
यत्र तत्र स्थितोपि साधुर्लभते समाधिम्
॥ २५ ॥ एकः सदा शाश्वतिको ममात्मा
विनिर्मलः साधिगमस्वभावः । बाहिर्भवाः
सन्त्यपरे समस्ता न शाश्वताः कर्मभवाः
स्वकीयाः ॥ २६ ॥ यस्यास्ति नैक्यं वपुषा-
पि सार्द्धं तस्यास्ति किं पुत्रकलत्रमित्रैः ।
पृथक्कृते चर्मणि रोमकूपाः कुतो हि तिष्ठ-
न्ति शरीरमध्ये ॥ २७ ॥ संयोगतो दुःख-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मनेकभेदं यतोऽश्नुते जन्मवने शरीरी।
ततस्त्रिधासौ परिवर्जनीयो यियासुना निर्वृ-
तिमात्मनीनाम् ॥ २८ ॥ सर्वं निराकृत्य
विकल्पजालं संसारकान्तारनिपातहेतुम् ।
विविक्तमात्मानमवेक्ष्यमाणो निलीयसे त्वं
परमात्मतत्त्वे ॥ २९ ॥ स्वयं कृतं कर्म य-
दात्मना पुरा फलं तदीयं लभते शुभाशु-
भम्। परेण दत्तं यदि लभ्यते स्फुटं स्वयं
कृतं कर्म निरर्थकं तदा ॥ ३० ॥ निजार्जि-
तं कर्म विहाय देहिनो न कोपि कस्यापि
ददाति किंचन। विचारयन्नेवमनन्यमानसः
परो ददातीति विमुंच शेमुषीम् ॥ ३१ ॥
यैः परमात्माऽमितगतिवन्द्यः सर्वविविक्तो
भृशमनवद्यः। शश्वदधीतो मनसि लभन्ते
मुक्तिनिकेतं विभववरं ते ॥ ३२ ॥ इति

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

द्वात्रिंशतावृत्तैः परमात्मानमीक्षते । योऽनन्यगतचेतस्को यात्यसौ पदमव्ययम् ॥३३॥

इत्यमितगतिसूरिविरचिता द्वात्रिंशतिका समाप्ता

अकलंकस्तोत्रं ।

शार्दूलविक्रीडितछंदः ।

त्रैलोक्यं सकलं त्रिकालविषयं सालोकमालोकितं साक्षाद्येन यथा स्वयं करतले रेखात्रयं सांगुलि । रागद्वेषभयामयान्तकजरालोलत्वलोभादयो, नालं यत्पदलंघनाय स महादेवो मया वंद्यते ॥ १ ॥ दग्धं येन पुरत्रयं शरभवा तीव्रार्चिषा वह्निना, यो वा नृत्यति मत्तवात्पितृवने यस्यात्मजो वागुहः । सोऽयं किं मम शंकरो भयतृषारोषार्तिमोह-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

क्षयं कृत्वा यः स तु सर्वविच्तनुभृतां क्षेमं-
करः शंकरः ॥ २ ॥ यत्नाद्येन विदारितं
कररुहैर्दैत्येन्द्रवक्षःस्थलं सारथ्येन धनंजयस्य
समरे योऽमारयत्कौरवान् । नासौ विष्णु-
रनेककालविषयं यज्ज्ञानमव्याहतं विश्वं
व्याप्य विजृंभते स तु महाविष्णुः सदेष्टो
मम ॥ ३ ॥ उर्वश्यामुदपादि रागबहुलं चे-
तो यदीयं पुनः पात्रीदंडकमंडलुप्रभृतयो
यस्याकृतार्थस्थितिम् । आविर्भावयितुं भ-
वंति स कथं ब्रह्माभवेन्मादृशां क्षुत्तृष्णाश्र-
मरागरोगरहितो ब्रह्माकृतार्थोऽस्तु नः ॥४॥
यो जग्ध्वा पिशितं समत्स्यकवलं जीवं च
शून्यं वदन्, कर्त्ता कर्मफलं न भुंक्त इति
यो वक्ता स बुद्धः कथम् । यज्ज्ञानं क्षण-
वर्त्तिवस्तुसकलं ज्ञातं न शक्तं सदा यो

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जानन्युगपज्जगत्त्रयमिदं साक्षात्स बुद्धो मम ॥ ५ ॥

स्रग्धरा छंदः ।

ईशः किं छिन्नलिंगो यदि विगतभयः शूलपाणिः कथं स्यात् नाथः किं भैक्ष्यचारी यतिरिति स कथं सांगनः सात्मजश्च । आर्द्राजः किन्त्वजन्मा सकलविदिति किं वेत्ति नात्मान्तरायं संक्षेपात्सम्यगुक्तं पशुपतिमपशुः कोऽत्र धीमानुपास्ते ॥ ६ ॥ ब्रह्मा चर्माक्षसूत्री सुरयुवतिरसावेशविभ्रान्तचेताः शम्भुः खट्वांगधारी गिरिपतितनयापांगलीलानुविद्धः । विष्णुश्चक्राधिपः सन्दुहितरमगमद्गोपनाथस्य मोहादर्हन्विध्वस्तरागो जितसकलभयः कोऽयमेष्वाप्तनाथः ॥ ७ ॥ एको नृत्यति विप्रसार्य कुकुभां

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

चक्रे सहस्रभुजानेकः शेषभुजंगभोगशयने व्यादाय निद्रायते। दृष्टुं चारुतिलोत्तमा-मुखमगादेकश्चतुर्वक्त्रतामेते मुक्तिपथं वदंति विदुषामित्येतदत्यद्भुतम् ॥ ८ ॥ यो विश्वं वेद वेद्यं जननजलनिधेर्भंगिनः पारदृश्वा पौर्वापर्याविरुद्धं वचनमनुपमं निष्कलंकं यदीयम्। तं वंदे साधुवंद्यं सकलगुणनिधिं ध्वस्तदोषद्विषंतं बुद्धं वा वर्द्धमानं शतदल-निलयं केशवं वा शिवं वा ॥ ९ ॥ माया नास्ति जटा कपाल मुकुटं चन्द्रो न मूर्द्धा-वली, खट्वांगं न च वासुकिर्न च धनुः शूलं न चोग्रं मुखं। कामो यस्य न का-मिनी न च वृषो गीतं न नृत्यं पुनः सोऽ-स्मान्पातु निरंजनो जिनपतिः सर्वत्र सू-क्ष्मः शिवः ॥ १० ॥ नो ब्रह्मांकितभूतलं

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

न च हरेः शम्भोर्न मुद्रांकितं नो चन्द्रार्क्क-
करांकितं सुरपतेर्वज्रांकितं नैव च । षड्-
वक्त्रांकितबौद्धदेवहुतभुग्यक्षोरगैर्नांकितं न-
ग्नं पश्यत वादिनो जगदिदं जैनेद्रमुद्रांकि-
तं ॥ ११ ॥ मौजीदंडकमंडलुप्रभृतयो नो
लाञ्छनं ब्रह्मणो । रुद्रस्यापि जटाकपालमु-
कुटं कोपीनखट्वांगना । विष्णोश्चक्रगदा-
दिशंखमतुलं बुद्धस्य रक्ताम्बरं नग्नं पश्यत
वादिनो जगदिदं जैनेन्द्रमुद्रांकितं ॥ १२ ॥
नाहंकारवशीकृतेन मनसा न द्वेषिणा केवलं
नैरात्म्यं प्रतिपद्य नश्यति जने कारुण्यबु-
द्ध्या मया । राज्ञः श्रीहिमशीतलस्य स-
दसि प्रायो विदग्धात्मनो बौद्धौघान्सकलान्
विजित्य स घटः पादेन विस्फालितः ॥१३॥
खट्वांगं नैव हस्ते न च हृदि रचिता ल-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

न्यते मुंडमाला भस्मांगं नैव शूलं न च
गिरिदुहिता नैव हस्ते कपालं। चन्द्रार्द्धं
नैव मूर्द्धन्यपि वृषगमनं नैव कंठे फणीन्द्रः
तं बन्दे त्यक्तदोषं भवभयमथनं चेश्वरं देव-
देवं ॥ १४ ॥ किं वाद्यो भगवानमेयमहि-
मा देवोऽकलंकः कलौ काले यो जनतासु-
धर्मनिहितो देवोऽकलंको जिनः। यस्य
स्फारविवेकमुद्रलहरीजालेप्रमेयाकुला। निर्म-
ग्ना तनुतेतरां भगवतीतारा शिरः कम्पनम्
॥ १५ ॥ सा तारा खलु देवता भगवती-
मन्यापि मन्यामहे, षण्मासावधिजाड्यसां-
ख्यभगवद्भट्टाकलंकप्रभोः। वाक्कल्लोलपर-
म्पराभिरमते नूनं मनोमज्जनव्यापारं सहते
स्म विस्मितमतिः सन्ताडितेतस्ततः ॥१६॥

॥ इति श्रीअकलंकस्तोत्रं समाप्तम् ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मंगलाष्टकम्

श्रीमन्नम्रसुरासुरेंद्रमुकुटप्रद्योतरत्नप्रभा-भास्वत्पादनखेन्दवः प्रवचनांभोधींदवः स्थायिनः । ये सर्वेजिनासिद्धसूर्यनुगतास्ते पाठकाः साधवः। स्तुत्या योगिजनश्च पञ्चगुरवः कुर्वंतु ते मंगलम् ॥१॥ सम्यग्दर्शनबोधवृत्तममलं रत्नत्रयं पावनं मुक्तिश्रीनगराधिनाथजिनपत्युक्तोऽपवर्गप्रदः । धर्मः सूक्तिसुधा च चैत्यमखिलं चैत्यालयं श्र्यालयं, प्रोक्तं च त्रिविधं चतुर्विधममी कुर्वन्तु ते मंगलम् ॥ २ ॥ नाभेयादिजिनाधिपास्त्रिभुवनख्याताश्चतुर्विंशतिः श्रीमन्तो भरते-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्वरप्रभृतयो ये चक्रिणो द्वादश । ये विष्णुप्रतिविष्णुलांगलधराः सप्तोत्तरा त्रिंशतिस्त्रैकाल्ये प्रथितास्त्रिषाष्टिपुरुषाः कुर्वन्तु ते मंगलम् ॥ ३ ॥ देव्योऽष्टौ च जयादिका द्विगुणिता विद्यादिका देवताः, श्रीतीर्थंकरमातृकाश्च जनका यक्षाश्च यक्ष्यस्तथा । द्वात्रिंशत्त्रिदशाधिपास्तिथिसुरा दिक्कन्यकाश्चाष्टधा दिक्पाला दश चैत्यमी सुरगणाः कुर्वंतु ते मंगलम् ॥ ४ ॥ ये सर्वौषधऋद्धयः सुतपसो वृद्धिंगताः पञ्च ये ये चाष्टांगमहानिमित्तकुशला येऽष्टाविधाश्चारणाः । पञ्चज्ञानधरास्त्रयोऽपि बालिनो ये बुद्धिऋद्धीश्वराः । सप्तैते सकलार्चिता गणभृतः कुर्वंतु ते मंगलम् ॥ ५ ॥ कैलासे वृषभस्य निर्वृतिमही वीरस्य पावापुरे चम्पायां वसु-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पूज्यसज्जिनपतेः सम्मेदशैलेऽर्हताम् । शेषाणामपि चोर्जयन्तशिखरे नेमीश्वरस्यार्हतो । निर्वाणावनयः प्रसिद्धविभवाः कुर्वंतु ते मंगलम् ॥ ६ ॥ ज्योतिर्व्यन्तरभावनामरगृहे मेरौ कुलाद्रौ तथा जंबूशाल्मलिचैत्यशाखिषु तथा वक्षाररूप्याद्रिषु । इष्वाकारगिरौ च कुंडलनगे द्वीपे च नन्दीश्वरे शैले ये मनुजोत्तरे जिनगृहाः कुर्वन्तु ते मंगलम् ॥ ७ ॥ यो गर्भावतरोत्सवो भगवतां जन्माभिषेकोत्सवो यो जातः परिनिष्क्रमेण विभवो यः केवलज्ञानभाक् । यः कैवल्यपुरप्रवेशमहिमा संभाविनः स्वर्गिभिः कल्याणानि च तानि पंच सततं कुर्वंतु ते मंगलम् ॥८॥

इत्थं श्रीजिनमंगलाष्टकमिदं सौभाग्यसम्पत्प्रदं कल्याणेषु महोत्सवेषु सुधियस्ती-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

र्थंकराणामुषः । ये शृण्वन्ति पठंति तैश्च सुजनैर्धर्मार्थकामान्विता लक्ष्मीराश्रयते व्यपायरहिता निर्वाणलक्ष्मीरपि ॥ ९ ॥

इति मंगलाष्टकम् ।

महावीराष्टकस्तोत्रम्

शिखरिणी

यदीये चैतन्ये मुकुर इव भावाश्चिदाचितः समंभांति ध्रौव्यव्ययजनिलसंतोंतरहिताः। जगत्साक्षी मार्गप्रगटनपरो भानुरिव यो महावीरस्वामी नयनपथगामी भवतु मे (नः) ॥ १ ॥ अताम्रं यच्चक्षुः कमलयुगलं स्पंदरहितं जनान्कोपापायं प्रकटयाति वाभ्यंत-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

रमपि। स्फुटं मूर्तिर्यस्य प्रशमितमयी वा-
तिविमला, महावीर० ॥ २ ॥ नमन्नाकें-
द्रालीमुकुटमणिभाजालजटिलं लसत्पादां-
भोजद्वयमिह यदीयं तनुभृतां। भवज्ज्वा-
लाशांत्यै प्रभवति जलं वा स्मृतमपि, महा-
वीर० ॥ ३ ॥ यदर्चाभावेन प्रमुदितमना
दर्दुर इह क्षणादासीत्स्वर्गी गुणगणसमृद्धः
सुखनिधिः। लभंते सद्भक्ताः शिवसुखस-
माजं किमु तदा, महावीर० ॥ ४ ॥ कन-
त्स्वर्णाभासोऽप्यपगततनुर्ज्ञाननिवहो विचि-
त्रात्माप्येको नृपतिवरसिद्धार्थतनयः अज-
न्मापि श्रीमान् विगतभवरागोद्भुतगतिर्,
महावीर० ॥ ५ ॥ यदीयावाग्गंगा वि-
विधनयकल्लोलविमला बृहज्ज्ञानांभोभिर्जग-
ति जनतां या स्नपयति। इदानीमप्ये-
षा बुधजनमरालैः परिचिता, महावीर०

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

॥ ६ ॥ अनिर्वारोद्रेकस्त्रिभुवनजयी काम-
सुभटः कुमारावस्थायामपि निजबलाद्येन
विजितः । स्फुरन्नित्यानंदप्रशमपदराज्याय
स जिनः, महावीर० ॥ ७ ॥ महामोहा-
तङ्कप्रशमनपराकस्मिकाभिषग् निरापेक्षो बं-
धुर्विदितमहिमामङ्गलकरः शरण्यः, साधू-
नां भवभयभृतामुत्तमगुणो, महावीर० ॥८॥
महावीराष्टकं स्तोत्रं भक्त्या भागेन्दुना कृतं ।
यः पठेच्छृणुयाच्चापि स याति परमां गतिं
॥ ९ ॥ इति ।

॥ अथ नमस्कारमन्त्रः ॥

आर्या—णमो अरहंताणं, णमो सिद्धाणं ।
णमो आइरीयाणं णमो उवज्झायाणं, णमो
लोए सव्वसाहूणं ॥ १ ॥ मन्त्रं संसारसारं
त्रिजगदनुपमं सर्वपापारिमन्त्रं संसारोच्छेद-
मन्त्रं विषमविषहरं कर्मनिर्मूलमन्त्रम् । मन्त्रं

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सिद्धिप्रधानं शिवसुखजननं केवलज्ञानमन्त्रं मन्त्रं श्रीजैनमन्त्रं जप जप जपितं जन्म निर्वाणमन्त्रम् ॥ २ ॥ आकृष्टिं सुरसंपदां विदधते मुक्तिश्रियो वश्यतामुच्चाटं विपदां चतुर्गतिभुवां विद्वेषमात्मैनसाम् । स्तम्भं दुर्गमनं प्रति प्रयततो मोहस्य संमोहनं पायात्पञ्चनमस्क्रियाक्षरमयी साराधनादेवता ॥ ३ ॥ अनन्तानन्तसंसारसन्ततिच्छेदकारणम् । जिनराजपदाम्भोजस्मरणं शरणं मम ॥४॥ अन्यथा शरणं नास्ति त्वमेव शरणं मम । तस्मात्कारुण्यभावेन रक्ष रक्ष जिनेश्वर ॥५॥ न हि त्राता न हि त्राता न हि त्राता जगत्त्रये । वीतरागात्परो देवो न भूतो न भविष्यति ॥६॥ जिने भक्तिर्जिने भक्तिर्जिने भक्तिर्दिने दिने । सदा मेऽस्तु सदा मेऽस्तु सदा मेऽस्तु भवे भवे ॥ ७ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्रीपूज्यपादाद्याचार्यविरचितः

श्रीदशभक्त्यादिसंग्रहः

अथ ईर्यापथशुद्धिः

निःसंगोऽहं जिनानां सदनमनुपमं त्रिः-परीत्येत्य भक्त्या। स्थित्वा गत्वा निषद्यो-च्चरणपरिणतोऽन्तः शनैर्हस्तयुग्मम्। भाले संस्थाप्य बुद्ध्या मम दुरितहरं कीर्तये शक्रवन्द्यं। निन्दादूरं सदाप्तं क्षयरहितममुं ज्ञान-भानुं जिनेन्द्रम् ॥ १ ॥ श्रीमत्पवित्रमकलङ्क-मनन्तकल्पं। स्वायंभुवं सकलमङ्गलमादि-तीर्थम्। नित्योत्सवं मणिमयं निलयं जिनानां त्रैलोक्यभूषणमहं शरणं प्रपद्ये ॥ २ ॥ श्रीम-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

त्परमगम्भीरस्याद्वादामोघलाञ्छनम् । जीयात्त्रैलोक्यनाथस्य, शासनं जिनशासनम् ॥३
श्रीमुखालोकनादेव, श्रीमुखालोकनं भवेत्
आलोकनविहीनस्य, तत्सुखावाप्तयः कुतः ॥
४ ॥ अद्याभवत्सफलता नयनद्वयस्य, देव ! त्वदीयचरणाम्बुजवीक्षणेन । अद्य त्रिलोकतिलक प्रतिभासते मे । संसारवारिधिरयं, चुलुकप्रमाणं ॥ ५ ॥ अद्य मे क्षालितं गात्रं, नेत्रे च विमलीकृते । स्नातोऽहं धर्मतीर्थेषु, जिनेन्द्र तव दर्शनात् ॥६ ॥ नमो नमः सत्वहितंकराय, वीराय भव्याम्बुजभास्कराय । अनन्तलोकाय सुरार्चिताय, देवाधिदेवाय नमो जिनाय ॥७॥ नमो जिनाय त्रिदशार्चिताय, विनष्टदोषाय गुणार्णवाय । विमुक्तिमार्गप्रतिबोधनाय, देवाधिदेवाय नमो जिनाय

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

॥८॥ देवाधिदेव ! परमेश्वर ! वीतराग ! सर्वज्ञ तीर्थंकर ! सिद्ध ! महानुभाव । त्रैलोक्यनाथ जिनपुंगव ! वर्द्धमान ! स्वामिन् ! गतोऽस्मि शरणं चरणद्वयं ते ॥९॥ जितमदहर्षद्वेषा जित-मोहपरीषहा जितकषायाः । जितजन्ममरण-रोगा जितमात्सर्या जयन्तु जिनाः ॥ १० ॥ जयतु जिनवर्द्धमानस्त्रिभुवनहितधर्मचक्रनी-रजबन्धुः । त्रिदशपतिमुकुटभासुरचूडामणि-रश्मिरंजितारुणचरणः ॥११॥ जय जय जय त्रैलोक्यकाण्डशोभिशिखामणे । नुद नुद नुद स्वान्तध्वान्तं जगत्कमलार्क नः । नय नय नय स्वामिन् शांतिं नितान्तमनन्तिमां । नहि नहि नहि त्राता लोकैकमित्र भवत्परः ॥ चित्ते मुखे शिरसि पाणिपयोजयुग्मे, भक्तिं स्तुतिं विनातिमञ्जलिमञ्जसैव । चेक्रीयते चरिक-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

रीति चरीकरीति । यश्चर्करीति तव देव स एव धन्यः ।१३। जन्मोन्माज्यँ भजतु भवतः पादपद्मं न लभ्यं, तच्चेत्स्वैरं चरतु नच दुर्दैवतां सेवतां सः । अश्नात्यन्नं यदिह सुलभं दुर्लभं चेन्मुधास्ते, क्षुद्व्यावृत्यै कवलयति कःकालकूटं बुभुक्षुः ॥१४॥ रूपं ते निरुपाधि सुंदरमिदं पश्यन् सहस्रेक्षणः, प्रेक्षाकौतुककारिकोऽत्र भगवन्नोपैत्यवस्थान्तरम् । वाणीं गद्गदयन्वपुः पुलकयन्नेत्राद्वयं स्रावयन्, मूर्द्धानं नमयन्करौ मुकुलयंश्चेतोऽपि निर्वापयन् ॥१५॥ त्रस्तारातिरिति त्रिकालविदिति त्राता त्रिलोक्या इति, श्रेयःसूतिरिति श्रियां निधिरिति श्रेठः सुराणामिति । प्राप्तोऽहं शरणं शरण्यमगतिस्त्वां तत्त्यजोपेक्षणं, रक्ष क्षेमपदं प्रसीद जिन किं विज्ञापितैर्गोपितैः

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

॥ १६ ॥ त्रिलोकराजेन्द्रकिरीटकोटिप्रभाभिरालीढपदारविन्दम्। निर्मूलमुन्मूलितकर्मवृक्षं, जिनेद्रचन्द्रं प्रणमामि भक्त्या ॥१७॥ करचरणतनुविघातादटतो निहतः प्रमादतः प्राणी। ईर्यापथमिति भीत्या मुंचे तद्दोषहान्यर्थम् ॥ १८ ॥ ईर्यापथे प्रचलताऽद्य मया प्रमाद्‌देकेन्द्रियप्रमुखजीवनिकायवाधा। निर्वर्तिता यदि भवेदयुगांतरेक्षा। मिथ्या तदस्तु दुरितं गुरुभक्तितो मे ॥ १९ ॥ पडिक्कमामि भंत्ते इरियावहियाए विराहणाए अणागुत्ते, अइग्गमणे, णिग्गमणे, ठाणे, गमणे, चंकमणे, पाणुग्गमणे विज्जग्गमणे, हरिदुग्गमणे, उच्चारपस्सयणखेलसिंहाणयवियडिय पइट्ठावणियाए, जे जीवा एइंदिया वा, वेइंदिया वा, तेइंदिया वा, चउरिंदिया वा, पं-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

चेंदिया वा णोल्लिदा वा, पेल्लिदा वा, संघट्टिदा वा, संघादिदा वा, उद्दाविदा वा, परिदाविदा वा, किरिंच्छिदा वा, लेसिदा वा, छिंदिदा वा, भिंदिदा वा, ठाणदो वा, ठाणचंकमणदो वा तस्स उत्तरगुणं तस्स पायच्छित्तकरणं तस्स विसोहिकरणं जावअरहंताणं भयवंताणं णमोकारं करोमि तावक्कायं पावकम्मं दुच्चरियं वोस्सरामि। "ॐ णमो अरहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आयरीयाणं णमो उवज्झायाणं णमो लोए सव्वसाहूणं,, ॥ जाप्यानि ॥ ९ ॥

ॐ नमः परमात्मने नमोऽनेकान्ताय शान्तये

इच्छामि भंते इरियावहियस्स आलोचेउं पुव्वुत्तरदक्खिणपच्छिमचउदिसु विदिसासु विहरमाणेण, जुगंतरादिट्ठिणा, भव्वेण दट्ठव्वा, पमाददोसेण डवडवचरियाए पाणभूदजीव-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सत्ताणं एदेसिं उवघादो कदो वा कारिदो वा कारिंतो वा, समणुमणिदो वा तस्स मिच्छा मे दुक्कडं ॥ पापिष्ठेन दुरात्मना जडधिया मायाविना लोभिना। रागद्वेषमलीमसेन मनसा दुष्कर्म यन्निर्मितम्। त्रैलोक्याधिपते, जिनेन्द्र भवतःश्रीपादमूलेऽधुना। निन्दापूर्वमहं जहामि सततं निर्वर्तये कर्म्मणाम्॥१॥ जिनेन्द्रमुन्मूलितकर्मबन्धं, प्रणम्य सन्मार्गकृतस्वरूपम्। अनन्तबोधादिभवं गुणौघं क्रियाकलापं प्रकटं प्रवक्ष्ये। अथार्हत्पूजारंभक्रियायां पूर्वाचार्यानुक्रमेण सकलकर्मक्षयार्थं भावपूजावन्दनास्तवसमेतं श्रीमत्सिद्धभक्तिकायोत्सर्गं करोम्यहम्। णमो अरहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आयरियाणं, णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं। चत्तारि मंगलं, अरहंत मंगलं

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सिद्धमंगलं। साहू मंगलं केवलिपण्णत्तो धम्मो मगलं, चत्तारि लोगुत्तमा, अरहंत लोगुत्तमा सिद्धलोगुत्तमा, साहूलोगुत्तमा, केवलिपण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमा। चत्तारि सरणं पव्वज्जामि, अरहंतसरणं पव्वज्जामि। सिद्धसरणं पव्वज्जामि। साहूसरणं पव्वज्जामि। केवालिपण्णत्तो धम्मोसरणं पव्वज्जामि॥ अड्ढाइज्जदीवदोसमुद्देसु पण्णरसकम्मभूमिसु, जाव अरहंताणं, भयवंताणं, आदियराणं, तित्थयराणं, जिणाणं, जिणोत्तमाणं, केवलियाणं, सिद्धाणं बुद्धाणं, परिणिव्वुदाणं, अंतगणाणं, पारयडाणं धम्माइरियाणं, धम्मदेसियाणं, धम्मणायगाणं, धम्मवरचाउरंगचक्कवट्टीणं, देवाहिदेवाणं, णाणाणं, दंसणाणं, चरित्ताणं, सदा करोमि, किरियम्मं। करोमि भंते, सामा-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

यियं सव्वसावज्जजोगं पच्चक्खामि, जाव-ज्जीवं तिविहेण मणासा-वचसा-कायेण, ण करेमि ण कारेमि करंतंपि ण समणुमणामि तस्स भंते अइचारं पडिक्कमामि, णिंदामि, गरहामि जाव अरहंताणं भयवंताणं, पज्जुवासं करेमि, तावकालं पावकम्मं दुच्चरियं वोस्सरामि। जीवियमरणे लाहालाहे संजोगविप्पजोगेय बंधुरिसुहदुक्खादो समदा सामायियं णाम

त्थोस्सामि हं जिणवरे। तित्थयरे केवली अणंताजिणे णरपवरलोयमहिए। विहुयरयमले महप्पणे ॥ ११ ॥ लोयस्सुज्जोययरे। धम्मं तित्थं करे जिणे वंदे। अरहंते कित्तिस्से चउवीसं चेव केवलिणो ॥ २ ॥ उसहमाजियं च वंदे। संभवमभिणंदणं च सुमइं च। पउमप्पहं सुपासं जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

॥ ३ ॥ सुविहिं च पुप्फयंतं सीयल सेयं च वासुपुज्जं च । विमलमणंतं भयवं धम्मं संतिं च वंदामि ॥ ४ ॥ कुंथुं च जिणवरिंदं अरं च मल्लिं च सुव्वयं च णमिं ॥ वंदाम्यरिट्ठणेमिं तह पासं वड्ढमाणं च ॥ ५ ॥ एवं मए आभित्थुया विहुयरयमला पहीणजरमरणा । चउवीसंपि जिणवरा तित्थयरा मे पसीयंतु ॥६॥ कित्तिय वंदिय महिया एदे लोगोत्तमा जिणा सिद्धा ॥ आरोग्गणाणलाहं दिंतु समाहिं च मे बोहिं ॥७॥ चंदेहिं णिम्मलयरा आइच्चेहिं आहियपहा सत्ता । सायरमिव गंभीरा सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥ ८ ॥

इति ईर्यापथशुद्धिः

—०—

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अथ श्रीसिद्धभक्तिः

सिद्धानुद्धूतकर्मप्रकृतिसमुदयान्साधितात्मस्वभावान् । वंदे सिद्धिप्रसिध्यै तदनुपमगुणप्रग्रहाकृष्टितुष्टः ॥ सिद्धिः स्वात्मोपलब्धिः प्रगुणगुणगणोच्छादिदोषापहारात् । योग्योपादानयुक्त्या दृषद इह यथा हेमभावोपलब्धिः ॥१॥ नाभावः सिद्धिरिष्टा न निजगुणहतिस्तत्तपोभिर्न युक्तेः । अस्त्यात्मानादिबद्धः स्वकृतजफलभुक् तत्क्षयान्मोक्षभागी । ज्ञाता दृष्टा स्वदेहप्रमितिरुपसमाहारविस्तारधर्मा । ध्रौव्योत्पत्तिव्ययात्मा स्वगुणयुत इतो नान्यथा साध्यसिद्धिः ॥२ स त्वन्तर्बाह्यहेतुप्रभवविमलसद्दर्शनज्ञानचर्या–, संपद्धेतिप्रघातक्षतदुरिततया व्यञ्जिताचिन्त्य-

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सारैः ॥ कैवल्यज्ञानदृष्टिप्रवरसुखमहावीर्यसम्यक्त्वलब्धि-, ज्योतिर्वातायनादिस्थिरपरमगुणैरद्भुतैर्भासमानः ॥ ३ ॥ जानन्पश्यन्समस्तं सममनुपरतं संप्रतृप्यन्वितन्वन्, धुन्वन्ध्वान्तं नितान्तं निचितमनुपमं प्रीणयन्नीशभावम् । कुर्वन्सर्वप्रजानामपरमभिभवन् ज्योतिरात्मानमात्मा, आत्मन्येवात्मनासौ क्षणमुपजनयन्सत्स्वयंभूः प्रवृत्तः ॥४॥ छिन्दन्शेषानशेषान्निगलवलकलींस्तैरनन्तस्वभावैः सूक्ष्मत्वाग्र्यावगाहागुरुलघुकगुणैः क्षायिकैः शोभमानः । अन्यैश्चान्यव्यपोहप्रवणविषयसंप्राप्तिलब्धिप्रभावै रूर्ध्व ब्रज्यास्वभावात्समयमुपगतो धाम्नि संतिष्ठतेऽग्र्ये ।५। अन्याकारासिहेतु र्न च भवति परो येन तेनाल्पहीनः प्रागात्मोपात्तदेहप्रतिकृतिरुचिराकार एव

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ह्यमूर्तः । क्षुत्तृष्णाश्वासकासज्वरमरणजरानि-
ष्टयोगप्रमोह-व्यापत्त्याद्युग्रदुःखप्रभवभवहृ-
तेः कोऽस्य सौख्यस्य माता ॥ ६ ॥ आत्मो-
पादानसिद्धं स्वयमतिशयवद्वीतबाधं विशालं
वृद्धिह्रासव्यपेतं विषयविरहितं निःप्रतिद्वन्द्व-
भावम् । अन्यद्रव्यानपेक्षं निरुपममितं शा-
स्वतं सर्वकालं उत्कृष्टानन्तसारं परमसुखमत-
स्तस्य सिद्धस्य जातम् ॥७ ॥ नार्थः क्षुत्तृड्-
विनाशाद्विविधरसयुतैरन्नपानैरशुच्या, नास्पृ-
ष्टेर्गन्धमाल्यैर्नहि मृदुशयनैर्ग्लानिनिद्राद्यभा-
वात् । आतङ्कार्तेरभावे तदुपशमनसद्भेषजान-
र्थतावद्, दीपानर्थक्यवद्वा व्यपगततिमिरे दृ-
श्यमाने समस्ते ॥ ८ ॥ तादृक्सम्पत्समेता
विविधनयतपःसंयमज्ञानदृष्टि—चर्यासिद्धाः
समन्तात्प्रविततयशसो विश्वदेवाधिदेवाः ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भूता भव्या भवन्तः सकलजगति ये स्तूयमाना विशिष्टैः, तान्सर्वान्नौम्यनंतान्निजिगमिषुररं तत्स्वरूपं त्रिसन्ध्यम् ॥९॥ कृत्वा कायोत्सर्गं चतुरष्टदोषविरहितं सुपरिशुद्धम्। अतिभक्तिसंप्रयुक्तो यो वंदते स लघु लभते परमसुखम् ॥ १ ॥ इच्छामि भंते सिद्धिभत्ति काउस्सग्गो कओ तस्सालोचेउं सम्मणाणसम्मदंसणसम्मचारित्तजुत्ताणं अट्ठविहकम्मविप्पमुक्काणं अट्ठगुणसंपण्णाणं उद्धलोयमच्छयमि पयट्ठियाणं तवसिद्धाणं णयसिद्धाणं संजमसिद्धाणं अतीताणागदवट्टमाणकालत्तयसिद्धाणं सव्वसिद्धाणं सया णिच्चकालं अंचेमि वंदामि पूजेमि णमंस्सामि दुक्खक्खओ कम्मक्खओ बोहिलाहो सुगइगमणं समाहिमरणं जिणगुण--

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

संपत्ति होउ मज्झं ।

इति सिद्धभक्तिः

श्रीश्रुतभक्तिः

स्तोष्ये संज्ञानानि परोक्षप्रत्यक्षभेदभिन्नानि ॥ लोकालोकविलोकनलोकितसल्लोचनानि सदा ॥१॥ अभिमुखनियमितबोधनमाभिनिबोधिकमनिंद्रियेंद्रियजम् । बह्वाद्यवग्रहादिककृतषट्त्रिंशत् त्रिशतभेदम् ॥ २ ॥ विविधर्द्धिबुद्धिकोष्ठस्फुटबीजपदानुसारिबुद्ध्यधिकं । संभिन्नश्रोतृतया सार्धं श्रुतभाजनं वन्दे ।३। श्रुतमपि जिनवरविहितं गणधररचितं द्व्यनेकभेदस्थम् । अङ्गांगबाह्यभावितमनंतविषयं नमस्यामि ॥ ४ ॥ पर्यायाक्षरपदसंघातप्रतिपत्तिकानुयोगविधीन् । प्राभृतकप्राभृतकं

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्राभृतकं वस्तुपूर्वं च ॥ ५ ॥ तेषां समासतोऽपि च विंशतिभेदान्समश्नुवानं तत्। वंदे द्वादशधोक्तं गंभीरवरशास्त्रपद्धत्या ॥ ६॥ आचारं सूत्रकृतं स्थानं समवायनामधेयं च। व्याख्याप्रज्ञप्तिं च ज्ञातृकथोपासकाध्ययने ॥ ७ ॥ वंदेऽन्तकृद्दशमनुत्तरोपपादिकदशं दशावस्थम्। प्रश्नव्याकरणं हि विपाकसूत्रं च विनमामि ॥ ८ ॥ परिकर्म च सूत्रं च स्तौमि प्रथमानुयोगपूर्वगते। सार्द्धं चूलिकयापि च पंचविधं दृष्टिवादं च ॥९। पूर्वगतं तु चतुर्दशधोदितमुत्पादपूर्वमाद्यमहम्। आग्रायणीयमीडे पुरुषवीर्यानुप्रवादं च ॥ १०॥ संततमहमभिवंदे तथास्तिनास्तिप्रवादपूर्वं च। ज्ञानप्रवादसत्यप्रवादमात्मप्रवादं च ॥ ११ ॥ कर्मप्रवादमीडेऽथ प्रत्याख्याननामधेयं च।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दशमं विद्याधारं पृथुविद्यानुप्रवादं च ॥१२॥
कल्याणनामधेयं प्राणावायं क्रियाविशालं च
। अथ लोकबिंदुसारं वंदे लोकाग्रसारपदं ॥
१३ ॥ दश च चतुर्दश चाष्टावष्टादश च द्व-
योर्द्विषट्कं च ॥ षोडश च विंशतिं च त्रिंशत-
मपि पंचदश च तथा ॥ १४ ॥ वस्तूनि दश
दशान्येष्वनुपूर्वं भाषितानि पूर्वाणाम् । प्रति-
वस्तु प्राभृतकानि विंशतिं विंशतिं नौमि ॥
१५॥ पूर्वांतं ह्यपरान्तं ध्रुवमध्रुवच्यवनलब्धि-
नामानि । अध्रवसंप्रणिधिं चाप्यर्थं भौमाव-
याद्यं च ॥१६॥ सर्वार्थकल्पनीयं ज्ञानमतीतं
त्वनागतं कालम् । सिद्धिमुपाध्यं च तथा च-
तुर्दशवस्तूनि द्वितीयस्य ॥१७॥ पंचमवस्तु-
चतुर्थप्राभृतकस्यानुयोगनामानि । कृतिवे-
दने तथैव स्पर्शनकर्मप्रकृतिमेव ॥ १८॥ बं-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

धननिबंधनप्रक्रमानुपक्रममथाभ्युदयमोक्षै संक्रमलेश्ये च तथा लेश्यायाः कर्मपरिणामौ ।१९। सातमसातं दीर्घं ह्रस्वं भवधारणीयसं- ज्ञं च । पुरुपुद्गलात्मनाम च निधत्तमनिधत्त- मभिनौमि॥२०॥ सनिकाचितमनिकाचितमथ कर्मस्थितिकपाश्चिमस्कंधौ। अल्पबहुत्वं च यजे तद्द्वाराणां चतुर्विंशम् ॥ २१ ॥ कोटीनां द्वादशशतमष्टापंचाशतं सहस्राणाम् । लक्षत्र्य- शीतिमेव च पंच च वंदे श्रुतपदानि ॥२२॥ षोडशशतं चतुस्त्रिंशत्कोटीनां त्र्यशीतिल- क्षाणि । शतसंख्याष्टासप्ततिमष्टाशीतिं च प- दवर्णान् ॥ २३॥ सामायिकं चतुर्विंशतिस्तवं वंदनां प्रतिक्रमणं । वैनायिकं कृतिकर्म च पृथुदशवैकालिकं च तथा ॥२४॥ वरमु- त्तराध्ययनमपि कल्पव्यवहारमेवमभिवंदे ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कल्पाकल्पं स्तौमि महाकल्पं पुंडरीकं च ॥ २५॥ परिपाट्या प्रणिपतितोऽस्म्यहं महापुंडरीकनामैव । निपुणान्यशीतिकं च प्रकीर्णकान्यंगबाह्यानि ॥ २६॥ पुद्गलमर्यादोक्तं प्रत्यक्षं सप्रभेदमवधिं च देशावधिपरमावधिसर्वावधिभेदमभिवंदे ॥२७॥ परमनसि स्थितमर्थं मनसा परिविद्य मंत्रिमहितगुणम् । ऋजुविपुलमतिविकल्पं स्तौमि मनःपर्ययज्ञानम् ॥२८ क्षायिकमनन्तमेकं त्रिकालसर्वार्थयुगपदवभासम् । सकलसुखधाम सततं वंदेऽहं केवलज्ञानम् ॥ २९ ॥ एवमभिष्टुवतो मे ज्ञानानि समस्तलोकचक्षूंषि । लघु भवताज्ज्ञानर्द्धि र्ज्ञानफलं सौख्यमच्यवनम् ॥ ३० ॥

इच्छामि भंते ! सुदभत्तिकाउस्सग्गो कओ तस्स आलोचेउं अंगोवंगपइण्णए पाहुडय-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

परियम्मसुत्तपढमाणिओगपुव्वगयचूलिया चेव सुत्तत्थयथुइ धम्मकहाइयं णिच्चकालं अंचेमि, पूजेमि, वंदामि, णमंसामि, दुक्खक्खओ, कम्मक्खओ बोहिलाहो, सुगइगमणं समाहिमरणं, जिणगुणसंपत्ति होउ मज्झं ।

इति श्रुतभक्तिः

—:०:—

अथ श्रीचारित्रभक्तिः

येनेन्द्रान्भुवनत्रयस्य विलसत्केयूरहारांगदान् । भास्वन्मौलिमणिप्रभाप्रविसरोत्तुंगोत्तमाङ्गान्नतान् ॥ स्वेषां पादपयोरुहेषु मुनयश्चक्रुः प्रकामं सदा । वंदे पंचतयं तमद्य निगदन्नाचारमभ्यर्चितम् ॥ १ ॥ अर्थ-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

व्यंजनतदुभयाविकलताकालोपधाप्रश्रयाः, स्वाचार्याद्यनपन्हवो बहुमतिश्चेत्यष्टधा व्याहृतम् ॥ श्रीमज्ज्ञातिकुलेन्दुना भगवता तीर्थस्य कर्त्राऽञ्जसा। ज्ञानाचारमहं त्रिधा प्रणिपताम्युद्धूतये कर्मणाम् ॥२॥ शंकादृष्टिविमोहकांक्षणाविधिव्यावृत्तिसन्नद्धतां, वात्सल्यं विचिकित्सनादुपरतिं धर्मोपबृंहाक्रियाम्। शक्त्या शासनदीपनं हितपथाद्भ्रष्टस्य संस्थापनम्, वंदे दर्शनगोचरं सुचरितं मूर्ध्ना नमन्नादरात् ॥ ३ ॥ एकान्ते शयनोपवेशनकृतिः संतापनं तानवम्, संख्यावृत्तिनिबन्धनामनशनं विष्वाणमर्द्धोदरम् ॥ त्यागं चेन्द्रियदन्तिनो मदयतः स्वादो रसस्यानिशम्, षोढा बाह्यमहं स्तुवे शिवगतिप्राप्त्यभ्युपायं तपः॥ ४॥ स्वाध्यायः शुभकर्मणश्च्युतवतः सम्प्रत्य-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वस्थापनम्, ध्यानं व्यापृतिरामयाविनि गुरौ
वृद्धे च बाले यतौ। कायोत्सर्जनसत्क्रिया
विनय इत्येवं तपः षड्विधं, वंदेऽभ्यंतरम-
न्तरंगबलवद्विद्वेषिविध्वंसनम् ॥ ५ ॥ सम्य-
ग्ज्ञानविलोचनस्य दधतः श्रद्धानमर्हन्मते,
वीर्यस्याविनिगूहनेन तपसि स्वस्य प्रयत्ना-
द्यतेः ॥ या वृत्तिस्तरणीव नौरविवरा लघ्वी
भवोदन्वतो, वीर्याचारमहं तमूर्जितगुणं वंदे
सतामर्चितम् ॥ ६ ॥ तिस्रः सत्तमगुप्तयस्त-
नुमनोभाषानिमित्तोदयाः, पंचेर्यादिसमा-
श्रयाः समितयः पंचव्रतानीत्यपि ॥ चारित्रो-
पहितं त्रयोदशतयं पूर्वं न दृष्टं परैराचारं प-
रमेष्ठिनो जिनपतेर्वीरं नमामो वयम् ॥ ७ ॥
आचारं सह पंचभेदमुदितं तीर्थं परं मंगलं
, निर्ग्रंथानपि सच्चरित्रमहतो वंदे समग्रान्य-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तीन् ॥ आत्माधीनसुखोदयामनुपमां लक्ष्मीमविध्वंसिनीं, इच्छन्केवलदर्शनावगमनप्राज्यप्रकाशोज्वलाम् ॥ ८ ॥ अज्ञानाद्यदवीवृतं नियमिनोऽवर्तिष्यहं चान्यथा, तस्मिन्नर्जितमस्यति प्रतिनवं चैनो निराकुर्वति ॥ वृत्ते सप्ततयीं निधिं सुतपसामृद्धिं नयत्यद्भुतं, तन्मिथ्या गुरु दुष्कृतं भवतु मे स्वं निंदितो निंदितम् ॥ ९ ॥ संसारव्यसनाहतिप्रचलिता नित्योदयप्रार्थिनः । प्रत्यासन्नविमुक्तयः सुमतयः शांतैनसः प्राणिनः ॥ मोक्षस्यैव कृतं विशालमतुलं सोपानमुच्चैस्तराम्, आरोहन्तु चरित्रमुत्तममिदं जैनेंद्रमोजास्विनः ॥१०॥

इच्छामि भंते चारित्तभत्तिकाउस्सग्गो कओ तस्स आलोचेउं सम्मणाणजोयस्स सम्मत्ताहिट्ठियस्स सव्वपहाणस्स णिव्वाणमग्गस्स

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कम्मणिज्जरफलस्स खमाहारस्स पंचमहव्व-यसंपण्णस्स तिगुत्तिगुत्तस्स पंचसमिदिजुत्तस्स णाणज्झाणसाहणस्स समया इव पवेसयस्स सम्मचारित्तस्स सया अंचेमि, पूजेमि वंदामि णमंसामि, दुक्खक्खओ कम्मक्खओ, बोहिलाहो सुगइगमणं, समाहिमरणं, जिणगुणसंपत्ति होउ मज्झं ।

इति चारित्रभक्तिः

अथ योगभक्तिः

जातिजरोरुरोगमरणातुरशोकसहस्रदीपिताः । दुःसहनरकपतनसन्त्रस्ताधियः प्रतिबुद्धचेतसः । जीवितमंबुबिंदुचपलं तडिदभ्रसमा विभूतयः । सकलमिदं विचिन्त्य मुनयः

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रशमाय वनान्तमाश्रिताः ॥१॥ व्रतसमितिगु-
प्तिसंयुताः शमसुखमाधाय मनसि वीतमोहाः
। ध्यानाध्ययनवशंगताः विशुद्धये कर्मणां
तपश्चरन्ति ॥ २ ॥ दिनकरकिरणनिकरसंत-
प्तशिलानिचयेषु निस्पृहाः । मलपटलावलिप्त-
तनवः शिथिलीकृतकर्मबंधनाः ॥ व्यपगत-
मदनदर्परतिदोषकषायविरक्तमत्सराः । गि-
रिशिखरेषु चंडकिरणाभिमुखास्थितयो दिगं-
बरा ॥ ३ ॥ सज्ज्ञानामृतपायिभिः क्षान्ति–
पयःसिच्यमानपुण्यकायैः । धृतसंतोषच्छ-
त्रकैस्तापस्तीव्रोऽपि सह्यते मुनीन्द्रैः ॥ ४ ॥
शिखिगलकज्जलालिमलिनैर्विबुधाधिपचाप -
चित्रितैः । भीमरवैर्विसृष्टचण्डाशनिशीतल-
वायुवृष्टिभिः ॥ गगनतलं विलोक्य जलदैः
स्थगितं सहसा तपोधनाः । पुनरपि तरुतलेषु

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

विषमासु निशासु विशंकमासते ॥ ५ ॥ जल-धाराशरताडिता न चलन्ति चरित्रतः सदा नृसिंहाः ॥ संसारदुःखभीरवः परीषहाराति-घातिनः प्रवीराः ॥ ६ ॥ अविरतबहलतुहिन-कणवारिभिरंघ्रिपपत्रपातनै—रनवरतमुक्तसीत्-काररवैः परुषैरथानिलैःशोषितगात्रयष्टयः । इह श्रमणा धृतिकंबलावृताः शिशिरनिशां । तु-षारविषमां गमयन्ति चतुःपथे स्थिताः ॥७॥ इति योगत्रयधारिणः सकलतपःशालिनः प्र-वृद्धपुण्यकायाः । परमानंदसुखैषिणः समा-धिमग्र्यं दिशंतु नो भदन्ताः ॥ ८ ॥ गिह्ये गिरिसिहरत्था वरिसायाले रुक्खमूलरयणीसु सिसिरे वाहिरसयणा ते साहू वंदिमो णिच्चं ॥ १ ॥ गिरिकंदरदुर्गेषु ये वसंति दिगंबराः पाणिपात्रपुटाहारास्ते यांति परमां गतिम् ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२ ॥ इच्छामि भंते योगिभत्तिकाउस्सग्गो कओ तस्स लोचेउं अड्ढाइज्जदीवदोस-मुद्देसु पण्णारसकम्मभूमिसु आदावणरुक्ख-मूलअब्भोवासठाणमोणवीरासणेक्कपासकु-क्कुडासण चउछपक्खखवणादियोगजुत्ताणं सव्वसाहूणं वंदामि, णमंसामि, दुक्खक्खओ कम्मक्खओ, बोहिलाहो, सुगइगमणं, समा-हिमरणं जिणगुणसंपत्ति होउ मज्झं ॥

इति योगभक्तिः ।

—:०:—

अथ आचार्यभक्तिः

सिद्धगुणस्तुतिनिरतानुद्धतरुषाग्निजाल-बहुलविशेषान् । गुप्तिभिराभिसंपूर्णान् मुक्ति-युतः सत्यवचनलक्षितभावान् १ मुनिमाहा-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

त्म्यविशेषात् जिनशासनसत्प्रदीपभासुरमूर्तीन् ॥ सिद्धिं प्रपित्सुमनसो बद्धरजोविपुलमूलघातनकुशलान् ॥ २ ॥ गुणमणिविरचितवपुषः षड्द्रव्यविनिश्चितस्य धातॄन्सततम् ॥ रहितप्रमादचर्यान्दर्शनशुद्धान्-गणस्य संतुष्टिकरान् ॥ ३ ॥ मोहच्छिदुग्रतपसः प्रशस्तपरिशुद्धहृदयशोभनव्यवहारान् । प्रासुकनिलयाननघानाशाविध्वंसिचेतसो हतकुपथान् ॥ ४ ॥ धारितविलसन्मुंडान्वर्जितबहुदंडपिंडमंडलनिकरान् ॥ सकलपरीषहजयिनः क्रियाभिरनिशं प्रमादतः परिरहितान् ॥ ५॥ अचलान्व्यपेतनिद्रान्स्थानयुतान्कष्टदुष्टलेश्याहीनान् । विधिनानाश्रितवासानालिप्तदेहान्विनिर्जितेंद्रियकारिणः ।६। अतुलानुत्कुटिकासान्विविक्तचित्तानखंडितस्वाध्यायान् । दाक्षि-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

णभावसमग्रान्व्यपगतमदरागलोभशठमा-
त्सर्यान् ॥७॥ भिन्नार्तरौद्रपक्षान्संभावितधर्म-
शुक्लनिर्मलहृदयान् ॥८॥ नित्यं पिनद्धकुग-
तीन्पुण्यान्गण्योदयान्विलीनगारवचर्यान् ।
तरुमूलयोगयुक्तानवकाशातापयोगरागसना-
थान् । बहुजनहितकरचर्यानभयानघान्म-
हानुभावविधानान् ॥९॥ ईदृशगुणसंपन्नान्यु-
ष्मान्भक्त्या विशालया स्थिरयोगान् विधि-
नानारतमग्र्यान्मुकुलीकृतहस्तकमलशोभि-
तशिरसा ॥१०॥ अभिनौमि सकलकलुषप्र-
भवोदयजन्मजरामरणबंधनमुक्तान् ॥ शि-
वमचलमनघमक्षयमव्याहतमुक्तिसौख्यम-
स्त्विति सततम् ॥११॥ इच्छामि भंते आइ-
रियभत्तिकाउस्सग्गो कओ तस्सालोचेउं
सम्मणाणसम्मदंसणसम्मचारित्तजुत्ताणं

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पंचविहाचाराणं आयरियाणं आयारादिसुद-णाणोवदेसयाणं उवज्झायाणं तिरयणगुण पालनरयाणं सव्वसाहूणं सया अंचेमि, पूजेमि, वंदामि णमंसामि, दुक्खक्खओ, कम्मक्खओ, बोहिलाहो सुगइगमणं, समा-हिमरणं, जिनगुणसंपत्ति होउ मज्झं ।

इति आचार्यभक्तिः

अथ पंचगुरुभक्तिः

श्रीमदमरेन्द्रमुकुटप्रघटितमणिकि-रणवारिधाराभिः । प्रक्षालितपदयुगलान्प्रण-मामि जिनेश्वरान्भक्त्या ।१। अष्टगुणैः समु-पेतान्प्रणष्टदुष्टाष्टकर्मरिपुसमितीन् । सिद्धा-न्सततमनन्तान्नमस्करोमीष्टतुष्टिसंसिद्धयै॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२ साचारश्रुतजलधीन्प्रतीर्य शुद्धोरुचरणनि-
रतानाम्। आचार्याणां पदयुगकमलानि दधे
शिरसि मेऽहम् ॥३॥ मिथ्यावादिमदोग्रध्वा-
न्तप्रध्वंसिवचनसंदर्भान् । उपदेशकान्प्रप-
द्ये मम दुरितारिप्रणाशाय ॥ ४॥ सम्यग्दर्श-
नदीपप्रकाशका मेयबोधसंभूताः । भूरिचारि-
त्रपताकास्ते साधुगणास्तु मां पान्तु ॥ ५ ॥
जिनसिद्धसूरिदेशकसाधुवरानमलगुणगणो-
पेतान् । पंचनमस्कारपदैस्त्रिसंध्यमभिनौमि
मोक्षलाभाय ॥ ६ ॥ एष पंचनमस्कारः
सर्वपापप्रणाशनः । मंगलानां च सर्वेषां प्र-
थमं मंगलं भवेत् ॥७॥ अर्हत्सिद्धाचार्योपा-
ध्यायाः सर्वसाधवः । कुर्वन्तु मंगलाः सार्वे
निर्वाणपरमाश्रियम् ॥ ८ ॥ सार्वान् जिनेन्द्र-
चन्द्रान्सिद्धानाचार्यपाठकान् साधून् । रत्न-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

त्रयं च वन्दे रत्नत्रयसिद्धये भक्त्या ॥ ९ ॥
पान्तु श्रीपादपद्मानि पंचानां परमेष्ठिनाम् ।
लालितानि सुराधीशचूडामणिमरीचिभिः ॥
१० ॥ प्रातिहार्यैर्जिनान् सिद्धान् गुणैः सूरी
न् स्वमातृभिः । पाठकान् विनयैः साधून्
योगांगैरष्टभिः स्तुवे ॥ ११ ॥ इच्छामि भंते
पंचमहागुरुभत्तिकाउस्सग्गो कओ तस्सालो-
चेउं अट्ठमहापाडिहेरसंजुत्ताणं अरहंताणं,
अट्ठगुणसंपण्णाणं उड्ढलोयमत्थयम्मि पइट्ठि-
याणं सिद्धाणं, अट्ठपवयणमउसंजुत्ताणं,
आयरियाणं, आयारादिसुदणाणोवदेसयाणं
उवज्झायाणं, तिरयणगुणपालणरयाणं सव्व-
साहूणं, णिच्चकालं अंचेमि, पूजेमि, वंदामि
णमंसामि, दुक्खक्खओ, कम्मक्खओ बोहि-
लाहो, सुगइगमणं, समाहिमरणं, जिणगु-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

णसंपत्ति होउ मज्झं ।

इति पंचगुरुभक्तिः ।

अथ तीर्थंकरभक्तिः

अथ देवसियपडिक्कमणाए सव्वाइच्चार-विसोहिणिमित्तं पुव्वाइरियकमेण चउवीसतित्थयरभत्तिकाउस्सग्गं करोमि ॥ चउवीसं तित्थयरे उसहाईवीरपच्छिमे वंदे । सव्वेसिं मुणिगणहरसिद्धे सिरसा णमंसामि ॥ १ ॥ ये लोकेऽष्टसहस्रलक्षणधरा ज्ञेयार्णवांतर्गता-, ये सम्यग्भवजालहेतुमथनाश्चं-द्रार्कतेजोधिकाः ॥ ये साध्विंद्रसुराप्सरोगणशतैर्गीतप्रणुत्यार्चिताः, तान्देवान्वृषभादि-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वीरचरमान्भक्त्या नमस्याम्यहम् ।२। नाभेयं देवपूज्यं जिनवरमजितं सर्वलोकप्रदीपम्, सर्वज्ञं संभवाख्यं मुनिगणवृषभं नंदनं देवदेवम् ॥ कर्मारिघ्नं सुबुद्धिं वरकमलनिभं पद्मपुष्पाभिगंधम्, क्षान्तं दांतं सुपार्श्वं सकलशशिनिभं चंद्रनामानमीडे ॥३॥ विख्यातं पुष्पदंतं भवभयमथनं शीतलं लोकनाथम्, श्रेयांसं शीलकोशं प्रवरनरगुरुं वासुपूज्यं सुपूज्यम् । मुक्तं दान्तेन्द्रियाश्वं विमलमृषिपतिं सिंहसैन्यं मुनीन्द्रम्, धर्मं सद्धर्मकेतुं शमदमनिलयं स्तौमि शान्तिं शरण्यम् ॥ ४ ॥ कुंथुं सिद्धालयस्थं श्रमणपतिमरं त्यक्तभोगेषु चक्रम् । मल्लिं विख्यातगोत्रं खचरगणनुतं सुव्रतं सौख्यराशिम् । देवेन्द्राच्यं नमीशं हरिकुलतिलकं नेमीचन्द्रं भवान्तम्, पार्श्वं ना-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

गेन्द्रवन्द्यं शरणमहमितो वर्द्धमानं च भक्त्या ॥ ५ ॥ इच्छामि भंते चउवीसतित्थयरभत्तिकाउस्सग्गो कओ तस्सालोचेउं, पंचमहाकल्लाणसंपण्णाणं अट्ठमहापाडिहेरसहियाणं चउतीसअतिसयविसेससंजुत्ताणं, बत्तीसदेविंदमणिमउडमत्थयमहियाणं, बलदेववासुदेवचक्कहररिसिमुणिजइअणगारोवगूढाणं, थुइसयसहस्सणिलयाणं, उसहाइ—वीरपच्छिममंगलमहापुरिसाणं णिच्चकालं अंचेमि, पुज्जेमि, वंदामि णमंसामि, दुक्खक्खओ, कम्मक्खओ, बोहिलाहो सुगइगमणं, समाहिमरणं, जिणगुणसंपत्ति होउ मज्झं ।

इति तीर्थंकरभक्तिः

—०—

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अथ शान्तिभक्तिः

न स्नेहाच्छरणं प्रयान्ति भगवन्पादद्वयं ते प्रजाः, हेतुस्तत्र विचित्रदुःखनिचयः संसारघोरार्णवः ॥ अत्यंतस्फुरदुग्ररश्मिनिकरव्याकीर्णभूमंडलो, ग्रैष्मः कारयतीन्दुपादसलिलच्छायानुरागं रविः ॥ १ ॥ क्रुद्धाशीविषदष्टदुर्जयविषज्वालावलीविक्रमो, विद्याभैषजमंत्रतोयहवनैर्याति प्रशांतिं यथा ॥ तद्वत्ते चरणारुणांबुजयुगस्तोत्रोन्मुखानां नृणाम्, विघ्नाः कायविनायकाश्च सहसा शाम्यन्त्यहो विस्मयः ॥ २ ॥ संतप्तोत्तमकांचनक्षितिधरश्रीस्पर्द्धिगौरद्युते, पुंसां त्वच्चरणप्रणामकरणात्पीडाः प्रयान्ति क्षयं ॥ उद्यद्भास्करविस्फुरत्करशतव्याघातनिष्कासिता ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नानादेहिविलोचनद्युतिहरा शीघ्रं यथा शर्वरी ॥ ३ ॥ त्रैलोक्येश्वरभंगलब्धविजयादत्यंतरौद्रात्मकान्, नानाजन्मशतांतरेषु पुरतो जीवस्य संसारिणः ॥ को वा प्रस्खलतीह केन विधिना कालोग्रदावानला- न्न स्या-न्चेत्तव पादपद्मयुगलस्तुत्यापगावारणम् ॥४॥ लोकालोकनिरंतरप्रविततज्ञानैकमूर्ते विभो ! नानारत्नपिनद्धदंडरुचिरश्वेतातपत्रत्रय ॥ त्वत्पादद्वयपूतगीतरवतः शीघ्रं द्रवन्त्यामया, दर्पाध्मातमृगेंद्रभीमनिनदाद्वन्या यथा कुंजराः ॥ ५ ॥ दिव्यस्त्रीनयनाभिरामविपुल- श्रीमेरुचूडामणे, भास्वद्बालदिवाकरद्युतिहर प्राणीष्टभामंडल ॥ अव्याबाधमचिन्त्यसारमतुलं त्यक्तोपमं शाश्वतं, सौख्यं त्वच्चरणारविंदयुगलस्तुत्यैव संप्राप्यते ॥ ६ ॥ याव-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

न्नोदयते प्रभापरिकरः श्रीभास्करो भासयं-
स्तावद्धारयतीह पंकजवनं निद्रातिभारश्र-
मम् ॥ यावत्त्वच्चरणद्वयस्य भगवन्न स्यात्प्र-
सादोदयस्तावज्जीवनिकाय एष वहति प्रा-
येण पापं महत् ॥७॥ शान्तिं शान्तिजिनेन्द्र
शांतमनसस्त्वत्पादपद्माश्रयात् संप्राप्ताःपृथि-
वीतलेषु बहवः शान्त्यर्थिनः प्राणिनः॥ कारु-
ण्यान्मम भाक्तिकस्य च विभो दृष्टिं प्रसन्नां
कुरु । त्वत्पादद्वयदैवतस्य गदतः शांत्यष्टकं
भक्तितः ॥ ८ ॥ शांतिजिनं शशिनिर्मलव-
क्त्रं शीलगुणव्रतसंयमपात्रं । अष्टशतार्चि-
तलक्षणगात्रं नौमि जिनोत्तममंबुजनेत्रम् ॥
९ ॥ पंचममीप्सितचक्रधराणां पूजितमिन्द्र-
नरेंद्रगणैश्च । शांतिकरं गणशांतिमभीप्सुः
षोडशतीर्थकरं प्रणमामि ॥ १० ॥ दिव्यत-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

रुः सुरपुष्पसुवृष्टिर्दुन्दुभिरासनयोजनघोषौ ॥ आतपवारणचामरयुग्मे यस्य विभाति च मं-डलतेजः ॥ ११ ॥ तं जगदर्चितशान्तिजिनेन्द्रं शांतिकरं शिरसा प्रणमामि । सर्वगणाय तु यच्छतु शान्तिं मह्यमरं पठते परमां च । १२ ॥ येऽभ्यर्चिता मुकुटकुंडलहाररत्नैः, शक्रादिभिः सुरगणैः स्तुतपादपद्माः ॥ ते मे जिनाः प्रवरवंशजगत्प्रदीपाः, तीर्थंकराः सततशांतिकरा भवंतु ॥ १३॥ संपूजकानां प्रतिपालकानां यतींद्रसामान्यतपोधनानाम् । देशस्य राष्ट्रस्य पुरस्य राज्ञः करोतु शांतिं भगवान् जिनेंद्रः ॥ १४ ॥ क्षेमं सर्वप्रजानां प्रभवतु बलवान्धार्मिको भूमिपालः । काले काले च सम्यग्वर्षतु मघवा व्याधयो यान्तु नाशम् । दुर्भिक्षं चौरमारिः क्षणमपि जग-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तां मास्म भूज्जीवलोके ॥ जैनेन्द्रं धर्मचक्रं प्रभवतु सततं सर्वसौख्यप्रदायि ॥ १५ ॥ तद्द्रव्यमव्ययमुदेतु शुभः स देशः संतन्य तां प्रतपतां सततं स कालः ॥ भावः स नन्दतु सदा यदनुग्रहेण। रत्नत्रयं प्रतपतीह मुमुक्षुवर्गे ॥ १५ ॥ प्रध्वस्तघातिकर्माणः केवलज्ञानभास्कराः ॥ कुर्वन्तु जगतां शान्तिं वृषभाद्या जिनेश्वराः ।१६। * इच्छामि भंते

---

* शांतिः शिरोधृतजिनेश्वरशासनानां । शांतिर्निरन्तरतपोऽभवभावितानाम् ॥ शांतिः कषायजयजृंभितवैभवानां, शांतिः स्वभावमहिमानमुपागतानाम् ॥ १ ॥ जीवंतु संयमसुधारसपानतृप्ताः, नंदंतु शुद्धसहसोदयसुप्रसन्नाः ॥ सिध्यंतु सिद्धिसुखसंगकृताभियोगाः, तीव्रं तपंतु जगतां त्रितयेऽर्हदाज्ञाः ॥ २ ॥ शांतिः शं तनुतां समस्तजगतः संगच्छतां धार्मिकः, श्रेयः श्रीः परिवर्धतां नयधरा धुर्यो धरित्रीपतिः ॥ सद्विद्यारसमुद्गिरंतु

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

शान्तिभत्तिकाउस्सग्गो कओ तस्सालोचेउं पंचमहाकल्लाणसंपण्णाणं, अट्ठमहापाडिहेरसहियाणं, चउतीसातिसयविसेससंजुत्ताणं बत्तीसदेवेंदमणिमयमउडमत्थयमहियाणं, बलदेववासुदेवचक्कहररिसिमुणिजदिअणगारोवगूढाणं, थुइसयसहस्सणिलयाणं, उसहाइवीरपच्छिममंगलमहापुरिसाणं णिच्चकालं अंचेमि, पूजेमि, वंदामि, णमंसामि, दुक्खक्खओ, कम्मक्खओ, बोहिलाहो, सुगइगमणं, समाहिमरणं, जिणगुणसंपत्ति, होउ मज्झं॥

इति शांतिभक्तिः

कवयो नामाप्यघस्यास्तु मा । प्रार्थ्यं वा कियदेक एव शिवकृद्धर्मो जयत्वर्हताम् ॥ ३ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अथ समाधिभक्तिः

स्वात्माभिमुखसंवित्तिलक्षणं श्रुतचक्षुषा । पश्यन्पश्यामि देव त्वां केवलज्ञानचक्षुषा ॥ १॥* शास्त्राभ्यासो जिनपतिनुतिः संगतिः सर्वदार्यैः, सद्वृत्तानां गुणगणकथा दोषवादे च मौनम् ॥ सर्वस्यापि प्रियहितवचो भावना चात्मतत्त्वे, संपद्यंतां मम भवभवे याव-द्तेऽपवर्गः ॥ २ ॥ जैनमार्गरुचिरन्यमार्गनि-

---

* व्युत्सृज्य दोषान्निःशेषान्सद्ध्याने स्यात्तनूत्सृतौ । सहेता-प्युपसर्गोर्मीन् कर्मैवं भिद्यतेतरां ॥ १ ॥ ध्यानाशुशुक्षुणा विद्धे मनोरुत्विक्समाहितः । स्वकर्मसमिधो भावसर्पिषा जुहुमोऽधुना ॥ २ ॥ अहमेवाहमित्यात्मज्ञानादन्यत्र चेतनां । इदमस्मि-करोमीदमिदं भुंज इति क्षिपेत् ॥ ३ ॥ अहमेवाहमित्यन्तर्ज-ल्पसंपृक्तकल्पनां । त्यक्त्वाऽवाग्गोचरं ज्योतिः स्वयं पश्यामि

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

निर्वेगता जिनगुणस्तुतौ मतिः । निष्कलंकविमलोक्तिभावनाः संभवन्तु मम जन्मजन्मनि ॥३॥ गुरुमूले यतिनिचिते चैत्यसिद्धांतवार्धिसद्घोषे ॥ मम भवतु जन्मजन्मनि सन्यसनसमन्वितं मरणम् ॥ ४ ॥ जन्मजन्मकृतं पापं जन्मकोटिसमार्जितम् ॥ जन्ममृत्युजरामूलं हन्यते जिनवंदनात् ॥ ५ ॥ आबाल्याज्जिनदेवदेव भवतः श्रीपादयोः सेवया । सेवासक्तविनेयकल्पलतया कालोद्ययावद्गतः त्वां तस्याः फलमर्थये तदधुना प्राणप्रयाणक्षणे । त्वन्नामप्रतिबद्धवर्णपठने कण्ठोऽस्त्व-

---

शाश्वतन् ॥ ४ ॥ अमुह्यंतमरज्यंतमद्विषंतं च यः स्वयं । शुद्धे निधत्ते स्वे शुद्धमुपयोगं स शुद्ध्यति ॥ ५ ॥ बोधिसमाधिविशुद्धस्वाचिदुपलब्ध्युच्छलत्प्रमोदभराः । ब्रह्म विदंति परं ये ते सद्गुरवो मम प्रसीदंतु ॥ ६ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कुण्ठो मम ॥६॥ तव पादौ मम हृदये मम हृदयं तव पदद्वये लीनम् । तिष्ठतु जिनेन्द्र तावद्यावन्निर्वाणसंप्राप्तिः ।७। एकापि समर्थेयं जिनभक्तिर्दुर्गतिं निवारयितुम् । पुण्यानि च पूरयितुं दातुं मुक्तिश्रियं कृतिनः ॥ ८ ॥ पंच अरिंजयणामे पंचय मदिसायरे जिणे वंदे । पंच जसोधर णामये पंचय सीमंदरे वंदे ॥९॥ रयणत्तयं च वंदे चउवीसजिणे च सव्वदा वंदे ॥ पंचगुरूणं वंदे चारणचरणं सदा वंदे ॥ १० ॥ अर्हमित्यक्षरब्रह्मवाचकं परमेष्ठिनः । सिद्धचक्रस्य सद्बीजं सर्वतः प्रणिदध्महे ॥ ११ ॥ कर्माष्टकविनिर्मुक्तं मोक्षलक्ष्मीनिकेतनम् । सम्यक्त्वादिगुणोपेतं सिद्धचक्रं नमाम्यहम् ॥ १२ ॥ आकृष्टिं सुरसंपदां विदधते मुक्तिश्रियो वश्यतां । उच्चा-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

टं विपदां चतुर्गतिभुवां विद्वेषमात्मैनसाम्॥ स्तंभं दुर्गमनं प्रति प्रयततो मोहस्य सम्मोहनम्-, पायात्पंचनमस्क्रियाक्षरमयी साराधना देवता ॥ १३ ॥ अनंतानन्तसंसार-संततिच्छेदकारणम् ॥ जिनराजपदाम्भोज-स्मरणं शरणं मम ॥ १४ ॥ अन्यथा शरणं नास्ति त्वमेव शरणं मम ॥ तस्मात्कारुण्य-भावेन रक्ष रक्ष जिनेश्वर ॥ १५ ॥ नाहि त्राता नाहि त्राता नाहि त्राता जगत्त्रये ॥ वीतरागात्परो देवो न भूतो न भविष्यति ॥ १६॥ जिने भक्तिर्जिनें भक्तिर्जिने भक्तिर्दिने दिने ॥ सदा मेऽस्तु सदा मेऽस्तु सदा मेऽस्तु भवे भवे ॥ १७ ॥ याचेऽहं याचेऽहं जिन तव चरणारविन्दयोर्भक्तिम् । याचेऽहं याचेऽहं पुनरपि तामेव तामेव ॥ १८ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

विघ्नौघाः प्रलयं यांति शाकिनीभूतपन्नगाः ।
विषं निर्विषतां याति स्तूयमाने जिनेश्वरे ॥ १९ ॥

इच्छामि भंते समाहिभत्तिकाउस्सग्गो कओ तस्सालोचेउं, रयणत्तयपरूवपरमप्पज्झाण-लक्खणं समाहिभत्तीये णिच्चकालं अंचेमि, पूजेमि, वंदामि, णमंसामि, दुक्खक्खओ, कम्मक्खओ बोहिलाहो, सुगइगमणं, समा-हिमरणं, जिणगुणसंपत्ति होउ मज्झं ।

इति समाधिभक्तिः ।

अथ निर्वाणभक्तिः

विबुधपतिखगपनरपतिधनदोरगभूतयक्ष-पतिमहितम् ॥ अतुलसुखविमलनिरुपमशि-वमचलमनामयं हि संप्राप्तम् ॥ १ ॥ कल्या-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

णैः संस्तोष्ये पंचभिरनघं त्रिलोकपरमगुरुम् । भव्यजनतुष्टिजननैर्दुरवापैः सन्मतिं भक्त्या ॥२॥ आषाढसुसितषष्ठ्यां हस्तोत्तरमध्यमाश्रिते शशिनि । आयातः स्वर्गसुखं भुक्त्वा पुष्पोत्तराधीशः ॥ ३ ॥ सिद्धार्थनृपतितनयो भारतवास्ये विदेहकुंडपुरे । देव्यां प्रियकारिण्यां सुस्वप्नान्संप्रदर्श्य विभुः ॥४॥ चैत्रसितपक्षफाल्गुनि शशांकयोगे दिने त्रयोदश्याम् ॥ जज्ञे स्वोच्चस्थेषु ग्रहेषु सौम्येषु शुभलग्ने॥५॥ हस्ताश्रिते शशांके चैत्रज्योत्स्ने चतुर्दशीदिवसे । पूर्वाण्हे रत्नघटैर्विबुधेन्द्राश्चक्रुराभिषेकम् ॥६॥ भुक्त्वा कुमारकाले त्रिंशद्वर्षाण्यनंतगुणराशिः । अमरोपनीतभोगान्सहसाभिनिबोधितोऽन्येद्युः ॥ ७ ॥ नानाविधरूपचितां विचित्रकूटोच्छ्रितां मणिवि-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भूषाम् । चंद्रप्रभाख्यशिबिकामारुह्य पुराद्वि-
निःक्रान्तः ॥ ८ ॥ मार्गशिरकृष्णदशमीह-
स्तोत्तरमध्यमाश्रिते सोमे । षष्ठेन त्वपराह्णे
भक्तेन जिनः प्रवव्राज ॥ ९ ॥ ग्रामपुरखेट-
कर्वटमटंबघोषाकरान्प्रविजहार । उग्रैस्तपो-
विधानैर्द्वादशवर्षाण्यमरपूज्यः ॥ १० ॥ ऋ-
जुकूलायास्तीरे शालद्रुमसंश्रिते शिलापट्टे ।
अपराह्णे षष्ठेनास्थितस्य खलु जृंभिकाग्रामे
॥ ११ ॥ वैशाखसितदशम्यां हस्तोत्तरमध्य-
माश्रिते चंद्रे । क्षपकश्रेण्यारूढस्योत्पन्नं के-
वलज्ञानम् ॥ १२ ॥ अथ भगवान् संप्राप-
द्दिव्यं वैभारपर्वतं रम्यम् । चातुर्वर्ण्यसु-
संघस्तत्राभूद्गौतमप्रभृति ॥१३॥ छत्राशोकौ
घोषं सिंहासनदुंदुभी कुसुमवृष्टिम् । वरचा-
मरभामंडलदिव्यान्यन्यानि चावापत् ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१४ ॥ दशविधमनगाराणामेकादशधोत्तरं त-
था धर्मम् । देशयमानो व्यहरत्त्रिंशद्वर्षाण्यथ
जिनेन्द्रः ॥ १५ ॥ पद्मवनदीर्घिकाकुलविवि-
धद्रुमखण्डमण्डिते रम्ये । पावानगरोद्याने
व्युत्सर्गेण स्थितः स मुनिः ॥ १६ ॥ का-
र्तिककृष्णस्यान्ते स्वातावृक्षे निहत्य कर्मरजः
। अवशेषं संप्रापद्व्यजरामरमक्षयं सौख्यम्
॥१७॥ परिनिर्वृतं जिनेन्द्रं ज्ञात्वा विबुधा ह्य-
थाशु चागम्य । देवतरुरक्तचंदनकालागुरुसुर
भिगोशीर्षैः ॥१८॥ अग्नीन्द्राज्जिनदेहं मुकुटा-
नलसुरभिधूपवरमाल्यैः । अभ्यर्च्य गणधरा-
नपि गता दिवं खं च वनभवने ॥ १९ ॥
इत्येवं भगवति वर्धमानचंद्रे, यः स्तोत्रं पठ-
ति सुसंध्ययोर्द्वयोर्हि ॥ सोऽनंतं परमसुखं
नृदेवलोके भुक्त्वांते शिवपदमक्षयं प्रयाति

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

॥ २० ॥ यत्रार्हतां गणभृतां श्रुतपारगाणां । निर्वाणभूमिरिह भारतवर्षजानाम् ॥ तामद्य शुद्धमनसा क्रियया वचोभिः । संस्तोतुमुद्यतमतिः परिणौमि भक्त्या ॥२१॥ कैलासशैलशिखरे परिनिर्वृतोऽसौ । शैलेशिभावमुपपद्य वृषो महात्मा ॥ चंपापुरे च वसुपूज्यसुतः सुधीमान्, सिद्धिं परामुपगतो गतरागबंधः ॥ २२ ॥ यत्प्रार्थ्यते शिवमयं विबुधेश्वराद्यैः, पाखंडिभिश्च परमार्थगवेषशीलैः ॥ नष्टाष्टकर्मसमये तदरिष्टनेमिः, संप्राप्तवान् क्षितिधरे बृहदूर्जयन्ते ॥ २३ ॥ पावापुरस्य बहिरुन्नतभूमिदेशे, पद्मोत्पलाकुलवतां सरसां हि मध्ये ॥ श्रीवर्द्धमानजिनदेव इति प्रतीतो, निर्वाणमाप भगवान्प्रविधूतपाप्मा ॥ २४ ॥ शेषास्तु ते जिनवरा जितमोहमल्ला,

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ज्ञानार्कभूरिकिरणैरवभास्य लोकान् ॥ स्थानं परं निरवधारितसौख्यनिष्ठं, सम्मेदपर्वततले समवापुरीशाः ॥ २५ ॥ आद्यश्चतुर्दशदिनै-र्विनिवृत्तयोगः, षष्ठेन निष्ठितकृतिर्जिनवर्द्ध-मानः ॥ शेषा विधूतघनकर्मनिबद्धपाशाः, मासेन ते यतिवरास्त्वभवन्वियोगाः ॥२६॥ माल्यानि वाक्स्तुतिमयैः कुसुमैः सुदब्धा-न्यादाय मानसकरैरभितः किरंतः ॥ पर्येम आदृतियुता भगवन्निषद्याः, संप्रार्थिता वय-मिमे परमां गतिं ताः ॥ २७ ॥ शत्रुंजये न-गवरे दमितारिपक्षाः, पंडोः सुताः परमनि-र्वृतिमभ्युपेताः ॥ तुंग्यां तु संगरहितो बल-भद्रनामा, नद्यास्तटे जितरिपुश्च सुवर्णभद्रः ॥ २८ ॥ द्रोणीमति प्रबलकुंडलमेंढ्रके च, वैभारपर्वततले वरसिद्धकूटे ॥ ऋष्याद्रिके च

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

विपुलाद्रिबलाहके च, विंध्ये च पौदनपुरे वृषदीपके च ॥२९॥ सह्याचले च हिमवत्यपि सुप्रतिष्ठे, दंडात्मके गजपथे पृथुसारयष्टौ ॥ ये साधवो हतमलाः सुगतिं प्रयाताः, स्थानानि तानि जगति प्रथितान्यभूवन् ॥ ३० ॥ इक्षोर्विकाररसपृक्तगुणेन लोके, पिष्टोऽधिकां मधुरतामुपयाति यद्वत् ॥ तद्वच्च पुण्यपुरुषैरुषितानि नित्यं, स्थानानि तानि जगतामिह पावनानि ॥ ३१ ॥ इत्यर्हतां शमवतां च महामुनीनां, प्रोक्ता मयात्र परिनिर्वृतिभूमिदेशाः ॥ ते मे जिना जितभया मुनयश्च शांताः, दिश्यासुराशु सुगतिं निरवद्यसौख्याम् ॥ ३२ ॥ कैलासाद्रौ मुनींद्रः पुरुरपदुरितो मुक्तिमाप प्रणूतः, चंपायां वासुपूज्यस्त्रिदशपतिनुतो नेमिरप्यूर्जयंते ॥ पावायां

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वर्धमानास्त्रिभुवनगुरवो विंशतिस्तीर्थनाथाः, सम्मेदाग्रे प्रजग्मुर्ददतु विनमतां निर्वृतिं नो जिनेंद्राः ॥ ३३ ॥ गौर्गजोऽश्वः कपिः कोकः सरोजः स्वस्तिकः शशी । मकरः श्रीयुतो वृक्षो गंडो महिषसूकरौ ॥३४॥ सेधा वज्रमृगच्छागाः पाठीनः कलशस्तथा ॥ कच्छपश्चोत्पलं शंखो नागराजश्च केसरी ॥३५॥ शांति कुंथ्वरकौरव्या यादवौ नेमिसुव्रतौ । उग्रनाथौ पार्श्ववीरौ शेषा इक्ष्वाकुवंशजाः ॥३६॥

इच्छामि भंते परिणिव्वाणभत्ति काउस्सग्गो कओ तस्सालोचेउं, इमम्मि अवसप्पिणीये, चउत्थसमयस्स पच्छिमे भाए, आउट्ठमासहीणे, वासचउक्कम्मि सेसकालम्मि, पावाये णयरीए, कत्तियमासस्स किण्हचउदसिए, रत्तीए सादीए णक्खत्ते, पच्चूसे, भ-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

यवदो महदि महावीरो वड्ढमाणो सिद्धिं गदो। तिसुवि लोएसु, भवणवासियवाणविंतरजोयिसियकप्पवासियत्ति चउव्विहा देवा सपरिवारा दिव्वेण गंधेण, दिव्वेण पुप्फेण, दिव्वेण धूवेण, दिव्वेण चुण्णेण, दिव्वेण वासेण, दिव्वेण ण्हाणेण, णिच्चकालं, अच्चंति, पूजंति, वंदंति, णमंसंति, परिणिव्वाण, महाकल्लाणपुज्जं करंति, अहमवि इह संतो तत्थ संताइयं णिच्चकालं अंचेमि, पूजेमि, वंदामि, णमंसामि, दुक्खक्खओ, कम्मक्खओ, बोहिलाहो, सुगइगमणं, समाहिमरणं जिणगुणसंपत्ति, होउ मज्झं ॥

इति निर्वाणभक्तिः।

—:०:—

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अथ नंदीश्वरभक्तिः

त्रिदशपतिमुकुटतटगतमणिगण—करनि-
करसलिलधाराधौत— क्रमकमलयुगलजिन-
पतिरुचिर-प्रतिबिंबाविलयविरहितनिलयान्॥
१॥ निलयानहमिह महसां सहसा-प्रणिप-
तनपूर्वमवनौम्यवनौ। त्रय्यां त्रय्या शुद्ध्या
निसर्ग-शुद्धान्विशुद्धये घनरजसाम्॥ २॥
भावनसुरभवनेषु द्वासप्ततिशतसहस्रसंख्या-
भ्यधिकाः। कोट्यः सप्त प्रोक्ता भवनानां
भूरितेजसां भुवनानाम्॥ ३॥ त्रिभुवनभू-
तविभूनां संख्यातीतान्यसंख्यगुणयुक्तानि॥
त्रिभुवनजननयनमनःप्रियाणि भवनानि
भौमविबुधनुतानि ॥ ४॥ यावन्ति सन्ति
कान्तज्योतिर्लोकाधिदेवताभिनुतानि, कल्पे-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ऽनेकविकल्पे कल्पातीतेऽहमिन्द्रकल्पानल्पे ॥ विंशतिरथ त्रिसहिता सहस्रगुणिता च सप्तनवतिः प्रोक्ता, चतुरधिकाशीतिरतः पंचक—शून्येन विनिहतान्यनघानि ॥ ५ ॥ अष्टापंचाशदतश्चतुःशतानीह मानुषे च क्षेत्रे ॥ लोकालोकविभागप्रलोकनालोकसंयुजां जयभाजाम् ॥६॥ नवनवचतुःशतानि च सप्त च नवतिः सहस्रगुणिताः षट् च, पंचाशत्पंचवियत्प्रहताः पुनरत्र कोटयोऽष्टौ प्रोक्ताः ॥ एतावंत्येव सतामकृत्रिमाण्यथ जिनेशिनां भवनानि । भुवनत्रितये त्रिभुवनसुरसमितिसमर्च्यमानसत्प्रतिमानि ॥ ७ ॥ वक्षाररुचककुंडलरौप्यनगोत्तरकुलेषुकारनगेषु । कुरुषु च जिनभवनानि त्रिशतान्यधिकानि तानि षड्विंशत्या ॥८॥ नंदीश्वरसद्द्वीपे नंदीश्वर-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जलधिपरिवृते धृतशोभे । चंद्रकरनिकरसं-
निभरुन्द्रयशोविततदिङ्महीमंडलके ॥ ९
॥ तत्रत्यांजनदधिमुखरतिकरपुरुनगवरा-
ख्यपर्वतमुख्याः । प्रतिदिशमेषामुपरि त्रयो-
दशेन्द्रार्चितानि जिनभवनानि ॥ १० ॥ आ-
षाढकार्तिकाख्ये फाल्गुनमासे च शुक्लपक्षे-
ऽष्टम्याः । आरभ्याष्टदिनेषु च सौधर्मप्रमु-
खविबुधपतयो भक्त्या ॥ ११ ॥ तेषु महाम-
हमुचितं प्रचुराक्षतगंधपुष्पधूपैर्दिव्यैः । सर्व-
ज्ञप्रतिमानामप्रतिमानां प्रकुर्वते सर्वहितम्
॥ १२ ॥ भेदेन वर्णना का सौधर्मः स्नपन-
कर्तृतामापन्नः । परिचारकभावमिताः शेषे -
न्द्रा रुन्द्रचंद्रनिर्मलयशसः ॥ १३ ॥ मंगल-
पात्राणि पुनस्तद्देव्यो बिभ्रति स्म शुभ्रगुणा-
ढ्याः । अप्सरसो नर्तक्यः शेषसुरास्तत्र

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

लोकनाथपथाधिपः ॥ १४ ॥ वाचस्पतेर्वाचा-
मपि गोचरतांसं व्यतीत्य यत्क्रममाणम् ॥
विबुधपतिविहितविभवं मानुषमात्रस्य कस्य
शक्तिः स्तोतुम् ॥ १५ ॥ निष्ठापिताजिनपू-
जाश्चूर्णस्नपनेन दृष्टविकृतविशेषाः । सुरप-
तयो नंदीश्वरजिनभवनानि प्रदक्षिणीकृत्य
पुनः ॥ १६ ॥ पंचसु मंदरगिरिषु श्रीभद्रशा-
लनंदनसौमनसम् । पांडुकवनमिति तेषु प्र-
त्येकं जिनगृहाणि चत्वार्येव ॥१७॥ तान्यथ
परीत्य तानि च नमसित्वा कृतसुपूजनास्त-
त्रापि । स्वास्पदमीयुः सर्वे स्वास्पदमूल्यं
स्वचेष्टया संगृह्य ॥ १८ ॥ सहतोरणसद्वेदी-
परीतवनयागवृक्षमानस्तंभ-। ध्वजपंक्तिदश-
कगोपुरचतुष्टयत्रितयशालमंडपवर्यैः ॥ १९॥
अभिषेकप्रेक्षणिका क्रीडनसंगीतनाटकालो-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कगृहैः । शिल्पिविकल्पितकल्पनसंपल्पातीतकल्पनैः समुपेतैः ॥ २० ॥ वापीसत्पुष्करिणीसुदीर्घिकाद्यंबुसंस्तृतैः समुपेतैः । विकसितजलरुहकुसुमैर्नभस्यमानैः शशिग्रहर्क्षैः शरदि ॥ २१ ॥ भृंगाराब्दककलशाद्युपकरणैरष्टशतकपरिसंख्यानैः । प्रत्येकं चित्रगुणैः कृतझणझणनिनदवितघंटाजालैः ॥ २२ ॥ प्रविभाजंते नित्यं हिरण्मयानीश्वरेशिनां भवनानि । गंधकुटीगतमृगपतिविष्टररुचिराणि विविधविभवयुतानि ॥ २३ ॥ येषु जिनानां प्रतिमाः पंचशतशरासनोच्छ्रिताः सत्प्रतिमाः । मणिकनकरजतविकृता दिनकरकोटिप्रभाधिकप्रभदेहाः ॥ तानि सदा वंदेऽहं भानुप्रतिमानि यानि कानि च तानि । यशसां महसां प्रतिदिशमतिशयशोभावि-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भांजि पापविभांजि ॥ २४ ॥ सप्तत्यधिकशत-
प्रियधर्मक्षेत्रगततीर्थकरवरवृषभान् । भूतभ-
विष्यत्संप्रतिकालभवान्भवविहानये विनतो-
ऽस्मि ।.२५॥ अस्यामवसर्पिण्यां वृषभजिनः
प्रथमतीर्थकर्ता भर्ता । अष्टापदगिरिमस्तक-
गतस्थितो मुक्तिमाप पापान्मुक्तः ॥ २६ ॥
श्रीवासुपूज्यभगवान् शिवासु पूजासु पूजि-
तस्त्रिदशानां । चंपायां दुरितहरः परमपदं
प्रापदापदामन्तगतः ॥ २७ ॥ मुदितमतिब-
लमुरारिप्रपूजितो जितकषायरिपुरथ जातः ।
बृहदूर्जयन्तशिखरे शिखामणिस्त्रिभुवनस्य
नेमिर्भगवान् ॥ २८ ॥ पावापुरवरसरसां म-
ध्यगतः सिद्धिवृद्धितपसां महसां । वीरो
नीरदनादो भूरिगुणश्चारुशोभमास्पदमगमत्
॥ २९ ॥ सम्मदकरिवनपरिवृत सम्मेदगिरी-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

न्द्रमस्तके विस्तीर्णे । शेषा ये तीर्थंकराः कीर्तिभृतः प्रार्थितार्थसिद्धिमवापन् ॥ ३० ॥ शेषाणां केवलिनां अशेषमतवेदिगणभृतां साधूनां । गिरितलविवरदरीसरिदुरुवनतरु-विटपिजलधिदहनशिखासु ॥ ३१ ॥ मोक्षग-तिहेतुभूतस्थानानि सुरेन्द्ररुन्द्रभक्तिनुतानि । मंगलभूतान्येतान्यंगीकृतधर्मकर्मणामस्माक-म् ॥ ३२ ॥ जिनपतयस्तत्प्रतिमास्तदालया-स्तन्निषद्यका स्थानानि । ते ताश्च ते च ता-नि च भवन्तु भवघातहेतवो भव्यानाम् ॥ ३३ ॥ संध्यासु तिसृषु नित्यं, पठेद्यदि स्तो-त्रमेतदुत्तमयशसाम् । सर्वज्ञानां सार्वं, लघु लभते श्रुतधरेडितं पदममितम् ॥३४॥ नित्यं निःस्वेदत्वं निर्मलता क्षीरगौररुधिरत्वं च । स्वाद्याकृतिसंहनने सौरूप्यं सौरभं च सौल-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

क्षयम् ॥ ३५ ॥ अप्रमितवीर्यता च प्रियहितवादित्वमन्यदमितगुणस्य, प्रथिता दशविख्याता स्वतिशयधर्माः स्वयंभुवो देहस्य ॥ ३६ ॥ गव्यूतिशतचतुष्टयसुभिक्षतागगनगमनमप्राणिवधः ॥ भुक्त्युपसर्गाभावश्चतुरास्यत्वं च सर्वविद्येश्वरता ॥ ३७ ॥ अच्छायत्वमपक्ष्मस्पंदश्च समप्रसिद्धनखकेशत्वं । स्वतिशयगुणा भगवतो घातिक्षयजा भवंति तेपि दशैव ॥ ३८ ॥ सार्वार्धमागधीया भाषा मैत्री च सर्वजनताविषया । सर्वर्तुफलस्तबकप्रवालकुसुमोपशोभिततरुपरिणामा ॥ ३९ ॥ आदर्शतलप्रतिमा रत्नमयी जायते मही च मनोज्ञा । विहरणमन्वेत्यनिलः परमानंदश्च भवति सर्वजनस्य ॥ ४० ॥ मरुतोऽपि सुरभिगंधव्यामिश्रा योजनांतर भू-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भागं । व्युपशमितधूलिकंटकतृणकीटकशर्करोपलं प्रकुर्वन्ति ॥४१॥ तदनु स्तनितकुमारा विद्युन्मालाविलासहासविभूषाः। प्रकिरन्ति सुरभिगंधिं गंधोदकवृष्टिमाज्ञया त्रिदशपतेः ॥ ४२ ॥ वरपद्मरागकेसरमतुलसुखस्पर्शहेममयदलनिचयम् । पादन्यासे पद्मं सप्त पुरः पृष्ठतश्च सप्त भवंति ॥ ४३ ॥ फलभारनम्रशालिव्रीह्यादिसमस्तसस्यधृतरोमांचा । परिहृषितेव च भूमिस्त्रिभुवननाथस्य वैभवं पश्यंती ॥ ४४ ॥ शरदुदयविमलसलिलं सर इव गगनं विराजते विगतमलम् । जहति च दिशस्तिमिरिकां विगतरजःप्रभृतिजिह्मताभावं सद्यः ॥ ४५ ॥ एतेतेति त्वरितं ज्योतिर्व्यंतरदिवौकसाममृतभुजः । कुलिशभृदाज्ञापनया कुर्वन्त्यन्ये समन्ततो

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

व्याह्वानम् ॥ ४६ ॥ स्फुरदरसहस्ररुचिरं वि-
मलमहारत्नकिरणनिकरपरीतम् । प्रहसित-
किरणसहस्रद्युतिमंडलमग्रगामि धर्मसुचक्रम्
॥४७॥ इत्यष्टमंगलं च स्वादर्शप्रभृति भक्तिरा-
गपरीतैः । उपकल्प्यन्ते त्रिदशैरेतेऽपि निरुप-
मातिशयाः ॥४८॥ वैडूर्यरुचिरविटपप्रवालमृ-
दुपल्लवोपशोभितशाखः । श्रीमानशोकवृक्षो
वरमरकतपत्रगहनबहलच्छायः ॥४९॥ मंदार-
कुंदकुवलयनीलोत्पलकमलमालतीबकुलाद्यैः ।
समदभ्रमरपरीतैर्व्यामिश्रा पतति कुसुमवृ-
ष्टिर्नभसः ॥५०॥ कटकटिसूत्रकुंडलकेयूरप्रभृ-
तिभूषितांगौ स्वंगौ । यक्षौ कमलदलाक्षौ
परिनिक्षिपतः सलीलचामरयुगलम् ॥५१॥
आकस्मिकमिव युगपद्दिवसकरसहस्रमपग-
तव्यवधानम् । भामंडलमविभावितरात्रिंदि-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वभेदमातितरामाभाति ॥ ५२ ॥ प्रबलपवनाभिघातप्रक्षुभितसमुद्रघोषमन्द्रध्वानम्। दंध्वन्यते सुवीणावंशादिसुवाद्यदुंदुभिस्तालसमम् ॥ ५३ ॥ त्रिभुवनपतितालांछनमिंदुत्रयतुल्यमतुलमुक्ताजालम्। छत्रत्रयं च सुबृहद्वैडूर्यविक्लृप्तदंडमधिकमनोज्ञम् ॥५४॥ ध्वनिरपि योजनमेकं प्रजायते श्रोत्रहृदयहारिगभीरः। ससलिलजलधरपटलध्वनितमिव प्रविततान्तराशावलयम् ॥५५॥ स्फुरितांशुरत्नदीधितिपरिविच्छुरितामरेंद्रचापच्छायम्। ध्रियते मृगेंद्रवर्यैः, स्फटिकशिलाघटितसिंहाविष्टरमतुलम् ॥५६॥ यस्येह चतुस्त्रिंशत्प्रवरगुणा प्रातिहार्यलक्ष्म्यश्चाष्टौ। तस्मै नमो भगवते त्रिभुवनपरमेश्वरार्हते गुणमहते ॥५७॥ इच्छामि भंते, णंदीसरभत्तिकाउस्सग्गो कओ

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तस्सा लोचेउं णंदीसरदीवम्मि, चउदिसि विदिसासु अंजणदधिमुहरदिकरपुरुणगवरेसु जाणि जिणचेइयाणि ताणि सव्वाणि तिसु- वि लोएसु भवणवासियवाणविंतरजोइसिगक प्पवासियात्ति चउविहा देवा सपरिवारा दि- व्वेहि गंधेहि, दिव्वेहि पुप्फेहि, दिव्वेहि धुव्वेहि, दिव्वेहि चुण्णेहि, दिव्वेहि वासे- हि, दिव्वेहि ण्हाणेहि आसाढकत्तियफागु- णमासाणं अट्ठमिमाइं काऊण जाव पुण्णि- मंति णिच्चकालं अंचंति. पूजान्ति, वंदंति, णमंसंति । णंदीसरमहाकल्लाणं करंति अह- मवि इह संतो तत्थसंताइं णिच्चकालं अंचे- मि, पूजेमि, वंदामि, णमंसामि, दुक्खक्ख- ओ, कम्मक्खओ, बोहिलाहो, सुगइगमणं समाहिमरणं जिणगुणसंपत्ति होऊं मज्झं ॥

॥ इति नंदीश्वरभक्तिः ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अथ चैत्यभक्तिः

श्री गौतमादिपदमद्भुतपुण्यबंधमुद्योतिताखिलममोघमघप्रणाशम् । वक्ष्ये जिनेश्वरमहं प्रणिपत्य तथ्यं निर्वाणकारणमशेषजगद्धितार्थम् ॥१॥ जयति भगवान् हेमाम्भोजप्रचारविजृम्भितावमरमुकुटच्छायोद्गीर्णप्रभापरिचुम्बितौ ॥ कलुषहृदया मानोद्भ्रान्ताः परस्परवैरिणः विगतकलुषाः पादौ यस्य प्रपद्य विशश्वसुः ॥ २ ॥ तदनु जयति श्रेयान्धर्मः प्रवृद्धमहोदयः कुगतिविपथक्लेशाद्योसौ विपाशयति प्रजाः । परिणतनयस्यांगीभावाद्विविक्तविकल्पितम् । भवतु भवतस्त्रात् त्रेधा जिनेंद्रवचोऽमृतम् ॥३॥ तदनु जयताज्जैनी वित्तिः प्रभंगतरंगिणी । प्रभव-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

विगमध्रौव्यद्रव्यस्वभावविभाविनी ॥ निरुपमसुखस्येदं द्वारं विघट्य निरर्गलम् ॥ विगतरजसं मोक्षं देयान्निरत्ययमव्ययम् ॥ ३ ॥ अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायेभ्यस्तथा च साधुभ्यः । सर्वजगद्वंद्येभ्यो नमोस्तु सर्वत्र सर्वेभ्यः ॥ ४ ॥ मोहादिसर्वदोषारिघातकेभ्यः सदा हतरजोभ्यः ॥ विरहितरहस्कृतेभ्यः पूजार्हेभ्यो नमोऽर्हद्भ्यः ॥५॥ क्षान्त्यार्जवादिगुणगणसुसाधनं सकललोकहितहेतुं । शुभधामनि धातारं वंदे धर्मं जिनेन्द्रोक्तम् ॥६॥ मिथ्याज्ञानतमोवृतलोकैकज्योतिरमितगमयोगि । सांगोपांगमजेयं जैनं वचनं सदा वंदे ॥७॥ भवनविमानज्योतिर्व्यंतरनरलोकविश्वचैत्यानि । त्रिजगदभिवंदितानां त्रेधा वंदे जिनेंद्राणाम् ॥८॥ भुवनत्रयेऽपि भुवनत्रयाधिपाभ्य

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

र्थतीर्थकर्तॄणां । वंदे भवाग्निशान्त्यै विभवा-
नामालयालीस्ताः ॥९॥ इति पंचमहापुरुषाः
प्रणुता जिनधर्मवचनचैत्यानि । चैत्यालया-
श्च विमलां दिशन्तु बोधिं बुधजनेष्टाम् ॥१०
॥अकृतानि कृतानि चाप्रमेयद्युतिमन्ति द्युति-
मत्सु मंदिरेषु । मनुजामरपूजितानि वंदे प्र-
तिबिंबानि जगत्त्रये जिनानाम् ॥११॥ द्युति-
मंडलभासुराङ्गयष्टीः प्रतिमा अप्रतिमा जि-
नोत्तमानाम् । भुवनेषु विभूतये प्रवृत्ता वपु-
षा प्राञ्जलिरस्मि वंदमानः ॥१२॥ विगतायु-
धविक्रियाविभूषाः प्रकृतिस्थाः कृतिनां जिने-
श्वराणां ॥ प्रतिमाः प्रतिमागृहेषु कान्त्या
प्रतिमाः कल्मषशान्तयेऽभिवंदे ॥१३॥ कथ-
यन्ति कषायमुक्तिलक्ष्मीं परया शांततया
भवान्तकानाम् । प्रणमाम्यभिरूपमूर्तिमंति

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रतिरूपाणि विशुद्धये जिनानाम् ॥१४॥ यदिदं मम सिद्धभक्तिनीतं सुकृतं दुष्कृतवर्त्मरोधि तेन । पटुना जिनधर्म एव भक्तिर्भवताज्जन्मनि जन्मनि स्थिरा मे ॥ १५॥ अर्हतां सर्वभावानां दर्शनज्ञानसंपदाम् । कीर्तयिष्यामि चैत्यानि यथाबुद्धि विशुद्धये ॥ १६॥ श्रीमद्भवनवासस्था स्वयंभासुरमूर्तयः। वंदिता नो विधेयासुःप्रतिमाः परमां गतिम् ॥ १७ ॥ यावंति संति लोकेऽस्मिन्नकृतानि कृतानि च । तानि सर्वाणि चैत्यानि वंदे भूयांसि भूतये ॥ १८ ॥ ये व्यंतरविमानेषु स्थेयांसः प्रतिमागृहाः । ते च संख्यामतिक्रान्ताः संतु नो दोषविच्छिदे ॥१९॥ ज्योतिषामथ लोकस्य भूतयेऽद्भुतसंपदः। गृहाः स्वयंभुवः संति विमानेषु नमामि तान् ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२०॥ वंदे सुराकिरीटाग्रमणिच्छायाभिषेचनम्
। याः क्रमेणैव सेवन्ते तदर्च्चाः सिद्धिलब्धये
॥ २१ ॥ इति स्तुतिपथातीतश्रीभृतामर्हतां
मम । चैत्यानामस्तु संकीर्तिः सर्वास्रवनिरो-
धिनी ॥ २२ ॥ अर्हन्महानदस्य त्रिभुवनभ-
व्यजनतीर्थयात्रिकदुरितम्। प्रक्षालनैककार-
णमतिलौकिककुहकतीर्थमुत्तमतीर्थम् ॥२३॥
लोकालोकसुतत्वप्रत्यवबोधनसमर्थदिव्यज्ञा-
न - प्रत्यहवहत्प्रवाहं व्रतशीलामलविशाल-
कूलद्वितयम् ॥२४॥ शुक्लध्यानस्तिमितस्थि-
तराजद्राजहंसराजितमसकृत् । स्वाध्यायमं-
द्रघोषं नानागुणसमितिगुप्तिसिकतासुभगम्।
॥२५॥ क्षान्त्यावर्तसहस्रं सर्वदयाविकचकु-
सुमविलसल्लतिकम् । दुःसहपरीषहाख्यद्रु-
ततररंगत्तरंगभंगुरनिकरम् ॥२६॥ व्यपगतक-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

षायफेनं रागद्वेषादिदोषशैवलरहितं । अत्यस्तमोहकर्दममतिदूरान्निरस्तमरणमकरप्रकरम् ॥२७॥ ऋषिवृषभस्तुतिमंद्रोद्रेकितनिर्घोषविविधविहगध्वानम् । विविधतपोनिधिपुलिनं साम्रवसंवरणनिर्जरानिःस्रवणम् ॥२८॥ गणधरचक्रधरेन्द्रप्रभृतिमहाभव्यपुंडरीकैः पुरुषैः । बहुभिः स्नातं भक्त्या कलिकलुषमलापकर्षणार्थममेयम् ॥२९॥ अवतीर्णवतः स्नातुं ममापि दुस्तरसमस्तदुरितं दूरम् । व्यवहरतु परमपावनमनन्यजय्यस्वभावगंभीरम् ॥३०॥ आताम्रनयनोत्पलं सकलकोपवन्हेजयात् । कटाक्षशरमोक्षहीनमविकारतोद्रेकतः । विषादमदहानितः प्रहसितायमानं सदा, मुखं कथयतीव ते हृदयशुद्धिमात्यन्तिकीम् ॥३१॥ निराभरणभासुरं विगतरागवेगोदयात् ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

निरंबरमनोहरं प्रकृतिरूपनिर्दोषतः ॥ निरायुधसुनिर्भयं विगतहिंस्यहिंसक्रमात् । निरामिषसुतृप्तिमद्विविधवेदनानां क्षयात् ॥३२॥
मितास्थितनखांगजं गतरजोमलस्पर्शनम् । नवांबुरुहचंदनप्रतिमदिव्यगंधोदयम् ॥ रवीन्दुकुलिशादिदिव्यबहुलक्षणालंकृतम् । दिवाकरसहस्रभासुरमपीक्षणानां प्रियम् ॥३३॥
हितार्थपरिपंथिभिः प्रबलरागमोहादिभिः । कलंकितमना जनो यदभिवीक्ष्य शोशुध्यते । सदाभिमुखमेव यज्जगति पश्यतां सर्वतः । शरद्विमलचंद्रमंडलमिवोत्थितं दृश्यते ॥३४॥
तदेतदमरेश्वरप्रचलमौलिमालामणिस्फुरत्किरणचुंबनीयचरणारविन्दद्वयम् ॥ पुनातु भगवज्जिनेंद्र तव रूपमन्धीकृतम् । जगत्सकलमन्यतीर्थगुरुरूपदोषोदयैः ॥३५॥ मानस्त-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भाः सरांसि प्रविमलजलसत्खातिका पुष्पवाटी। प्राकारो नाट्यशाला द्वितयमुपवनं वेदिकांतर्ध्वजाद्याः॥ शालः कल्पद्रुमाणां सुपरिवृतवनं स्तूपहर्म्यावली च। प्राकारः स्फाटिकोन्तर्नृसुरमुनिसभा पीठिकाग्रे स्वयंभूः॥ ३६॥ वर्षेषु वर्षान्तरपर्वतेषु, नंदीश्वरे यानि च मंदरेषु। यावन्ति चैत्यायतनानि लोके सर्वाणि वंदे जिनपुंगवानाम्॥३७॥ अवनितलगतानां कृत्रिमाऽकृत्रिमाणाम्। वनभवनगतानां दिव्यवैमानिकानाम्॥ इह मनुजकृतानां देवराजार्चितानाम्। जिनवरनिलयानां भावतोऽहं स्मरामि॥ ३८ ॥ जम्बूधातकिपुष्करार्द्धवसुधाक्षेत्रत्रये ये भवाश्चंद्रांभोजशिखंडिकंठकनकप्रावृड्घनाभाजिनः। सम्यग्ज्ञानचरित्रलक्षणधरा दग्धाष्टकर्मेन्धनाः। भूता

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नागतवर्तमानसमये तेभ्यो जिनेभ्यो नमः॥ ३९॥ श्रीमन्मेरौ कुलाद्रौ रजतगिरिवरे शाल्मलौ जंबुवृक्षे। वक्षारे चैत्यवृक्षे रतिकररुचके कुंडले मानुषांके। इष्वाकारेऽजनाद्रौ दधिमुखशिखरे व्यंतरे स्वर्गलोके। ज्योतिर्लोकेऽभिवंदे भुवनमहितले यानि चैत्यानि तानि ॥४०॥ देवासुरेंद्रनरनागसमर्चितेभ्यः, पापप्रणाशकरभव्यमनोहरेभ्यः। घंटाध्वजादिपरिवारविभूषितेभ्यो नित्यं नमो जगति सर्व जिनालयेभ्यः॥ ४१ ॥ इच्छामि भंते चेइयभत्तिकाउस्सग्गो कओ तस्सालोचेउं, अहलोयतिरियलोयउड्ढलोयम्मि किट्टिमाकिट्टिमाणि जाणि जिणचेइयाणि ताणि सव्वाणि तिसुवि लोएसु भवणवासियवाणविंतरजोइसियकप्पवासियात्ति चउविहादेवा

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सपरिवारा दिव्वेण गंधेण, दिव्वेण चुण्णेण, दिव्वेण वासेण, दिव्वेण ण्हाणेण, णिच्चकालं अंचंति, पुज्जंति, वंदंति, णमंसंति। अहमवि इह संतो तत्थ संताइं णिच्चकालं अंचेमि, पूजेमि, वंदामि, णमंसामि, दुक्खक्खओ, कम्मक्खवो बोहिलाहो, सुगइगमणं समाहिमरणं, जिणगुणसंपत्ति होउ मज्झं॥

इति चैत्यभक्तिः।

—:०:—

अथ कल्याणालोचना।

परमात्मानं वर्द्धितमतिं परमेष्ठिनं करोमि नमस्कारम्। स्वकपरसिद्धिनिमित्तं कल्याणालोचनां वक्ष्ये॥ १॥ रे जीव अनंतभवे

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

संसारे संसरता बहुवारम् । प्राप्तो न बोधि-
लाभः मिथ्यात्वविजृंभितप्रकृतिभिः ॥ २ ॥
संसारभ्रमणगमनं कुर्वन् आराधितो न जि-
नधर्मः । तेन विना वरं दुःखं प्राप्तोऽसि
अनंतवारम् ॥ ३ ॥ संसारे निवसन् अनंतमर-
णानि प्राप्तोऽसि त्वम् । केवलिना विना ते-
षां संख्या पर्याप्तिर्न भवति ॥ ४ ॥ त्रीणिश-
तानि षट्त्रिंशानि षट्षष्ठिसहस्रवारमरणानि
। अन्तर्मुहूर्तमध्ये प्राप्तोऽसि निगोदमध्ये ॥
५॥ विकलेन्द्रिये अशीतिं षष्ठि चत्वारिंशि
देव जानीहि । पंचेन्द्रिये चतुर्विंशतिक्षुद्र-
भवान् अन्तर्मुहूर्ते ॥६॥ अन्योन्यं कुध्यन्तो
जीवा प्राप्नुवन्ति दारुणं दुःखम् । न खलु
तेषां पर्याप्तीः कथं प्राप्नोति धर्ममतिशून्यः
॥७॥ माता पिता कुटुंबः स्वजनजनः कोपि

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नायाति सह। एकाकी भ्रमति सदा न हि द्वितीयोऽस्ति संसारे ॥८॥ आयुःक्षयेऽपि प्राप्ते न समर्थः कोपि आयुर्दाने च। देवेन्द्रो न नरेंद्रो मण्यौषधमन्त्रजालानि ॥ ९ ॥ सम्प्रति जिनवरधर्मं लब्धोऽसि त्वं विशुद्ध-योगेन। क्षमस्व जीवान् सर्वान् प्रत्येकसमये प्रयत्नेन ॥ १० ॥ त्रीणि शतानि त्रिषष्टिमिथ्यात्वानि दर्शनस्य प्रतिपक्षाणि। अज्ञानेन श्रद्धितानि मिथ्या मे दुष्कृतं भवतु॥ ११ ॥ मधुमांसमद्यद्यूतप्रभृतीनि व्यसनानि सप्त भेदानि। नियमो न कृतस्तेषां मिथ्या मे दुष्कृतं भवतु ॥१२॥ अणुव्रतमहाव्रतानि यानि यमनियमशीलानि साधुगुरुदत्तानि। यानि यानि विराधितानि खलु मिथ्या मे दुष्कृतं भवतु ॥१३॥ नित्येतरधातुसप्त तरु-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दश विकलेन्द्रियेषु षट् चैव। सुरनारकातिर्यक्षु चत्वारश्चतुर्दश मनुष्ये शतसहस्राणि ।१४। एते सर्वे जीवाश्चतुरशीतिलक्षयोनिवशे प्राप्ताः । ये ये विराधिताः खलु मिथ्या मे दुष्कृतं भवतु ॥१५॥ पृथ्वीजलाग्निवायुतेजोवनस्पतयश्च विकलत्रयाः । ये ये विराधिताः खलु मिथ्या मे दुष्कृतं भवतु ॥१६॥ मलसप्तति जिनोक्ता व्रतविषये वा विराधना विविधा। सामायिकक्षमादिका मिथ्या मे दुष्कृतं भवतु ॥ १७ ॥ फलपुष्पत्वग्वल्ली अगालितस्नानं च प्रक्षालनादिभिः । ये ये विराधिताः खलु मिथ्या मे दुष्कृतं भवतु ॥ १८ ॥ न शीलं नैव क्षमा विनयस्तपो न संमयोपवासाः । न कृता न भावनीकृता मिथ्या मे दुष्कृतं भवतु ॥ १९ ॥ कन्दफलमूलवी-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जानि सचित्तरजनीभोजनाहाराः । अज्ञानेन येऽपि कृता मिथ्या मे दुष्कृतं भवतु ॥२०॥ नो पूजा जिनचरणे न पात्रदानं नचेर्यागमनम् । न कृता न भाविता मया मिथ्या मे दुष्कृतं भवतु ॥२१॥ बह्वारम्भपरिग्रहसावद्यानि बहूनि प्रमाददोषेण । जीवा विराधिताः खलु मिथ्या मे दुष्कृतं भवतु ॥ २२ ॥ सप्ततिशतक्षेत्रभवाः अतीतानागतवर्तमानजिनाः । ये ये विराधिताः खलु मिथ्या मे दुष्कृतं भवतु ॥२३॥ अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायाः साधवः पंच परमेष्ठिनः । ये ये विराधिताः खलु मिथ्या मे दुष्कृतं भवतु ॥२४॥ जिनवचनं धर्मः चैत्यं जिनप्रतिमाः कृत्रिमा अकृत्रिमाः । ये ये विराधिताः खलु मिथ्या मे दुष्कृतं भवतु ॥ २५ ॥ दर्शनज्ञानचारित्रे

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दोषा अष्टाष्टपंचभेदा । ये ये विराधिताः खलु मिथ्या मे दुष्कृतं भवतु ॥२६॥ मतिःश्रुतःअवधिः मनःपर्ययः तथा केवलं च पंचकम् । ये ये विराधिताः खलु मिथ्या मे दुष्कृतं भवतु ॥२७॥ आचारादीन्यंगानि पूर्वप्रकीर्णकानि जिनैः प्रणीतानि । ये ये विराधिताः खलु मिथ्या मे दुष्कृतं भवतु ॥२८॥ पंचमहाव्रतयुक्ता अष्टादशसहस्रशीलकृत-शोभाः । ये ये विराधिताः खलु मिथ्या मे दुष्कृतं भवतु ॥२९॥ लोके पितृसमाना ऋद्धिप्रपन्ना महागणपतयः । ये ये विराधिताः खलु मिथ्या मे दुष्कृतं भवतु ॥३०॥ निर्ग्रंथा आर्यिकाः श्रावकाः श्राविकाश्च चतुर्विधःसंघः। ये ये विराधिताः खलु मिथ्या मे दुष्कृतं भवतु ॥ ३१ ॥ देवा असुरा मनुष्या नारकाः

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तिर्यग्योनिगतजीवाः । ये ये विराधिताः खलु मिथ्या मे दुष्कृतं भवतु ॥ ३२ ॥ क्रोधो मानो माया लोभः एते रागद्वेषाः । अज्ञानेन येऽपि कृता मिथ्या मे दुष्कृतं भवतु ॥३३॥ ॥ परवस्त्रं परमहिला प्रमादयोगेनार्जितं पापम् । अन्येपि अकरणीया मिथ्या मे दुष्कृतं भवतु ॥३४॥ एकः स्वभावसिद्धः स आत्मा विकल्पपरिमुक्तः । अन्यो न मम शरणं शरणं स एकः परमात्मा ॥३५॥ अरसः अरूपः अगंधः अव्याबाधः अनन्तज्ञानमयः । अन्यो न मम शरणं शरणं स एकः परमात्मा ॥ ३६॥ ज्ञेयप्रमाणं ज्ञानं समयेन एकेन भवति स्वस्वभावे । अन्यो न मम शरणं शरणं स एकः परमात्मा ॥३७॥ एकानेकविकल्पप्रसाधने स्वकस्वभावशुद्धगतिः । अन्यो न मम

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

शरणं शरणं स एकः परमात्मा ॥३८॥ देह-प्रमाणो नित्यो लोकप्रमाणोऽपि धर्मतो भवति । अन्यो न मम शरणं शरणं स एकः परमात्मा ॥ ३९ ॥ केवलदर्शनज्ञाने समयेनैकेन द्वावुपयोगौ । अन्यो न मम शरणं शरणं स एकः परमात्मा ॥ ४० ॥ स्वकरूपसहजासिद्धो विभावगुणमुक्तकर्म व्यापारः । अन्यो न मम शरणं शरणं स एकः परमात्मा ॥ ४१ ॥ शून्यो नैवाशून्यो नोकर्मकर्मवर्जितो ज्ञानम् । अन्यो न मम शरणं शरणं स एकः परमात्मा ॥४२॥ज्ञानतो यो न भिन्नः विकल्पाभिन्नः स्वभावसुखमयः । अन्यो न मम शरणं शरणं स एकः पर-मात्मा ॥४३॥ अच्छिन्नोऽवच्छिन्नः प्रमेयरू-पत्वं अगुरुलघुत्वं चैव । अन्यो न मम शरणं

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

शरणं स एकः परमात्मा ॥४४॥ शुभाशुभ भावविगतः शुद्धस्वभावेन तन्मयं प्राप्तः। अन्यो न मम शरणं शरणं स एकः परमात्मा ॥ ४५ ॥ न स्त्री न नपुंसकोः न पुमान् नैव पुण्यपापमयः । अन्यो न मम शरणं शरणं स एकः परमात्मा ॥ ४६ ॥ तव को न भवति स्वजनः त्वं कस्य न बंधुः स्वजनो वा । आत्मा भवेत् आत्मा एकाकी ज्ञायकः शुद्धः ॥ ४७ ॥ जिनदेवो भवतु सदा मतिः सुजिनशासने सदा भवतु । सन्यासेन च मरणं भवे भवे मम सम्पतु ॥४८॥ जिनो देवो जिनो देवो जिनो देवो जिनो जिनः । दयाधर्मो दयाधर्मो दयाधर्मो दया सदा ॥४९॥ महासाधवः महासाधवः महासाधवो दिगंबराः । एवं तत्त्वं सदा भवतु

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

यावन्न मुक्तिसंगमः ॥ ५० ॥ एवमेव गतः कालोऽनन्तोहि दुःखसंगमे । जिनोपदिष्टसन्यासे न यत्नारोहणा कृता ॥५१॥ सम्प्रति एव सम्प्राप्ता ऽऽराधना जिनदेशिता । का का न जायते मम सिद्धिसन्दोहसम्पत्तिः ॥ ५२॥ अहो धर्म अहो धर्म अहो मे लब्धिर्निर्मला । संजाता सम्प्रत् सारा येन सुखमनुपमम् ॥५३॥ एवमाराधयन् आलोचनावंदनाप्रतिक्रमणानि । प्राप्नोति फलं च तेषां निर्दिष्टमजितब्रह्मणा ॥५४॥

इति कल्याणालोचनाः ।

अथ चतुर्दिशि वंदना ।

प्राग्दिग्विदिगन्तारे केवलिजिनसिद्ध

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

साधुगणदेवाः । येसर्वर्द्धिसमृद्धा योगिगणांस्तानऽहं वन्दे ॥१॥ दक्षिणादिग्विदिगन्तरि केवलिजिनासिद्धसाधुगणदेवाः ये सर्वर्द्धिसमृद्धा० ॥ २ ॥ पश्चिमदिग्विदिगन्तरि केवलिजिनासिद्धसाधुगणदेवा : । ये सर्वर्द्धिसमृद्धा० ॥ ३ ॥ उत्तरदिग्विदिगन्तरि केवलिजिनसाधुगणदेवाः । ये सर्वार्द्धिः समृद्धा० ॥४॥

इति चतुर्दिशि वंदना ।

अथ सर्वदोषप्रायश्चित्तविधिर्लिख्यते ।

ॐ ह्रीं अर्हं असिआउसात्रयस्त्रिंशदत्यासादनात्यागानुष्ठितप्रोषधोद्योतनाय नमः॥१॥ ॐ

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ह्रीं अर्हं अहिंसामहाव्रतस्यात्यासादनात्यागायानुष्ठितप्रोषधोद्योतनाय नमः ॥२॥ ॐ ह्रीं अर्हं सत्यमहाव्रतस्यात्यासादनात्यागायानुष्ठितप्रोषधोद्योतनाय नमः ॥३॥ ॐ ह्रीं अर्हं अचौर्यमहाव्रतस्यात्यासादनात्यागायानुष्ठित प्रोषधोद्योतनाय नमः ॥ ४ ॥ ओं ह्रीं अर्हं ब्रह्मचर्यमहाव्रतस्यात्यासादनात्यागानुष्ठित प्रोषधोद्योतनाय नमः ॥५॥ ॐ ह्रीं अर्हं अपरिग्रहमहाव्रतस्यात्यासादनात्यागायानुष्ठित प्रोषधोद्योतनाय नमः ॥ ६ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं ईर्यासमितेरत्यासादनात्यागायानुष्ठितप्रोषधोद्योतनाय नमः ॥ ७ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं भाषासमितेरत्यासादनात्यागायानुष्ठितप्रोषधोद्योतनाय नमः ॥८॥ ॐ ह्रीं अर्हं एषणासमितेरत्यासादनात्यागायानुष्ठितप्रोषधोद्योतनाय

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नमः ।९॥ ॐ ह्रीं अर्हं आदाननिक्षेपणसमितेरत्यासादनात्यागायानुष्ठितप्रोषधोद्योतनाय नमः ॥१०॥ ॐ ह्रीं अर्हं उत्सर्गसमितेरत्यासादनात्यागायानुष्ठितप्रोषधोद्योतनाय नमः ॥ ११ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं मनोगुप्तेरत्यासादनात्यागायानुष्ठितप्रोषधोद्योतनाय नमः ॥१२॥ ॐ ह्रीं अर्हं वचोगुप्तेरत्यासादनात्यागायानुष्ठितप्रोषधोद्योतनाय नमः ॥ १३ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं कायगुप्तेरत्यासादनात्यागायानुष्ठितप्रोषधोद्योतनाय नमः ॥१४॥ ॐ ह्रीं अर्हं जीवास्तिकायिकस्यात्यासादनात्यागायानुष्ठितप्रोषधोद्योतनाय नमः ॥ १५॥ ॐ ह्रीं अर्हं पुद्गलास्तिकायिकस्यात्यासादनात्यागायानुष्ठितप्रोषधोद्योतनाय नमः ॥ १६॥ ॐ ह्रीं अर्हं धर्मास्तिकायिकस्यात्यासा-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दनात्यागायानुष्ठितप्रोषधोद्योतनाय नमः ॥ १७ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं अधर्मास्तिकायिकस्यात्यासादनात्यागायानुष्ठितप्रोषधोद्योतनाय नमः ॥१७ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं आकाशास्तिकायिकस्यात्यासादनात्यागायानुष्ठितप्रोषधोद्योतनाय नमः ॥१८॥ ॐ ह्रीं अर्हं पृथ्वीकायिकस्यात्यासादनात्यागायानुष्ठितप्रोषधोद्योतनाय नमः ॥१९॥ ॐ ह्रीं अर्हं अप्कायिकस्यात्यासादनात्यागायानुष्ठितप्रोषधोद्योतनाय नमः ॥२०॥ ॐ ह्रीं अर्हं तेजःकायिकस्यात्यासादनात्यागायानुष्ठितप्रोषधोद्योतनाय नमः ॥२२॥ ॐ ह्रीं अर्हं वायुकायिकस्यात्यासादनात्यागायानुष्ठितप्रोषधोद्योतनाय नमः ॥२३॥ ॐ ह्रीं अर्हं वनस्पतियिकस्यात्यासादनात्यागायानुष्ठितप्रोषधो

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

द्योतनाय नमः ॥२४॥ ॐ ह्रीं अर्हं त्रसकायिकस्यात्यासादनात्यागायानुष्ठितप्रोषधोद्योतनाय नमः ॥२५॥ ॐ ह्रीं अर्हं जीवपदार्थस्यात्यासादनात्यागायानुष्ठितप्रोषधोद्योतनाय नमः ॥ २६ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं अजीवपदार्थस्यात्यासादनात्यागायानुष्ठितप्रोषधोद्योतनाय नमः ॥२७॥ ॐ ह्रीं अर्हं आस्रवपदार्थस्यात्यासादनात्यागायानुष्ठितप्रोषधोद्योतनाय नमः ॥ २८ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं बंधपदार्थस्यात्यासादनात्यागायानुष्ठितप्रोषधोद्योतनाय नमः ॥२९॥ ॐ ह्रीं अर्हं संवरपदार्थस्यात्यासादनात्यागायानुष्ठितप्रोषधोद्योतनाय नमः ॥३०॥ ॐ ह्रीं अर्हं निर्जरापदार्थस्यात्यासादनात्यागायानुष्ठितप्रोषधोद्योतनाय नमः ॥ ३१ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं मोक्षपदार्थस्या-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

त्यासादनात्यागायानुष्ठितप्रोषधोद्योतनाय नमः ॥३२॥ ॐ ह्रीं अर्हं पुण्यपदार्थस्यात्यासादनात्यागायानुष्ठितप्रोषधोद्योतनाय नमः ॥३३॥ ॐ ह्रीं अर्हं पापपदार्थस्यात्यासादनात्यागायानुष्ठितप्रोषधोद्योतनाय नमः ॥३४॥ ॐ ह्रीं अर्हं सम्यग्दर्शनाय नमः ॥ ३५ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं सम्यग्ज्ञानायनमः ॥ ३६ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं सम्यक्चारित्राय नमः ॥३७॥

इति सर्वदोषप्रायश्चित्तविधिः ।

—:०:—

अथ सामायिक पाठ ।

सिद्धवस्तुवचो भक्त्या सिद्धान् प्रणमतःसदा
सिद्धकार्याः शिवं प्राप्ताः सिद्धं ददतु नोऽ

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

व्ययाम् ॥१॥ नमोस्तु धौतपापेभ्यः, सिद्धेभ्यः ऋषिसंसदि । सामायिकं प्रपद्येऽहं, भवभ्रमणसूदनम् ॥२॥ साम्यं मे सर्वभूतेषु वैरं मम न केनचित् । आशां सर्वां परित्यज्य, समाधिमहमाश्रये ॥३॥ रागद्वेषान्ममत्वाद्वा हा मया ये विराधिताः । क्षमन्तु जन्तवस्ते मे । ते मां क्षमयन्तु सर्वदा ॥४॥ तेभ्यः क्षमाम्यहं पुनः (मनसा वपुषा वाचा) कृतकारितसम्मतैः । रत्नत्रयभवं दोषं, गर्हे निन्दामि वर्जये ॥ ५ ॥ तैरश्चं मानवं दैवमुपसर्गं सहेऽधुना । कायाहारकषायादीन्, संत्यजामि त्रिशुद्धितः । रागद्वेषं भयं शोकं, प्रहर्षौत्सुक्यदीनताः ॥ व्युत्सृजामि त्रिधा सर्वमरतिंरातिमेव च ॥७॥ जीवने मरणे लाभे ऽलाभे योगे विप-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

येय। बन्धावरौ सुखे दुःखे सर्वदा समता मम ॥८॥ आत्मैव मे सदा ज्ञाने, दर्शने चरणे तथा। प्रत्याख्याने ममात्मैव तथा संवरयोगयोः ॥ ९ ॥ एको मे शाश्वतश्चात्मा ज्ञानदर्शनलक्षणः। शेषा बहिर्भवा भावाः सर्वे संयोगलक्षणाः ॥ १० ॥ संयोगमूला जीवेन, प्राप्ता दुःखपरम्परा तस्मात्संयोगसम्बन्धं त्रिधा सर्वं त्यजाम्यहम् ॥११॥ एवं सामायिकात्सम्यक् सामायिकमखंडितम्। वर्तते मुक्तिमानिन्या वशीभूताय ते नमः ॥१२॥

इति सामायिक पाठः ॥

—:०:—

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आचार्य शांतिसागरस्तुतिः ।

पूज्यातिपूज्यैर्यतिभिस्सुवंद्यं, संसारगंभीरसमुद्रसेतुं । ध्यानैकनिष्ठागरिमागरिष्ठं, आचार्यवर्यं प्रणमामि नित्यम् ॥१॥ ध्यानादिसैन्यं परिवर्ध्य पूर्णं, कर्मारिवर्गं प्रणिहत्य वेगात् । नीरागस्वातंत्र्यपदे प्रतिष्ठं, आ० ॥२॥ यो मुख्यसूरिर्मुनिनायकानां, आचारपारं गतवान्समग्रं । ध्यानप्रभावेन प्रवृद्धदीप्तिः, आ० ॥३॥ दुर्जेयकं द्वादशधा कषायं, जित्वा निजात्मानुभवैकशुद्ध्या । षष्ठे गुणे सप्तमके गतं तं, आ० ॥४॥ आभ्यन्तरो बाह्य उपाधिभारः, दूरीकृतो येन वितृष्णभावात् । दैगम्बरं सुन्दरदिव्यकायं, आ० ॥५॥ धर्मामृतं पाययति प्रभूतं, यो भव्यजीवान् करु-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

णास्वरूपः । स्वात्मस्वरूपं च चकारतेभ्य
आ० ॥६॥ योऽनेकसाधून् विषयेष्वरक्तान्,
निर्ग्रंथलिंगे विधिना चकार । गुरूपरागोऽपि
च वीतरागः, आ० ॥७॥ महागभीरं विश-
दीकृतार्थं, शास्त्राब्धिपारं गतवान् समग्रम् ।
तथापि प्रज्ञामदतान्निरक्तः, आ० ॥८॥ यथा
कुन्दकुन्दः सुरैर्वंद्यपादः, अभूत्साधुसंसेव्य-
मानप्रपादः । तथैवाधुना लोकपूज्यं यतीन्द्रं
भजे सूरिवर्यं सदा साधुवंद्यम् ॥ ९ ॥ यथा
दुष्टजीवेन घोरोपसर्गाः, कृताः पार्श्वनाथे
त्रिलोकैकपूज्ये । तथा दुष्टलोकोपसर्गं साहिष्णुं
भजे० ॥ १० ॥ यतीनामनेके यथा शिष्यव-
र्गाः, प्रभोः कुन्दकुन्दस्य सूरेरभूवन् । तथै-
वाधुना साधुसंदोहशिष्यम्, भजे० ॥ ११ ॥
यथा सूत्रचिन्हं हि रत्नत्रयस्य, पुरा भारते

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पूर्वदूर्ज्यैर्निरुक्तम् । तथैवाधुना सूत्रचिन्हं द-
दानं, भजे० ॥१२॥ शांतेरगारं विनष्टारिमारं
जगत्कअमित्रं गुणाढ्यं पवित्रम्। वरिष्ठैः सु-
पूज्यं गरिष्ठप्रधानं, भजे० ॥१४॥ भीमगौडा
महाशक्तिशाली, स्वमाता सती सत्यरूपा
सुरूपा । तयोःपुत्ररत्नं जिताक्षारियत्नं, भ-
जे० ॥१५ ॥ जगद्बल्लरीं कर्तयित्वा कृपाणीं,
गृहीत्वा शुभध्यानरूपां स्वभावाम् । प्रपेदे
गुणं सप्तमञ्चैकहीनं, भजे० ॥१६॥ गुणारा-
मनीरं भवाम्भोधितीरं, सदा निर्विकारं गृ-
हीतात्मसारम् । कषायादिदुर्दण्डदोर्दण्डभेदं
भजे० ॥१६॥ महद्ध्याननिष्ठं महत्सु प्रकृष्टं,
महर्षिप्रतिष्ठं वचो यस्य मिष्टम्। चिदानं-
दरूपे स्वरूपे प्रविष्टं, भजे० ॥१७॥ निर्ग्रंथ-
साधुमधुपव्रजराजमाना, त्वत्पादपद्मकलिका

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

धवलाभिरामा। नक्षत्रवृन्दपरिवेष्टितचन्द्रबिम्बः, देवैः सुदृष्टिशुचिभि र्मघवा यथा वा ॥ १८॥ यत्पादसेवनरताः खलु भव्यलोकाः, संसारतो झटिति यांति विरक्तिबुद्धिम् ॥ यद्गीः प्रशस्यमहनीयसहेतुका च, पंचाननस्य समतां सदासि व्यनक्ति ॥१९॥ मिथ्यान्धकारपटलं प्रविहाय शीघ्रं, तत्त्वप्रसारकिरणैः सुखदैः समन्तात्। श्रद्धापरायणजनाम्बुजकारकांश्च, सन्तोषयन् विगततापरविस्त्वमेव ॥२०॥ मिथ्यान्धकारपरिमर्दनरश्मिजालं, ज्ञानप्रकाशितजगत्प्रविकाशिसूर्यम्। ध्यानैकतानानियतं मुनिराजसेव्यं, आचार्यवर्यगुरुपादमहं नमामि ॥ २१ ॥ गुणास्त्वदीयाः धवलाः गभीराः, सुरेन्द्रनागेन्द्रनरेन्द्रपूज्याः। विभांति सूरे! तव दिव्यदेहे, ततोसि पूज्यःखलु विश्वलोके। दर्शं दर्शं सूरि-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

शान्तस्वरूपं पायं पायं वाक्यपीयूषधाराम् । स्मारं स्मारं तद्गुणान् स्पृष्टपादाः, जाताः शान्ताः साधवोऽक्षेष्वरक्ताः ॥ २३ ॥ चित्ते चित्ते शान्तमूर्तेः सुबोधः, बोधे बोधे तत्स्वरूपानुरूपम् । रूपे रूपे स्वात्मवृत्तौ प्रवृत्तिः, वृत्तौ वृत्तौ कुन्थुनेमीन्दुवीराः ॥२४॥ आसीद्यः खलु दक्षिणायनकरः पश्चादुदीच्यां गतः ज्ञानध्यानतपःप्रभामयवपुः संधारयन् दीप्तिमान् । सम्यग्ज्ञानमरीचिभिर्विकसिता आशाश्च येनाखिलाः, सोऽयंसूरिरपूर्वभानुरुदितो लोके सदा शान्तिदः ॥ २५ ॥ सुखदयाखिलबोधविधानया, विधिविशाखिकठोरकुठारया । विगतरागगुरुर्जिनदीक्षया, तरति तारयति भ्रमजालतः ॥२६॥

इति श्रीनित्यपाठसंग्रहः ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi